श्री वीतरागायनम

श्री सुखसागरसद्गुरुभ्योनम

श्री पंच प्रतिक्रमण सुत्रं.

श्रीखरतरगच्छविधिसंयुक्त.



परमपूज्यजैनधर्मोपदेष्टान्यायांभोनिधिविद्वर्य्यश्रीमान्शांत

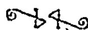
मूर्तिश्रीश्रीश्री१००८श्रीत्रैलोक्यसागरजीकेउपदेससे

खरतरगच्छकेसंघतरफसे

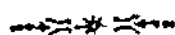
छपाके प्रसिद्ध करनार

मुनीलालजी लाधुराम पारख.

ठे० नवाबजार—वडोदरा



प्रथम आवृती प्रत १०००



संवत १९७३] वीर संवत २४४३ [सन १९१७

विनामूल्य　　　　डाक खर्च लगेगा

वडोदरा.

ज्युबीली बाग सामे आवेला " श्री चंद्रप्रकाश प्रेस " मां
पटेल प्रेमानंद नरोतमदासे ता० १-७-१७ ना रोजे
मुनीलाल लाघुरामने माटे छापी अने तेमणे
वडोदरा नवाबजारमांथी प्रसीध करी.

प्रस्तावना.

प्रथम यह पुस्तक छपाकर प्रसीध करनेका हेतु यह हय के जिनधर्मावलंबी श्रावकोंको पंच प्रतिक्रमणादि सुत्र अवश्य भणण चाहीए कारण के धर्म क्रिया करती वखते जो अर्थका ज्ञान होय तो वो घधारे लाभकारी है हालके समयमे गच्छभेदके लीये जो के सामायिकादिक आवश्यक कार्यकी विधिमे भेद पडा हुवा है तोपण मुल सुत्रोका पाठ तो एक हे उसमे कोइ जातका भेद पडेला देखनेमे नही हे उससें यह पंचप्रतिक्रमण सुत्र खरतरगच्छका विद्वर्य श्रीमान् श्रीश्रीश्री १००८ श्री त्रैलोक्य सागरजीके उपदेशसे विधि सहित छपाके श्रावक भाइओको जो सामायक प्रतिक्रमणादिक क्रिया प्रति दिवस करनेकी आवश्यकता हे तो उस वखत जो जो रुपमे आणे योग्य ग्रथो है वो सर्व प्रकारके ग्रंथो इस पुस्तकमे दाखल करा है उसमे देवसिकादिक पांचे प्रतिक्रमण संपर्ण सुत्रो चैत्यवदन थोयो अने स्तवनादिक तथा दादा साहेबका फोटु तथा दादा साहेब चैत्यवदन तिथीनिर्णय जिनमंदीर जानेकी विधि पद्मावती आदीकका सारी रीते समावेश कीया है.

ओर बहुत विनय नम्रतासें सर्व जैन सज्जनोसें प्राथना है इस पुस्तको बहुत विवेकसे यत्न करके रखना जिसमें ज्ञानकी आसतना न होय क्यु के क्या लिखा हुआ आत्म धर्मोपगारीदोनुं है अज्ञानी जीव अनेक तरेहसें जिन प्रतिमा तथा जिन धर्म

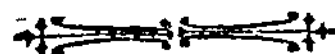
का अनादर आसातना करे और विवेकी ज्ञानी पुरुषोंको जिन प्रतिमा तथा धर्म पुस्तककी कभी आसातना नहि करणी चाहीये ओर जो जिन प्रतिमाको पाखाणादिककी जाणके ओर पुस्तकको लीखा हुवा जाणके अनादर करेगासो अपना एकांत हठ वादसें सदाकाल एकेंद्रीयादी अज्ञानतासमों परिभ्रमण करता रहेगा इस वासते इस पुस्तकको असातना नही करणा रोज धुप दीप करणा ए ग्यान पुज है इति शुभम.

यह ग्रंथ छपाती वखत बुधि अनुसार शुध करनेका प्रयत्न कीया है अगर कोइ ठेकाणे दृष्टि दोपसे ह्र स्व दीर्घ कानो मात्रा मींडी वीगेरेकी भुल हुइ होय तो उसके लीये सर्वे सज्जन भाइओंसे नमित वीनती है के सुधारकेने वांचनेकी कृपा करोगे.

द. श्रीसंघकादास सुगनमल राखेचा.

इस पुस्तकमें साहता देनेवाले मान्यवरोंके नाम.		गाम.
२८६	शा. तेजमालजी जोधराजजी.	लोहावट
१००	शा. करमचंदजी.	वीकानेर
१००	बाइ अभयकुंवरी.	वीकानेर
१००	बायोरा उपासरा सु.	फलोधी
१००		
५०	शा. बालकरणजी चांदमलजी.	वीकानेर
५०	शा. धनसुखदासजी मेघराजजी.	वीकानेर
५१	मुनीलालजी लाधुरामजी.	लोहावट

अथअनुक्रमणीकाप्रारंभ.



	पृष्ट		
		परमेष्ठिनमस्कारं	११
नमसकारमत्र	१	उपसग्गहर	११
थापनाचार्यजीकीतेरेपडीलेण	१	जयवीयराय	१२
खामणपणा	२	सव्वस्सवि	१३
सुगुरुनेशातासुखपृच्छा	२	इच्छामीठामी	१४
अब्भुठीओमी	२	वदनवत्तिआए	१४
मुहपत्तीकेपडीलेहणकेर५वोल	३	पुख्खरवरदी	१५
अगकीर५पडीलेण	३	सिद्धाणबुद्धाणं	१६
समायिकपचख्खानकरेमीभंते	५	वेयावच्चगराण	१६
इरियावहियं	६	सुगुरुवांदणां	१७
तस्सउत्तरी	६	आलोयणअढारेपापस्थानक	१९
अन्नथ्थउस्सीएण	७	श्रावकवहितुसुत्र	२१
लोगस्स	७	आयरियउवझाए	२६
राइप्रतिक्रमणाविधि	९	सद्भकत्या	२७
सकलतीर्थकरनमस्कारजयउसामी	९	परसमयातिमिरतरणि	२९
जंकिंचि	१०	ससारदावा	३०
णमोथ्थुण	१०	अश्वसेननरेसरस्तुति	३१
जावतचइआइ	११	अढ्ढाइज्जेसु	३२
जावतकेवीसाहु	११	सीमधरस्वामचैत्यवदन	३२

सीमंधरजिनस्तवनं	३३	संध्याकालकेपचक्खाण	६४
सीद्धाचलचैत्यवंदन	३५	पचक्खाणपारनेकीविधि	६५
सीद्धाचलस्तवनं	३५	दादासाहबकास्तवन	६६
पडिलेहण	३६	जिनस्तुति	६७
सामायकपारणगाथा	३८	आदिजिनस्तुति	६७
संध्याकालसामायकविधि	३९	शांतिजिन	६७
देवसिपडिक्कमणाविधि	४१	नेमजिनपार्श्वस्तुति	६८
जयतिहुण	४१	पक्षिपडिक्कमणाविधि	६९
मूरतिमनमोहनस्तुति	४७	बृहदतिचार	७०
श्रुतदेवताकीस्तुति	५१	सप्तस्मरणानिप्रारभ्यंतेतत्रप्रथमं	८९
क्षेत्रदेवताकीस्तुति	५२	द्वितियअजितशांति	९५
नमोस्तुवर्द्धमानाय	५२	तृतीयंनमिउण	९८
पार्श्वजिनस्तवनं	५३	चतुर्थगणधरदेव	१००
थंभणापार्श्वनाथजीकाचैतयवंदन	५५	पंचमभक्तामरस्तोत्र	१०३
थंभणयाठियपाससामाणो	५६	षष्ठंस्मरणम्	१०५
चउकसाय	५७	भक्तामरस्तोत्रं	१०७
लघुशांतिस्तवः	५८	वृद्धशांति	११४
वरकनक	६०	जिनपंजरस्तोत्रं	१२०
कमलदल	६०	कल्याणमंदिर	१२२
देवचंदवाणीपोरसी	६१	मेत्रुंजरास	१२५

गोतमस्वामीनोरास	१४०	दीपमालिकीस्तुति	१८२
स्वकुलप्रकास	१४९	पञ्चतिथींकास्तवन	१८३
सुतकविचार	१५२	बीजकास्तवन	१८५
श्रावककीनित्यकरणी	१५४	पचमीवृद्धकास्तवन	१८८
अठपहोरीपोसोविधि	१५६	लघुपचयमीस्तवन	१९१
पोसहकापचख्खाण	१५७	पार्श्वजिनअमलकमल	१९२
थांडलापडिलेहण	१६०	विमलजिनस्तवन	१९३
पचख्खाणपारणविधि	१६४	एकादशीवृद्धस्तवन	१९४
राइसंथाराविधि	१६८	पार्श्वजिनस्तवन	१९५
पोसहपारणाविधि	१७०	तीर्थमालास्तवनसेत्रुजे	१९६
रात्रिचउपुहरीपोसह	१७३	सिध्दाचलस्तवनआजआपे	१९८
ठाणेकमणे	१७५	उपदेशमालापोसहसिझाप	१९९
बीजकीस्तुति	१७६	राइसथारापोसहसिझाय	२०२
पंचमीस्तुति	१७७	निंदावारकसझाय	२०५
अष्टमीस्तुति	१७७	सीतासिझाय	२०५
मौनेकादशीस्तुति	१७८	अनाथिरुपिसिझाय	२०७
पार्श्वजिनस्तुति	१७९	प्रतिक्रमणसझाय	२०८
भारिलकीस्तुति	१८०	मगलीकसरणां	२०९
...ति	१८१	नेमजिनंपद	२१०
॥ कृ...	१८२	अष्टापदगिरिस्तवन	२११

पार्श्वजिनस्तवनंगोपालजीकृत	२१२	जीवरासीखमावणपद्मावती	२४२
दादाजीकास्तवनविलसे	२१८	पुन्यप्रकाश	२४५
दादाजीकास्तवनसवैया	२२०	दादाजीचैत्यवंदन	२५६
पाचमाआरानीसज्झाय	२२३	गुरुदेवजीकास्तवन	२५६
बेकरजोडीविनवुंजी	२२५	आचार्यपदस्तुति	२५७
जिनमंदीरजानेकीविधि	२२९	गौतमाष्टकछंद	२५७
पांचशक्रस्तवेदेववांदणविधि	२३५	पुंडरीकगणधरजीस्तवन	२५८
धेनुतूलसीआदिसज्झाय	२३६	चतुर्दशीस्तुति	२५९
वीरजिनेश्वरसाहेब	२३८	तिथीनिर्णय	२६०
वीरसुणोमोरीवीनती	२३९	बीनासरपार्श्वप्रभुस्तवन	२६३
सीमधरस्तवनधनरे क्षेत्र	२४१		





॥ श्री ॥

अथ राईदेवरयादि प्रतिक्रमण।

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिकसामायिकविधिप्रारंभः ॥

॥ अथ नवकार मंत्र ॥

॥ णमोअरिहंताणं ॥ १ ॥ णमोसिद्धाणं ॥ २ ॥ णमोआयरियाणं ॥ ३ ॥ णमोउवझायाणं ॥ ४ ॥ णमोलोएसव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसोपंचणमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणंचसव्वेसि ॥ ८ ॥ पढमंहवइमंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यहनवकारतीनबलतगुणकेथापनाजीकीथापनाकरेतबतेरेबोलचितवेसोकहतेहैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्धस्वरूपधारूं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहितसद्दहणाशुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणाशुद्धि ॥ २ ॥ दर्शनशुद्धि ॥ ३ ॥ सहितपांचआचारपालुं ॥ १ ॥ पलाउं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगु-
-नयगुप्ति ॥ आदरूं ॥ ३ ॥ एवंतेरेबोलश्रीधर्मरत्न
॥ कृष्ण त्तिमेंकहेहैं ॥ इति ॥ २ ॥ पीछेगुरुजीकेसामने

अथवाथापनाचार्यजीकेसामने खड़ाहोकेतीनखमासमणदेवे; सोलिखतेहैं ॥

॥ अथ खमासणा ॥

॥ इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्झाएनिसीहि-आएमथ्थएणवंदामि ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

॥ इच्छकारभगवन्, सुहराइ सुहदेवसी, सुखतपशरिर-निराबाध, सुखसंयमयात्रानिर्वहोछोजी? स्वामीशाताछेजी? इति ॥ ४ ॥ इसप्रकारगुरुकोनमस्कारकरे, तवगुरुकहे-देवगुरुप्रसाद ॥

॥ अथ अब्भुठिओमि ॥

॥ पिछेनीचेबैठकेजिमणाहाथनीचाकरकेअब्भुठिओमिक-हे ॥ इच्छाकारेणसंदिस्सहभगवन्अभुठिओमिअभितरदेव-सियंखामेउं इच्छंखामेमिदेवसियंजंकिंचिअप्पत्तियंपरप्पत्ति-भत्तेपाणे विणएवेआवच्चे आलावेसंलावेउच्चासणेसमासणे-अंतरभासाएउवरिभासाए। जंकिंचि । मज्झविणयपरिहीणं सुहुमंवाबायरंवातुभेजाणहअहंनजाणामि, तस्समिच्छा-मिदुक्कडं ॥ इति ॥ पीछेखमासमणदेकेइच्छाकारेणसं

भगवन् सामायिकलेवामुहपत्तिपडिलेहुं गुरुकहे, पडिलेह. इच्छंकहीदूजीखमासमणदेईमुहपत्तीपडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ति पडिलेहणके पचीश बोल लिखते हैं ॥

॥ सूत्र, अर्थसाचोसर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्वमोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्वमोहिनी ॥ ३ ॥ मिश्रमोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं.यह चारबोलमुहपत्तिखोलतीवखतकहना ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ द्रष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरु ॥ यहसातबोलप्रथमकहीजे ॥ सुगुरुः सुदेव.सुधर्मः आदरुं ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यहनव पडिलेहनडावेहाथेकरिये ॥

ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र विराधना ॥ ३ ॥ परिहरु ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यहनवपडिलेहणजीमणेहाथसे करणी ॥ यहपचीसबोलमुहपत्तीकेजानने ॥

॥ अब अंगकी पचीस पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या

॥ ३ ॥ एतीनुनिलाडमस्तकेपरिहरुं ॥ रिद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शातागारव ॥ ३ ॥ एतीनुमुखेपरिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणशल्य ॥ २ ॥ मिच्छादंस-णशल्यएतीनहीयेपरिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ एदोयजिमणेखंभेपरिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ एदोयडावेखंभेपरिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ एतीन-जिमणेहाथेपरिहरुं ॥

॥ भय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ एतीन-डावेहाथेपरिहरुं ॥

॥ पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ एतीनडावेपगेपरिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥ एतीनजिमणेपगेपरिहरुं ॥ इतिमुहपत्तिपडिलेहण संपूर्ण ॥ ५ ॥

॥ पीछेखडाहोयकेइच्छामिखमासमणकापाठकहके, इ-च्छाकारणेसंदिस्सहभगवानसामायिकसंदिस्सावुं? गुरु-संदिस्सावेह ॥

॥ पीछे इच्छंकहके फेरखमासमणदेके इच्छा० ॥ भ० ॥ सामायिकठाउं ? गुरुकहेठाएह ॥

॥ पीछेइच्छंकहीखमासमणदेई थोडो रुकीतीननवकार गुणीइच्छाकारेणसंदिस्सहभगवन् पसाउकरी सामायिकदंडकउच्चरावोजी ॥ गुरुकहेउच्चरावेमो ॥ पछीकरेमिभंतेसामाइयं, इत्यादिसामायिकसूत्रतीनवारउच्चरे ॥

* ॥ अथ सामायिक का पच्चरकान ॥

॥ करेमिभंतेसामाइयं,सावज्जंजोगंपच्चरकामि ॥ जावनियमंपज्जुवासामि ॥ दुविहंतिविहेणंमणेणं वायाए काएणं, नकरेमि, नकारवेमि, तस्सभंतेपडिक्कमामिनिंदामिगरिहामिअप्पाणंवोसिरामि ॥ ६ ॥

॥ पीछेखमासमणदेकेइच्छाकारेणसंदिस्सहभगवन्इरियावहियंपडिक्कमामि ॥ गुरुकहेपडिक्कमेह. पीछेइच्छंकही ॥ इच्छामिपडिक्कमिउंइरियावहियाएइत्यादिपाठकहे, सोलिखते है ॥

* व्यवहार भाष्य चतुर्थोद्देशके व्यवहार भाष्य टीकामें ३ बेर करे-[illegible]ो उचरणा साधुके पाठमे कहा है साधुके अनुयायि श्रावक होय [illegible] ३ बेर उचरे, विधि प्रपामें जिनपतसुरि कृत समाचारीमें बहुत वि-टके शास्त्रमे ३ परेमिभंते कही है

* ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेणसंदिस्सहभगवन् ॥ इरियावहियंपडिक्कमामि ॥ इच्छंइच्छामिपडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणेबीयक्कमणेहरियक्कमणे ॥ ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे ॥ ४ ॥ जेमेजीवाविराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदियावेइंदियातेइंदियाचउरिंदियापंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहयावत्तियालेसियासंघाइयासंघट्टियापरियाविया ॥ किलामियाउद्दवियाठाणाउठाणंसंकामियाजीवियाओववरोविया ॥ तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्सउत्तरिकरणेणं ॥ पायच्छित्तकरणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणंकम्माणंनिग्घायणठाए ॥ ठामिकाउसग्गं ॥ ८ ॥

---

* नवपद प्रकरण योगशास्त्र श्रावक धर्म प्रकरण आवश्यक वृहत वृत्तिमें; पंचाशक सूत्र टीकामें श्री हरिभद्रसूरिजीने श्री अभयदेवसूरिजीने श्राद्धदिनकृत्यमें तपागच्छीय श्री देवेंद्रसूरिजीने योगशास्त्रादि ग्रंथोमें श्री हेमाचार्य महाराजजी आदिने श्रावकको सामायिक लेने में करेमिभंते पेली उचरणा कहाहै इरियावही पीछे करणी कही है.

॥ अथ अन्नथ्थ उससिएण ॥

॥ अन्नथ्थ उससिएणं ॥ नीससिएणंखासिएणंछी-
एणंजंभाइएणंउड्डुएणंवायनिसग्गेणंभमलिएपित्तमुच्छाए-
॥ १ ॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि ॥ सुहुमेहिखेलसंचालेहि ॥
सुहुमेहिदिट्ठिसंचालेहि ॥ २ ॥ एवमाइएहिआगारेहि ॥
अभग्गोअविराहिओ ॥ हुज्जमेकाउसग्गो ॥ ३ ॥ जाव-
अरिहंताणंभगवंताणंनमुकारेणंनपारेमि ॥ ४ ॥ तावका-
यंठाणेणंमोणेणंझाणेणंअप्पाणंवोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ९ ॥
इहांचारनवकारअथवाएकलोगस्सकाकाउत्सग्गकरे. पीछे-
णमोअरिहंताणं कहकेकाउसग्गपारके मुखसे प्रगटलोगस्स-
कहेसोलिखतेहैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्मतिथ्थयरेजीणे ॥ अ-
रिहंतेकित्तइस्सं ॥ चउवीसंपिकेवली ॥ १ ॥ उसभमजि-
अंचवंदे ॥ संभवसभिणंदणंचसुमइंच ॥ पउमप्पहंसुपासं ॥
जिणंचचंदप्पहंवंदे ॥ २ ॥ सुविहिचपुप्फदंतं ॥ सीअल
सिज्जंसवासुपुज्जंच ॥ विमलमणंतंचजिणं ॥ धम्मंसंति-
चवंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुंअरंचमल्लि ॥ वंदेमुणिसुव्वयंनमि-

जिणंचवंदामिरिठ्ठनेमिपासंतहवद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवंमए
अभिथुआ ॥ विहुयरयमलापहिणजरमरणा ॥ चउविसंपि
जिणवरा ॥ तिथ्थयरामेपसियंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय
महिया ॥ जेएलोगस्सउत्तमासिद्धा ॥आरूग्गबोहिलाभं ॥ स-
माहिवरमुत्तमंदिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्मलयरा ॥ आइचे-
सुअहियंपयासयरा ॥ सागरवरगंभीरा ॥ सिद्धासिद्धिंमम
दिसंतु ॥ ७ ॥ सव्वलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछेखमासमणदेकरइच्छा० ॥ भगवन्बेसणोसंदि-
स्सावुं? गुरुकहेसंदिसाएह पीछेइच्छंकेहकेबलीखमासमण-
देकर ॥ इच्छा० ॥ भगवन्बेसणोठाउं? गुरुकहेठाएह ॥ फिर
इच्छंकहकेबलीखमासमणदेकरइच्छा० ॥ भग० ॥ सिज्झाय
करुं? गुरुकहेकरेह ॥ फेरखमसमणदेकेखडेहोकरआठनव-
कारकहकरसज्झायकरे. तथाजोशीतकालादिहोवेतोखमास-
मणदेकेइच्छा० ॥ भ० ॥ पांगरणोसंदिस्सावुं? गुरुकहे-
संदिस्सावेह ॥ पीछेइच्छंकहकरखमासमणदेकरइच्छा० ॥
भ० ॥ पांगरणोपडिग्गाउं? गुरुकहेपडिग्गाएह ॥ पीछे-
इच्छंकहीवस्त्रग्रहणकरेतथासामायिकवंतअथवापोसहि
श्रावकवांदेतो "वंदामो" एसोकहे. औरकोईदूसरे
तोसज्झायकरेह. एसेंकहे ॥ इतिप्रभातिकसामायिक

॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधि प्रारभ ॥

॥ प्रथमएकखमासमणदेकेइच्छा० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदःनकरूं ? गुरुकहेकरेह ॥ पीछेइच्छंकहीजयउसामिजयउसामिइत्यादिकहे सोहीलिखतेहैं ॥

॥ अथ सकल तीर्थंकर नमस्कारो लिख्यते ॥

॥जयउसामिहिजयउसामिहि,रिसहसेत्तुंजिउज्जिंतपहुनेमिजिण, जयउवीरसच्चउरिमंडण ॥ १ ॥ भरुअच्छेहिमुणिसुव्वय, महुरिपासदुहदुरियखंडण ॥ अवरविदेहितिथ्थयर, चिहुंदिसिविदिसिजंकेवि ॥ तीआणागयसंपइय, वंदुंजिणसव्वेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मभूमिहिकम्मभूमिहिपढमसंघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराणविरंतलब्भई ॥ नवकोडीहिकेवलिण, कोडिसहस्सनवसाहुसंपय ॥ संपइजिणवरवीस ॥ हरफालिविहुंकोडीहिवरनाण ॥ समणहकोडीसहस्सदुअ. अरीदुहनिच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइसहस्सा, लरकाछप्पन्न अट्ठकोडीओ ॥ चउसयछायासीया. तिलुक्केचेइएवंदे ॥ २ ॥ तुहम्मसत्त नवकोडिसयं, पणवीसंकोडिलक्ख महिए ॥ सग्ग पायंनिअसिरिवणं ॥ जीवाअथगमरठाण ॥ पयापडिमा ॥ ॥ दउसंथु-

ओसहायस ॥ भत्तिब्भरनिब्भरेणहिअएण ॥ तादेवदिज्ज बोहिं ॥ भवेभवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

* अथ जयविअराय ॥

॥ जयवीअरायजगगुरु ॥ होउममंतुहपभावओभयवं-भवनिव्वेओ ॥ मग्गाणुसारिआइट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ ॥ गुरुजणपूआपरथ्थकरणंच ॥ सुह-गुरुजोगोतव्वयणसेवणाआभवमखण्डा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादिजयवीयरायपर्यंतचैत्यवंदनकरे ॥ पीछेख-मासमणदेकेइच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिणदुसुमिणराईपाय-च्छित्तविसोहणथ्थंकाउसग्गकरुं ? गुरुकहेकरेह. पीछेइच्छं कहकरकुसुमिणदुसुमिणराईपायच्छित्त विसोहणथ्थंकरेमि-काउसग्गं ॥ अन्नथ्थउससिएणं ॥ इत्यादिपाठकहकेसोले नवकार अथवा चारलोगस्सकाचंदेसुनिम्मलयरापर्यंताचिं-तनकरकेकाउसग्गकरे ॥ पीछेणमोअरिहंताणंकहकरका-उसग्गपालकेमुखसेंएकलोगस्सकापाठप्रगटकहे, जोरात्रि-

* पंचासकमें श्रीहरिभद्रसूरिजीने श्रीअभयदेवसूरिजी श्रीदेवेंद्रसूरिजीनें चैत्यवंदण भाष्यमें योगशास्त्रमें श्रीहेमाचार्य महाराजजीने जयवियराय आभवमखंडा पर्यंत करणी कहा है.

मेंगुणसंबंधिमोटकोदूपणलागोहोवेतोकाउसग्गमांहे ॥ सागरवरगंभीरापर्यंतचितवे ॥ इतीसंप्रदायः ॥

॥ अत्रपडिकमणांठानेकाअवसरहुवा ॥ जबखमासमणदेकरश्रीआचार्यजीमिश्रकहिकेवांदीये ॥ १ ॥ खमासमणदेकरश्रीउपाध्यायजीमिश्रकहिकेवांदीये ॥ २ ॥ खमासमणदेकरधर्माचार्यजीकोवांदीये ॥ ३ ॥ खमासमणदेकरतवेसाधुजीकोंवांदीये ॥ ४ ॥ इसनेरहचारखमासमणसेपडिकमणांठाकरगोडालीये वैठके मस्तकनमायकरदोनुंहाथेमुहपत्तीमुखेदकरसव्वस्सविराइयइत्यादिपाठकहे, परंतुइच्छाकारेणसंदिस्सहइच्छंइसमाफकनकहे ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वसविदेवसिअदुच्चितिअदुब्भासियदुच्चिट्ठिअइच्छाकारेणसंदिस्सहभगवनइच्छं. तस्समिच्छामिदुक्कडं । इति ॥ १८ ॥ सवेरकोंदेवसीकेठिकानेराइयंऐसापाठकहे ।

॥ पीछेणमोथ्थुणंकहकेखडाहोयके ॥ करेमिभंतेमामाइयंमावज्जंजोगंपच्चरकामिइत्यादिकपाठकहे ॥ पीछेइच्छामिठामिकाउसग्गंजोमेराइओ० ॥ यहपाठकहेमोलिसेनहे ॥

॥ अथ इच्छामि ठामि ॥

॥ इच्छामिठामिकाउसग्गं ॥ जोमेदेवसिओअइआरो
कओ ॥ काइओवाइओमाणसिओ ॥ उस्सुत्तोउम्मग्गो
अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुझाओ ॥ दुव्विचिंतिओ
अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वोअसावगपाउग्गो ॥ नाण
हदंसणेचरित्ताचरित्ते ॥ सुएसामाइए ॥ तिन्हंगुत्तीणं ॥
चउन्हंकसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्याणं ॥ तिन्हगुणवया-
णं ॥ चउन्हंसिख्खावयाणं ॥ बारसविहस्ससावगधम्म-
स ॥ जंखंडिअंजंविराहिअं ॥ तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥
इति ॥ इहांदेवसियंकेठिकानेराइयंकहना ॥ इति॥१९॥

॥ पीछेतस्सुउत्तरी० ॥ अन्नथ्थउसासिएणंकहकरचारि-
शुद्धिनिमित्तचारनवकारअथवाएकलोगस्सकाउसग्गकरे
रकेदर्शनशुद्धिनिमितेप्रमटलोगस्सकहीसव्वलोएअरिहं-
चेईआणां ॥ करेमिकाउस्सग्गंवंदणवत्तिआए ॥ इत्यादि-
कहेनासोलिखतेहैं ॥

॥ अथ वंदनवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारवत्ति-
॥ सम्माणवत्तिआए ॥ बोहिलाभवत्तिआए ॥ निरु-

वसग्गवत्तिआए ॥ १ ॥ सद्धाएमेहाएधीईए ॥ धारणाए अणुपेहाए ॥ वड्ढमाणीएठामिकाउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पीछेअन्नथ्थकहीचारनवकार (अथवा) एकलोगस्सकाकाउस्सग्गकरकेपारके, ज्ञानाचारशुद्धिनिमित्तपुरकरवरदी० ॥ सुअस्सभगवओकरेमिकाउस्सग्गं ॥ इत्यादिपाठकहे, सोलिखतेहै ॥

॥ अथ पुरकरवरदी ॥

॥ पुख्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडेअजंबुद्दीवेअ ॥ भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरेनमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्सवंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुख्खलविसालसुहावहस्स ॥ कोदेवदाणवनरिंदगणच्चिअस्सधम्मस्ससारमुवलभ्भकरेपमायं ॥३॥ सिद्धेभोपयओणमोजिणमए, नंदीसयासंजमेदेवंनागसुवन्नकिन्नरग्गणस्सब्भूअभावच्चिए ॥ लोगोजथ्थपइट्ठिओ जगमिणं. तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मोवड्ढओमासओविजयओधम्मुत्तरंवड्ढओ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्सभग-

वओकरेमिकाउस्सग्गं, वंदणवत्तिआएपाठपूर्णकरकरअ-
न्नत्थउससिएणं, कहकेआठनवकारअथवादोलोगस्सका
काउस्सग्गकरे. काउस्सग्गकेमांहेआजुणाचारमहराचिंतवे.
सोआगेलिखेंगे. पीछेसिद्धाणंबुद्धाणंकापाठकहेमोलिख-
तेहैं ॥

॥ अथ सिद्धाणंबुद्धाणं ॥

॥ सिध्धाणंबुध्धाणं, पारगयाणंपरंपरगयाणं ॥ लोअग्गा
मुवगयाणं, णमोसयासव्वसिध्धाणं ॥ १ ॥ जोदेवाणवि
देवो, जंदेवापंजलीनमंसंति ॥ तंदेवदेवमहिअं, सिरसा
वंदेमहावीरं ॥ २ ॥ इक्कोविनमुक्कारो, जिणवरवसहस्स
वध्धमाणस्स ॥ संसारसागराओ, तारेइनरंवनारिंवा ॥३॥
उज्जिंतसेलसिहरे, दिरकानाणंनिसीहिआजस्स ॥ तंधम्म
चक्कवट्टिं, अरिठ्ठनेमिंनमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारिअठ्ठदस
दोयवंदिया, जिणवराचउवीसं ॥ परमठ्ठनिठ्ठिअठ्ठासिध्धा
सिध्धिममदिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणंसंतिगराणं ॥ सम्मदिठ्ठिसमाहिगराणं
करेमिकाउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछेसंडासाप्रमार्ज्जनपूर्वकबैठककेतीसरेआवश्यग-सूत्रवादणांनिमित्तेमुहपत्तिपडिलेहुं ? गुरुकहेपडिलेहेअ ॥ मुहपत्तिपडिलेहे. पीछेवांदणांदे. तिनकीविधिकहतेहैं ॥

॥ अवग्रहकेबाहिरऊभाहुआआधानीचानमकर, इच्छामि खमासमणोवंदिउंजावणिज्जाएनिसीहिआएअणुजाणहमेमिउग्गहं. इतनापाठकहकरभूमिप्रमार्जनकरताहुआनिसीहिकहकेकछुकअवग्रहमें प्रवेशकरकेसंडासाप्रमार्ज्जनकरकेउकडबैठकेडावेहाथमेंमुहपत्तिलेके,डावेकानसेंलेकेजिमणेकानपर्यंतनिल्लाडपूंजी, मुहपत्तिआगेरखकेतिसकेमध्यभागमेंगुरुचरणकीकल्पनाकरके ॥ अहोकायंइत्यादिआवर्त्तकरकेकछुकनीचानमकरमस्तके अंजलीकरकेगुरुसन्मुखदृष्टिस्थापनकरकेखमणिज्जोभेकिलामो ॥ इत्यादिपाठकहे. पीछेफेर ॥ जत्ताभे ॥ इत्यादिअवर्त्तनकरकेखडाहोकेपीछेपगसें भूमि पूंजताहुआअवग्रहसें बाहिर निकलकेस्वस्थानपरआवे. उहां ॥ आवस्सिआए ॥ इत्यादिपाठसर्वकहे, सोलिखतेहैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामिखमासमणोवंदिउं, जावणिज्जाएनिसीहि-

आए ॥ अणुजाणहमेमिउग्गहंनिसीहि ॥ अहोकायंकाय, संफासं, खमणिज्जो, भेकिलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेणभे, दिवसोवइक्कंतो, जताभेजवणिज्जंचभे, खामेमि खमासमणोदेवसिअंवइक्कम्मं, आवसिआए, पडिक्कमामिखमासमणाणंदेवसिआए, आसायणाएतित्तीसन्नयराएजंकिंचिमिच्छाए, मणदुक्कडाएवयदुक्कडाएकायदुक्कडाएकोहाए, माणाए, मायाएलोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाएजोमेअइआरोकओ, तस्सखमासमणोपडिक्कमामिनिंदामिगरिहामिअप्पाणंवोसिरामि ॥ १ ॥ दूजीवारकेवांदणेआवसिआएपदनकहना, अनेराइयेराइओवइक्कंतो. तथाचउमासीयेचउमासीओवइक्कंतो, परकीयेपरकोवइक्कंतो, संवच्छरीयेसंवच्छरीओवइक्कंतो ॥ इसीतरेपाठकहेना ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेणसंदिस्सहभगवन्देवसियंआलोउं, इच्छंआलोएमिजोमे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंकोठिकाणे इसंकहेना ॥

॥ पीछेरात्रिसंबंधिअनिचारगुरुसमक्षआलोवे, सो-कहतेहैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणाचारप्रहरदिवसमेंजेमेंजीवविराध्याहोय ॥ सातलाखपृथिवीकाय ॥ सातलाखअप्पकाय ॥ सातलाखतेऊकाय ॥ सातलाखवाऊकाय ॥ दशलाखप्रत्येकवनस्पतीकाय ॥ चउदेलाखसाधारणवनस्पतीकाय ॥ दोयलाखबेइंद्रिय ॥ दोयलाखतेंद्रिय ॥ दोयलाखचौरिंद्रिय ॥ चारलाखदेवता ॥ चारलाखनारकी ॥ चारलाखतिर्यचपंचेंद्रिय ॥ चउदेलाखमनुष्य ॥ एवंचारगतिकेचौराशिलाखजीवयोनिमें, महारेजीवेजेकोई जीवहण्योहोय, हणाव्योहोय, हणताप्रतेभलोजाण्योहोय, तेसवेहुंमनवचनकायायेकरीमिच्छामिदुकडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउ ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १०

द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारपापस्थानकसेव्याहोय, सेवराव्याहोय, सेवतांप्रते भलाजाण्यांहोय, तेसव्वेमन, वचन, कायाथेकरीतस्समिच्छामिदुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शनचारित्र, पाटी, पोथीठवणी, कवली, नवकरवाली, देवगुरुधर्मकीआशातनाकरीहोय ॥ पन्नरेकर्मादानकीआसेवनाकरीहोय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथाभक्तकथाकरीहोय. औरजोकोईपरनिंदाथेकरीपापकीधुंहोय, करायुंहोय, करतांअनुमोद्युंहोय, सोसर्वेमनवचनकायाथेकरके दिवसअतिचारआलोयणकरकेपडिकमणामें आलोउंतस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ इतिआलोयणं ॥ इहांश्रावकेपडिकमणमेंदिवसकोठिकानेरात्रिकापाठकहेना ॥ इति ॥ २८ ॥ पीछेसव्वस्सविराइय ॥ इत्यादिपाठकहे. तिइच्छाका० ॥ भ० ॥ एपदकहनेसेंआलोयाहुआऊपरप्रायश्चितमांगे ॥ गुरुकहेपडिक्कमेह ॥ पीछे ... तस्समिच्छामिदुक्कडं, कहकेसंडासापमार्जनकरकेबैठकरके

रवैठके, जिमणागोडाउंचाररवकेडावागोडोनीचेकरकेऐसा-
कहेकिभगवन्सूत्रभणुं ? तबगुरुकहेभणेह ॥ पीछेच्छंक-
हीकेतीननवकारअरुतीनवारकरेमिभंतेभणके, इच्छामि-
पडिक्कमिउंजोमेराइओइत्यादिकहकर ॥ तंनिदेतंचगरिहा-
मिपर्यंतवंदित्तुसूत्रकहे. सोलिखतेहैं ॥ पीछेखडाहोकेअ-
भ्भुट्टिओमिआराहणाएइत्यादिसम्पूर्णकहे, सोलिखतेहैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितु सूत्र ॥

वंदितुसव्वसिद्धे, धम्मायरिएअसव्वसाहूअ ॥ इच्छा
मिपडिक्कमिउं, सावगधम्माइअरस्स ॥ १ ॥ जोमेवयाइ
आरो, नाणेतहदंसणेचरित्तेअ ॥ सुहुमोअवायरोवा, तं
निदेतंचगरिहामि ॥ २ ॥ दुविहेपरिग्गहंमि, सावज्जे
दुविहेअआरंभे ॥ कारावणेअकरणे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं
॥ ३ ॥ जंवद्धमिंदिएहिं, चउहिंकसाएहिंअप्पसत्थेहिं
रागेणवदोसेणव, तंनिदेतंचगरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणेनि
ग्गमणे, ठाणेचंकमणेअणाभोगे ॥ अभिओगेअनिओगे,
पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संकाकंखविगिच्छापसंसतहसंथवोकु
लिंगीसु ॥ सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छकाय
समारंभे पयणेअपयावणेअजेदोसा ॥ अत्तट्ठायपरट्ठा

उभयट्ठाचेवतंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वया
णंचतिण्हमइयारे ॥ सिक्खाणंचचउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥
पढमेअणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ ॥ आयरिअम
प्पसत्थे, इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंधछविच्छेए,
अइभारभत्तपाणवुच्छेए ॥ पढमवयस्सइआरे. पडिक्कमे०
॥ १० ॥ बीएअणुव्वयंमिपरिथूलगअलिअवयणविरईओ ॥
आयरिअमप्पसत्थेइत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा
रहस्सदारे, मोसुवएसेअकूडलेहेअ ॥ बीयंवयस्सइआरे
पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइएअणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरण
विरईओआयरिअमप्पसत्थे, इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवेविरुद्धगमणेअ ॥ कूडतुल
कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थेअणुव्वयंमि, निच्चं
परदारगमणविरईओ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थपमाय
प्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआइत्तर, अणंगवीवा
तिव्वअणुरागे ॥ चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥
इत्तोअणुव्वएपंचमंमि, आयरिअमप्पसत्थंमि ॥ परिमाण
परिच्छेए, इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्त
दुपयचउप्पयंमि. पडि०
कुप्पसुवन्नेसकुविअपरिमाणे ॥

मे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउपरिमाणे, दिसासुउड्ढंअहेअ-
तिरिअंच ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमिगुणव्वएनिंदे ॥१९॥
मज्जंमिअमंसंमिअ, पुप्फेअफलेअगंधमल्लेअ ॥ उवभो-
गेपरिभोगे, बीयंमिगुणव्वएनिंदे ॥ २० ॥ सचित्तेपडिबद्धे,
अप्पोलदुप्पोलिअंचआहारे ॥ तुच्छोसहिभक्खणया, प-
डिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडीभाडीफोडीसुवज्जए
कम्मं ॥ वाणिज्जंचेवयदंतलक्ख, रसकेसविसाविसयं
॥ २२ ॥ एवंखुज्जंतपिल्लणंकम्मं, निलंछणंचदवदाणं ॥
सरदहतलावसोसं, असईपोसंचवज्जिज्जा ॥ २३ ॥
सत्थग्गिमुसलजंतग, तणकट्ठमंतमूलभेसज्जे ॥ दिन्ने
दवाविएवा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणूवट्टणवन्नगविले-
वणेसद्दरूवरसगंधे ॥ वत्थासणआभरणे, पडिक्कमे० ॥२५॥
कंदप्पेकुक्कुइए, मोहरिअहिगरणभोगअइरित्ते ॥ दंडंमि
अणट्ठाएतइयंमिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणि-
हाणे, अणवट्ठाणेतहासइविहूणे ॥ सामाइअवितहकए,
पढमेसिक्खावएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणेपेसवणे, सद्देरूवेअ
पुग्गलक्खेवे ॥ देसावगासियंमि, बीएसिक्खावएनिंदे
॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमायतहचेवभोयणाभोए ॥

पोसहविहिविवरीए, तइएसिक्खावएनिंदे ॥ २९ ॥ सच्चि-
त्तेनिक्खिवणे, पिहिणेववएसमच्छरेचेव ॥ कालाइक्कमदाणे,
चउत्थेसिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसुअदुहिएसुअ,
जामेअसंजएसुअणुकंपा ॥ रागेणवदोसेणव, तंनिंदेतंच
गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविभागोनकओतवचरणकरण-
जुत्तेसु ॥ संतेफासुअदाणे; तंनिंदेतंचगरिहामि ॥ ३२ ॥
इहलोएपरलोएजीविअमरणेअआसंसपओगे ॥ पंचवि-
होअइआरो, मामज्झंहुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएण-
काइअस्स, पडिक्कमेवाइअस्सवायाए ॥ मणसामाणसि-
अस्स, सव्वस्सवयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खा-
गारवेसुसन्नाकसायदंडेसु ॥ गुत्तीसुअसमिईसुअजोअइ-
आरोअतंनिंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठीजीवो, जइविहुपावं
समायरेइकिंचि ॥ अप्पोसिहोइबंधो, जेणनिद्धंधसंकुणइ
॥ ३६ ॥ तंपिहुसपडिक्कमणं, सप्परिआवंसउत्तरगुणंच ॥
खिप्पंउवसामेइ, वाहिव्वसुसिक्खिओविज्जो ॥ ३७ ॥
जहाविसंकुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ॥ विज्जाहणंतिमंते-
हिं, तो तंहवइनिव्विसं ॥ ३८ ॥ एवंअट्ठविहंकम्मं, राग-
दोससमज्जिअं ॥ आलोयंतोअनिंदंतोखिप्पंहणइसु

ओ ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणुस्सो, आलोइअनिंदियगु
सगासे ॥ होइअइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्वभारव
॥ ४० ॥ आवस्सएणएएण, सावओजइविबहुरओहोइ,
दुक्खाणमंतकिरिअं, काहीअचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ अ
लोअणावहुविहा, नयसंभरिआपडिक्कमणकाले ॥ मूलगु
णउत्तरगुणे, तंनिंदेतंचगरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्स
केवलिपन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिओमिआराहणाए, विरओ
विराहणाए ॥ तिविहेणपडिकंतो, वंदामिजिणेचउव्वी
॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंतिकेविसाहु
॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए, भवसयसहस्स
हणीए ॥ चउवीसजिणविणिग्गयकहाइं, वोलंतुमेदिअ
॥ ४६ ॥ ममसंगलमरिहंता, सिद्धासाहुसुअंचधम्मोअ
सम्मद्दिट्ठिदेवा, दितुसमाहिचबोहिच ॥ ४७॥ पडिसिद्धा-
करणे,किच्चाणमकरणेपडिक्कमणं ॥ असद्दहणेअतहाविवरी,
परूवणाएअ॥ ४८॥ खामेमिसव्वजीवे,सव्वेजीवाखमंतु
मित्तीमेसव्वभूएसुवेरंमज्झनकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं
लोइअ, निंदिअ, गरहिअदुगंच्छिअंसम्मं ॥ तिविहेणप
डिक्कंतो, वंदामिजिणेचउव्वीसं ॥ ५० ॥ इति २९

यहांप्रभातकेपडिक्कमणमेंदेवसीकेठिकानेराइयंकहनां ॥

॥ पीछेदोवांदणांदेकर अवग्रहमांहिरहताहुवाकहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अप्भुट्ठिओमिअप्भिंतर ॥ राइयंखामेमि? गुरुकहे. खामेह ॥ संडासाप्रमार्जनपूर्वक गोडालीयेबैठके, दोबांहे पडिलेकर ॥ मुहपत्तीवामहाथसें मुखेदेकरदक्षिणहाथगुरुसामेकर ॥ नीचेनमताहुवाजंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादिसंपूर्णकहे ॥

॥ यहागुरुपणामिच्छामिदुक्कडंकहे, पीछेदोवांदणांदेके भूमिप्रमार्जनकरताहुआपगसेंअवग्रहबाहिरआयके, आय- रियउवज्झाए, इत्यादितीनगाथाकहे, सोलिखतेहैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरियउवज्झाए, सीसेसाहम्मीएकुलगणेअ ॥ जे मेकेकसाया, सव्वेतिविहेणखामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओअंजलिंकरिअसीसे ॥ सव्वंखमा इत्ता, खमामिसव्वस्सअहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्सजीवरा- सिस्स, भावओधम्मनिहिअनिअचित्तो ॥ सव्वंखमावइ- त्ता, खमामिसव्वस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

॥ पीछे, करेमिभंते, इच्छामिठामिकाउस्सग्गंतस्सुत्त री० ॥ श्रीमहावीरस्वामीछम्माशीतपचितवणनिमित्तंकरेमिकाउस्सग्गंअन्नथ्थ० ॥ कहकेकाउस्सग्गमेंश्रीवीरकृत छम्मासीतपचितवनकरे ॥ चौवीशनवकारअथवाछलोगस्सकाकाउस्सग्गकरे, काउस्सग्गपालकेप्रगटलोगस्सकहे॥

॥ छट्टेआवश्यककीमुहपत्तीपडिलेहुं ? गुरुकहेपडिलेह। मुहपत्तीपडिलेईदोवांदणांदेवे, सकलतीर्थनाामनमस्कारकरे, सोलिखेहैं.

॥ अथ सकलतीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्यादेवलोकेरविशशिभवने, व्यंतराणांनिकाये, नक्षत्राणांनिवासे[illegible]निटलतार[illegible]िमाने ॥ पातालेपन्नगेंद्रेस्फुटमणिकिरणेध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणांप्रतिदिवसमहंतत्रचैत्यानिवंदे ॥ १ ॥ वैताढ्येमेरुशृंगेरुचकगिरिवरेकुंडलेहस्तिदंते, वस्कारेकूटनंदीश्वरकनकगिरौनैषधेनीलवंते ॥ चैत्रेशैलेविचित्रेयमकगिरिवरेचक्रवालेहिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैलेविन्ध्यशृंगेविमलगिरिवरेह्यर्बुदेपावकेवा, सम्मेतेतारकेवाकुलगिरिशि

रेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ ॥ चैज्झयंते विमलगिरि-
रेगुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षि-
तितटमुकुटे चित्रकूटे, त्रिकूटे लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हे-
कूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥
श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखलेपि-
छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥
हाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥
५ ॥ अंगवंगकलिंगेसुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे,
डे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंडे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिं-
विडे कुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंपा-
चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशांब्यां
शलायां कनककपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ नासक्ये राज-
हंसपुरनगरे भाहिलेताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ [illegible]
यंऽतरिभोगिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके
लनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ [illegible]
जलविषमदुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्री० ॥ ८ ॥ " श्री
सेकुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये[illegible]
रतिकररुचके कौंडले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च द-

धिमुखगिरौव्यंतरेस्वर्गलोके, ज्योतिर्लोकेभवंतित्रिभुवनवलयेयानिचैत्यालयानि " ॥ ९ ॥ इच्छंश्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनंयेपठंतिप्रवीणाः प्रोद्यत्कल्याणहेतुंकलिमलहरणंभक्तिभाजस्त्रिसंध्यं ॥ तेषांश्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलंजायतेमानवानां, कार्याणांसिद्धिरुचैः प्रमुदितमनसांचित्तमानंदकारि ॥ ९ ॥ इतिचैत्यवंदनंसंपुर्णम् ॥ इति ३२ ॥

॥ पीछेगुरुमुखेपच्चक्खाणकरके ॥ इच्छामोणुसठियं कहिकेगुरुएकगाथाकीस्तुतिकहे.

पीछेणमोखमासमणाणंनमोऽर्हत्सिद्धा० कहकरपरसमयतिमिरतरणिएतीनगाथाकहीजेसोलिखतेहैं ॥

॥ अथ परसमयतिमिरतरणि ॥

॥ परसमयतिमिरतरणि, भवसागरवारितरणवतरणी ॥ रागपरागसमीरं, वंदेदेवंमहावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसारविहारकारिदुरन्तभावारिगणानिकामं ॥ निरन्तरंकेवलिसत्तमावो, भयावहंमोहभरंहरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढमूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमंपरमसिद्धिकरंनमामि ॥ ३ ॥

रिमलमल्लोभालीदलोलालिमाला, वरकमलनिवासेहा-
नीहारहासे ॥ अविरलमविकारागारविच्छित्तिकारं, कु-
रुकमलकरेमेसंकुलंदेविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३३ ॥ स्त्री-
योंसंसारदावातीनगाथाकहे, सोलिखतें हें ॥

॥ अथ संसार दावा स्तुतिः ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधुलीहरणेसमीरम् ॥
मायारसादारणसारसीरं, नमामिवीरंगिरिसारधीरम् ॥ १ ॥
भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमा-
लितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामंनमा-
मिजिनराजपदानितानि ॥ २ ॥ बोधागाधंसुपदपदवी
नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥
चूलावेलं गुरुगमदूरपारं, सारंवीरागमजलनिधिं
सादरंसाधुसेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुलपरिमला
लीढलोलालिमाला, झंकारारावसारामलदलकमलागार-
भूमिनिवासे ॥ छायासंभारसारेवरकमलकरेतारहाराभि-
रामे, वाणीसंदोहदेहेभवविरहवरंदेहिमेदेविसारम् ॥ ४ ॥
इति ॥ ३४ ॥

॥ इसकीतीनगाथाकही, शक्रस्तवकहेपीछेखडाहोकर

अरिहंतचेईयाणंकरेमिकाउस्सगं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नथ० इत्यादिपाठकहके ॥

॥ काउस्सगमांहेएकनवकारचितवी ॥ एकश्रावकप्रथमकाउस्सग्गपारीनमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एकगाथास्तुतिकहे, सोलिखतेहैं.

॥ अश्वसेननरेसर, वामादेवीनंद ॥ नवकरतनुनिरुपम, नीलवरणसुखकंद ॥ अहिलंछणसेवित, पउमावइधरणिद ॥ प्रहऊठीप्रणमूं, नितप्रतिपासजिणंद ॥ १ ॥ ये गाथाएकजनकहे ॥ दूसरेसर्वेकाउस्सग्गमांहिरह्याहुआसुणे ॥ पीछेणमोअरिहंताणंकहिकेकाउस्सग्गपारे ॥ इसतरहआगेपणजाणना ॥ पीछेलोगस्सकहे ॥ सव्वलोएअरिहंतचेईआणंवंदणवत्ति० ॥ अन्नथ्थ० ॥ इत्यादिकहके । एकनवकारकाउस्सगकरेपारकेदूजीस्तुतिकहे, सोलिखतेहैं ॥

॥ कुलगिरिवेयड्ढइ, कणयाचलअभिराम ॥ मानुषोत्तरनंदी, रुचककुंडलसुखठाम ॥ भुवणेसरव्यंतर, जोइस विमाणीयनाम ॥ वर्त्तजेजिणवर, पूरोमुझमनकाम ॥२॥

॥ पीछेपुक्खरवरदीवड्ढेकहकेसुअस्सभगवओ० वंदण०

अन्नत्थ० ॥ कहेएकनवकारकाकाउस्सग्गपारके ॥ त्रीजी स्तुतिकहे, सोलिखते हैं.

॥ जिहाअंगइग्यारे, बारउपागछच्छेद ॥ दसपयन्नादाख्या, मूलसूत्रचउभेद ॥ जिनआगमषटद्रव्य, सत्तपदारथजुत्त ॥ सांभलीसर्दहतां, तूटेकरमतुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछेसिद्धाणंबुद्धाणं० ॥ कहकेवेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थ० कही ॥ एकनवकारकाकाउस्सग्गकरपारकेनमोर्हत्सिद्धा० कहकेचोथीस्तुतिकहे, सोलिखतेहैं ॥

॥ पउमावईदेवीपार्श्वयक्षपरतक्ष ॥ सहुसंघनांसंकट, दूरकेरवादक्ष ॥ समरोजिनभक्ति, सूरिकहेइकचित्त ॥ सुखसुजससमापो, पुत्रकलत्रवहुवित्त ॥ ४ ॥ इति ॥२५॥

॥ पीछेनीचाबैठकेणमोत्थुणं० कहके ॥ तीनखमासमणेपुर्वोक्तरीते ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधूवांदे ॥

॥ पीछेजीमणाहाथनीचाकर, मुखसुहपत्तिदेकरअढाइज्जेसुकहेसोलिखतेहैं ॥

॥ अथ अढाइज्जेसु ॥

॥ अढाइज्जेसु ॥ दीवसमुद्देसु ॥ पन्नरससुकम्मभू-

मीसु ॥ जावंतकेविसाहू ॥ रयहरणगुच्छपडिग्गहधारापं-
चमहव्वयधारा ॥ अढारसहस्ससीलांगधारा ॥ अक्खया-
यारचरित्ता ॥ तेसव्वे ॥ सिरसामणसामथ्थएणवंदामि ॥
॥ इति ॥

॥ इतनीविधिक्रियापीछेस्थिरताहोवेतोखमासमणतीन
बखतदेकर ॥ इच्छाकारेणसंदिस्सहभगवन् ॥ चैत्यवंदन
करुंजी. यहपाठकहकरचैत्यवंदनकरे, सोलिखतेहैं ॥

॥ अथ चैत्यवदन ॥

॥ जयजयत्रिभुवनआदिनाथ, पंचमगतिगामी ॥
जयजयकरुणाशांतदांत, भविजनहितकामी ॥ जयजय
इंदनरिदवृंद, सेवितासिरनामी ॥ जयजयअतिशयानंत-
वंत, अंतर्गतजामी ॥ १ ॥ पूर्वविदेहविराजताए, श्रीसी-
मंधरस्वाम ॥ त्रिकरणशुद्धत्रिहुंकालमें, नितप्रतिकरुंप्र-
णाम ॥ २ ॥ जंकिंचिनामतिथ्थं० ॥ नमोथ्थुणं० ॥ जा-
वंतिचेईआ० जावंतकेविसाहू० ॥ औरनमोऽर्हत्सिद्धा-
चार्योपाध्यायसर्वसाधूभ्यः ॥ तककहकेसीमंधरजीकास्त-
वनकहे, सोलिखतेहै ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमधरजिन स्तवनम् ॥

॥ जगजीवनजगवालहो ॥ एदेशी ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिबा, वीनतडीअवधारलालरे ॥ पर-
मपुरुषपरमेसरु, आतमपरमआधारलालरे ॥ श्री० ॥ के-
वलज्ञानदिवाकरु, भांगेसादिअनंतलालरे ॥ भासकलो-
कालोकके, ज्ञायकज्ञेयअनंतलालरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्रचं-
न्द्रचक्रीसरु, सुरनररहेकरजोडलालरे ॥ पदपंकजसेवेस-
दा, अणहुंतइक्कोडलालरे ॥ श्री० ॥२॥ चरणकमलपिं-
जरवसें, शुभमनहंसनितमेवलालरे ॥ चरणशरणमोहिआ-
शरो, भवभवदेवाधिदेवलालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधमउ-
धारणछोतुहो, दूरहरोभवदुःक्खलालरे ॥ कहेजिनहर्षमया-
करी, देजोअविचलसुक्खलालरे ॥ श्री० ॥ इति ॥ ४ ॥
॥ ३९ ॥

॥ पछिइच्छावीयराय० वंदणवत्तियाए ॥ अन्नथ्य० क-
हके ॥ एकनवकारकाकाउस्सग्गकरे ॥ पारकेनमोऽर्ह-
त्सिद्धा० कही ॥ एकथुइकीगाथाकहे, सोलिखते हैं.

॥ महीमंडणंपुण्णसोवन्नदेहं, जिणाणंदणंकेवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलच्छीबहुबुद्धिरायं, सुसेवामिसीमंधरंतिथ्थरायं ॥ १ ॥ थिरताहुवेतो, श्रीसीद्धाचलजीकाचैत्यवंदनकरे, सोलिखतेहैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन ॥

॥ जयजयनाभिनरिदनंद, सिद्धाचलमंडणजयज-यप्रथमजिणंदचंद, भवदुःक्खविहंडणजयजयसाधुसुरिद-वृंद, वंदियपरमेसर ॥ जयजयजगदानंदकंद, श्रीरिषभ-जिणेसर ॥ अमृतसमजिनधर्मनोए, दायकजगमेंजाण ॥ तुझपदपंकजप्रीतिधर, निशदिननमतकल्याण ॥ १ ॥ जं किंचिनामतित्थं० ॥ णमोत्थुणं० ॥ जावंतिचेइआई० ॥ जावंतकेविसाहु० ॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-भ्यः ॥ तककहकेश्रीसिद्धाचलजीकास्तवनकहे, सोलिख-खतेहैं ॥ ३९ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचलगिरिभेटयारे ॥ धन्यभागहमारा ॥ वि-मलाचल० ॥ एहगिरिवरनीमहिमामहोटी, कहेतांनआवे पारा ॥ रायणरूखसमोसस्यास्वामी, पूर्वनवाणूंवारारे ॥ ध० मूलनायकश्रीआदिजीनेसर, चौमुखप्रतीमाचारा ॥ अष्टद्रव्यसुंपुजोभावेसमकीतमुलआधारारे ॥ धन्य० ॥१॥ दूरदेशथीहुंइहांआयो, श्रवणसुनीगुणतोरा ॥ पतितउधा-रणविरुदतुमारोएहतीरथजगसारारे ॥ ध० ॥२॥ मावम-

त्तिसेंप्रभुगुणगावे, अपनाजन्मसुधारा ॥ जात्राकरीभवि जनशुभभावेंनरकतिर्यंचगतिवारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ संवत अढारेत्रयासिआषाढे, वदिआठमभोमवारा ॥ प्रभूकेचरण प्रतापसिंहसेंक्षमारतनप्रभुप्यारारे ॥ ध० ॥ इतिपदम् ॥

॥ पीछेजयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नथ्थ० ॥ कहेकेनवकारकाकाउस्सग्गकरे ॥ पारकेनमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहकेस्तुतिकहे ॥ सेत्रुंजागिरिनासियें, रिषभदेवपुंडरिक ॥ शुभतपनीमहिमा, सुणीगुरुमुखनिरभीक ॥ शुद्धमनउपवासे, विधिशुंचैत्यवंदनीक ॥ करियेजिनआगल, टालीवचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछेफुरसदहोवेतोपडिलेहणकरे, सोलिखतेहैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमणदेईइच्छाकारेणसंदिस्सहभगवन् ॥ पडिलेहणसंदिस्साउं ? गुरुकहे. संदिस्सावेह ॥ बीजेखमासमणें ॥ इच्छाकासं० ॥ भ० ॥ पडिलेहणकरुं ? गुरुकहे, करेह ॥ पीछेइच्छंकही ॥ मुहपत्तीपडिलेहे ॥ ऐसेहीदोय खमासमणेअंगपडिलेहणसंदिस्साउं ॥ अंगपडिलेहणकरुं

कहिकेधोतियोकणदोरोपडिलेहिकेखमासमणदेईइच्छाका भगवनपसाउकरीपडिलेहणपडिलेहावोजी. एसेकहीथाप पनाचार्यपडिलेहीरक्खे, अनेजोगुर्वादिकथापनाचार्यपडि लेहे, तोपणखमासमणदेईआज्ञामांगे, पीछेखमासमणदेई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ भ० ॥ मुहपत्तीपडिलेहुं ? गुरुक पडिलेह ॥ पीछेइच्छंकहीमुहपत्तीपपिलेहे ॥ दोयखमास णे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ ओहीपडिलेणंसंदि स्साउंउंहीपडिलेहणकरं ॥ ऐसाकहीकंबलवस्त्रादिपाडिले हे ॥ पीछेपोपधशालप्रमार्जीकाजो, विधिशुंपरठवीखम समणदेईइरियावहीपडिक्कमे ॥ एमूलविधिजाणवी ॥ ,
तनी[illegible]धरतानहोवे, तोभीदृष्टिपडिलेहणतोअवश्यकरणी

॥ अथ सामायिक पारणेकी विधि कहतेहैं ॥

[illegible]का
[illegible] पीछेसामायिकपारे ॥ एकखमासमणदेई ॥ मुह
° ॥ [illegible]डलेह ॥ फिरखमासमणदेई ॥ इच्छा० ॥ सं०भ०,
च्छं [illegible]यिकपारुं ॥ गुरुकहेपुणोविकायव्वो. पीछेयथा
नवव[illegible]हीवलीखमासमणदेईकहे. इच्छाका० ॥ सं ॥ भ०
ायिक[illegible]यिकपारेमि ॥ गुरुकहेआयारोनमोत्तव्वो ॥ पीछे
भंतेस[illegible]ही, अर्द्धनमीऊभोथको, तीननवकारगुणीनीचेगो

लियेवेसी, मस्तकनमावी ॥ भयवंदसणभद्दो ॥ इत्या-
देगाथाकहे, सोलिखते हैं ॥

॥ अथ भयवंदसणभद्दो ॥

॥ भयवंदसण्णभद्दो, सुदंसणोथूलभद्दवयरोय ॥ स-
फलीकयगिहचाया, साहुएवंविहाहुंती ॥ १ ॥ साहूणवं-
दणेणं, नासइपावंअसंकियाभावा ॥ फासुअदाणेनिज्जर,
अभिग्गहोनाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थोमूढमणो, कित्ति-
मित्तंपिसंभरइजीवो ॥ जंचनसंभरामिअहं, मिच्छामि
तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेणंचिंतिय, मसुहंवायाइभा-
सियंकिंचि ॥ असुहंकाएणकयं, मिच्छामिदुक्कडंतस्स ॥
४ ॥ सामाइयपोसहसंठियस्स, जीवस्सजाइज गो॥
सोसफलोबोधव्वो, सेसोसंसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ ॥ े-
विधेलीधुंविधेकीधुं, विधिकरतांअविधिआशातना ॥
होय, दशमनका, दशवचनका, बारहकायाकसामायिकमां
पणमांहिजोकोइदूषणलागाहोय, सोसहुमनकरिकहे, व
चन, कायाएकरीमिच्छामिदुक्कडं ॥ इतिसामायिकमांहिदो
षटालवानीगाथा ॥ इतिग्रहणक

॥ अथवापहिलेसामायिकपारके, पीछेपडिलेहणकरे. इहांयथायोग्यअवसेरगुरुकोसुहराईपूछे ॥

॥ दूसराखमासमणदेवे, श्रीजिनपतिसूरिजीकीसमाचारीमेंएसेंकहाहे ॥ इतिसामायिकपारणविधि ॥

॥ अथसंध्याकालसामायिकविधिलिख्यते ॥

॥ पीछलेपहोरेधर्मशालाप्रमार्जीवस्त्रादिकपडिलेहे. जो अवेरेआयेहुवे, तोदृष्टिपडिलेहणकरे ॥ पीछेगुरुआगेअथवाथापनाचार्यजीआगेआवीभूमीप्रमार्जी आसणवामपासरखीखमासमणदेईकहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिकमुहपत्तिपडिलेहुं ? गुरुकहेपडिलेह. इच्छंकही॥ फिरखमासमणदेईमुहपत्तिपडिलेहेपीछेखमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिकसंदिस्साउं ? गुरुकहे संदिस्सावेह ॥ फिरखमासणदेईइच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिकठाउं ? गुरुकहे, ठाएह ॥ इच्छंकही फिरखमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थईतीननवकारगुणी कहे. इच्छकारभगवन्, पसायकरीसामायिकदंडकउच्चरावोजी गुरुकहेउच्चरावेमो ॥ पीछेकरेमिभंतेसामाइयं ॥ इत्यादिसामायिकसूत्रगुरुवचनअनुभा-

णकरतोथकोतीनवारउच्चरीखमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥
० ॥ भ० ॥ इरियावहियंपडिक्कमामि ? गुरुकहेपडिक्क-
ह ॥ पीछेइच्छंकही ॥ इच्छामिपडिक्कमिउं ॥ इरियाव-
हियाएइत्यादिपाठसेंइरियावहीपडिक्कमें ॥ एकलोगस्सका
उस्सग्गकरे, णमोअरिहंताणंकही, काउस्सग्गपारे, मु-
भगटलोगस्सकही, नीचेबैठकेमुहपत्तिपडिलेहे, वांदणां
ई कहे. इच्छकारभगवन्पसाउंकरीपच्चक्खाणकरावोजी,
छेगुरुदिवसचरिमंपच्चक्खाणकरावे ॥ गुरुअभावेंथाप-
चार्यसमक्षेअथवास्वमुखे, अथवावडेरासावर्गीमुखेपच्च-
खे ॥ अरुजोतिवीहारउपवासक्रियाहोय, तोमुहपत्तिप-
डिलेहीपच्चक्खाणकरे ॥ वांदणांनदेवे, अनेजोचउवि-
हारउपवासहुवेतोपच्चक्खाणकरनाहैनहीं ॥ इससेंमुहपत्ति
हीपडिलेहे ॥ एविस्तारविधिहै ॥ पीछेएकखमासमणदे-
इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झायसंदिस्साउं ? गुरु
कहे, संदिस्सावेह. पीछेइच्छंकहीफिरखमासमणदेई ॥ इ-
च्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झायकरं ? गुरुकहेकरेह ॥
पीछेइच्छंकही ॥ खमासमणदेईऊभोथकोमुखसेंआठनव-
कारकीसज्झायकरे ॥ पीछेखमासमणदेई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥

भ० ॥ वेसणोसंदिसाउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिरख मासमणदेईइच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वेसणोठाउं ? गुरु कहे, ठावेह ॥ पीछेइच्छंकहीजोशीतकालादिहुवेतोखमासमणदेई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पांगरणुंसंदिस्साउं ? गुरुकहे, संदिस्सावेह ॥ फिरखमासमणदई ॥ इच्छा० सं० ॥ भ० ॥ पांगरणुंपडिग्घाउं ? गुरुकहेपडिग्घावेह ॥ पीछेइच्छंकहीशुभध्यानकरे इतिसंध्यासामायिकविधिः ॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ प्रथमत्रणखमासमणदेई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदनकरूं ? गुरुकहेकरेह, पीछेइच्छंकही ॥ जयतिहुअणकहे ॥ जिसमेंपख्खीतथाचउमासीतथासंवच्छरीकेरोजतीसगाथाकहेना ॥ औरदिनोमेंतोपांचगाथापहेलेकी औरदोयगाथापिछाडीकी, सातगाथाकहेनेकीप्रवृत्तिदेखणेमेंआवेहैं. अत्रजयतिहुअणलिखतेहे ॥

॥ अथ जयतिहुण लिख्यते ॥

॥ जयतिहुअणवरकप्परुक्खजयजिणधन्नंतरि, जयतिहुअणकल्लाणकोसदुरिअक्करिकेसरि ॥ तिहुअणजणअ-

वलंघियाणभुवणत्तयसामिअ, कुणसुसुहाइंजिणेसपास-
थंभणयपुरट्ठिअ ॥१॥ तइंसमरंतलहंतिझत्तिवरपुत्तकलत्त-
इं. धणसुवण्णहिरण्णपुण्णजणभुंजइरज्जइं ॥ पिक्ख-
मुक्खअसंखसुक्खतुहपासपसाइण, इयतिहुअणवरक-
प्परुक्खसुक्खइंकुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजज्जरपरिजुण्ण
कण्णनट्ठुट्ठसुकुट्ठिण, चक्खुक्खीणखएणखुण्णनरसल्लिअ-
सूलिण ॥ तुहजिणसरणरसायणेणलहुहुंतिपुणण्णव, जय
धण्णंतरिपासमहवितुहरोगहरोभव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइ-
समंततंतसिद्धिउअपयत्तिण. भुवणब्भुअअट्ठविहसिद्धि-
सिज्झइतुहनामिणतुहनामिणअपवित्तओविजणहोइपवित्त-
उ. तंतिहुअणकल्लाणकोसतुहपासनिरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द
पउत्तइंमंततंतजंताइंविसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउ-
वग्गविगंजइ, दुत्थियसत्थअणत्थघत्थनित्थारइदयकरि,
दुरिअइंहरउसुपासदेवदुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआ-
णाथंभेइभीमदप्पुद्धुरसुरवर, रक्खसजक्खफणिंदविंदचोरा-
नलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्दपसुजोइणिजोइअ,
इअतिहुअणअविलंघिआणजयपाससुसामिअ ॥६॥ प-

त्थिअअत्थअणत्थहित्थभत्तिब्भरनिब्भर, रोमंचंचिअचारुकायकिण्णरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिकमकमलजुअलपक्खालिअकलिमलु, सोभुवणत्तयसामिपाससहमद्दउरिउवलु ॥ ७ ॥ जयजोइअमणकमलभसलभयपंजरकुंजर, तिहुअणजणआनंदचंदभुवणत्तयदिणयर ॥ जयमइमेइणिवारिवाहजयजंतुपिआमह, थंभणयट्ठिअपासनाहनाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवण्णुअवण्णुसुण्णुवण्णिगउछप्पणाहि, मुक्खधम्मुकामत्थकामनरनियनियसत्थहि ॥ जंजायइबहुदरिसणत्थबहुनामपसिद्धउ, सोजोइअमणकमलभसलसुहपासपवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भलरणझणिरदसणथरहरिअसरीरय, तरलिअनयणविसण्णसुण्णगग्गिरगरकरुणय ॥ तइसहसत्तिसरंत्तिहुंतिनरनासिअगुरुदरमहविज्जविसज्जसइपासभयपंजरकुंजर॥१०॥ पईपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तियबाहपवाहपवूढरुढदुहदाहसुपुलइय॥ मण्णहिमण्णुमउण्णपुण्णअप्पाणंसुरनर, इयतिहुअणआणंदचंदजयपासजिणेसर ॥११॥ तुहकल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअपवत्तयंतिभुवणेहिमहूसव, इयतिहुअणआणंद-

नदजयपाससुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मलकेवलकिरणनियरविहुरिअतमपहयर, दंसिअसयलपयत्थसत्थवित्थरिअपभर ॥ कलिकलुसिअजणघुअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइनिरुहरपासनाहभुवणतयदिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्तमाणवमइमेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोहकंदलदलरेहणि ॥ जायइफलभरभरियहरियदुहदाहअणोवम, इयमइमेइणिवारिवाहदिसिपासमइंमम ॥ १४ ॥ कयअविकलकल्लाणवल्लिउल्लुरियदुहवणुं, दाविअ सग्गअवग्गमग्गदुग्गइगम वारणु जयजंतुहजणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउपासजयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारण्णनिवासदरिअपरदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवालखुद्दासुरपसुवय ॥ तुहउत्तसुनहसुहअविसंठुलचिहहिं, इयतिहुअणवणसीहपासपावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयणकररंजिअनहयल, फलिणीकंदलदलतमालनिलुप्पलसामल ॥ कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिअ, जयपच्चक्खजिणेसपासथंभणयपुरहिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरलपमाणनेयवायाविविसंठुलु, नियतणुरविअविणयसहावआलसविहिलं-

घलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेवकारुण्णपवत्तउ, इयमहमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिकप्पिउणेयकलुणुकिंकिवनजंपिउ किवनचिट्ठिउंकिट्ठदेवदीणयमविलंविउ॥ कासुनकियनिप्फललल्लुअम्हहिंदुहत्तइं, तहविनपत्तउताणकिंपिपइंपहुपरिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुंहंसामिहतुहुं माय बप्प तुहं मित्तपियंकरु, तुहुंगइतुहुंमइतुंहिजताणतुहुंगुरुखेमंकरु ॥ हउंदुहभरभारिउवराउराउलनिब्भग्गउलीणउतहकमकमलसरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किवि साहियसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवहीरहि केणपाससरणागयवच्छल ॥ २१ ॥ पच्चुपवयारनिरीहनाहनिप्फण्णपयोअण, तुहंजिणपासपरोवयारकरणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्तसमचित्तवित्तिनयनिदअसममण, माअवहीरिअजुग्गओविमइंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंबहुविहदुहतत्तगत्ततुहुंदुहनासणपरु, हउंसुयणहकरुणिक्कठाणतुहुंनिरुकरुणाकरु॥ हउंजिणपासअसामिसालुतुहुंनिहुअणसामिअ जंअवहीरहिमइंझखतइअपासनसोहिअ ॥ २३ ॥

जुग्गाजुग्गविभागनम्हनहुजोअणतुहसम, भवणुवयारम्म हावभावकरुणारससत्तम ॥ समविसमइकिंघणनयइभुवि- दाहुसमंतउ., इयदुहबंधवपासनाहमइंपालथुणंतउ ॥२४॥ नयदीणहदीणयमुणविअण्णाविकिविजुग्गय, जंजोइयउव- यारुकरइउवयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुम्ह- नाहणचत्तउ, तोजुग्गउअहमेवपासपालहिमइंचंगउ॥२५॥ अहअण्णविजुग्गयविसेसाकिविमण्णहिदीणह, जंपासवि- उवयारुकरइतुहनाहसमग्गह ॥ सुच्चिअकिलकल्लाणु, जे- णजिणतुम्हपसीयह । किंअन्निणतंचेव, देवमामइंअवही- रह ॥ २६ ॥ तुहपच्छणनहुहोइ, विहलुजिणजाणउकिंपु- ण । हउदुक्खियनिरुसत्तचत्तदुक्कहुउस्सुयमण ॥ तंमन्नउ निमिसेण, एणएउविजइलब्भइ । सच्चंजंभुक्खियवसेणाकिं उंबरुपच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामियपासनाहमइअप्पुप- यासिउकिज्जउजंनियरूवसारिसुनमुणउबहुजंपिउ ॥ अन्नु नजिणजगितुह, समोविदक्खिन्नुदयासउ । जइअवगन्न- सितुहजिअहहकहहोसुहयासउ ॥ २८ ॥ जइतुहरूविण किणविपेयपाइणवेलवियउ । तुविजाणउजिणपास, तुम्हि हउंअंगीकिरिउ ॥ इयमहइच्छियउजंन, होइसातुहओहावणु ।

रक्खंतह्नियकित्तिणेयजुज्जइअव्रहिरणू ॥ २९ ॥ एहम हारियजत्त, देवइहुन्हवणमहुसउ । जंअणलियगुणगहण तुम्हमुणिजणअणिसिद्धउ ॥ एमपसीहसुपासनाहथंभ णयपुरष्ठिय । इयमुणिवरुसिरिअभयदेउविन्नवइअणिदि य ॥ ३० ॥

॥ पिछे जय महायस कहे सो लिखते हैं ॥

॥ जयमहायसजयमहायसजयमहाभागजयचिंतिय सुहफलय ॥ जयसमथ्थपरमथ्थजाणय, जयजयगुरुगि रिमगुरु ॥ जयदुहत्तसत्ताणताणय, थंभणयठियपासजिण॥ भवियहभीमभवुथ्थु, भवअवणंताणंतगुणतुझतिसंजन मोथ्थु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछेशक्रस्तवकहकेंखडाहोकरअरिहंतचेइयाणं० ॥ करेमिकाउस्सग्गंवंदणवत्तिआए० ॥ अन्नथ्थ० ॥ इत्यादि पाठकहकेकाउस्सग्गमांहेएकनवकारचिंतवीएकश्रावकका उस्सग्गपारीनमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहीएकगाथास्तुतिकहे. सोलिखतेहैं ॥

॥ मूरतिमनमोहन, कंचनकोमलकाय ॥ सिद्धारथ

नंदन, त्रिशलादेविसुमाय ॥ मृगनायकलंछन, सातहा-
थतनुमान ॥ दिनदिनसुखदायक, स्वामीश्रीवर्द्धमान॥४॥

॥ एस्तुतिएकश्रावककहे. अरुदूसरेश्रावकसर्वकाउस्स-
ग्गमेंरहेथकेसुने. पीछेणमोअरिहंताणं कहकेकाउस्सग्गपार.
इसीतरहआगेपणस्तुतिकीचारोंगाथासेंजानलेना ॥

॥ पीछेलोगस्सकहकेसव्वलोएअरिहंतचेइआणंवंदण-
वत्ति० ॥ अन्नत्थ ॥ कहकेएकनवकारकाकाउस्सग्गकरे.
पारकेउत्कस्तुतिकीदुसरी गाथा कहेसोलिखतेहैं ॥

॥ सुरनरवरकिन्नर, वंदितपदअरविंद ॥ कामितभर
पूरण, अभिनवसुरतरुकंद ॥ भवियणनेतारे, प्रवहणसम
दिनिशदीस ॥ चोवीशेजिनवर, प्रणमुंविशवावीश ॥ यह
दूसरीगाथाकहकेकाउस्सग्गपारे. पीछेपुक्खरवरदी० वंद-
णवत्तिआए० अन्नत्थ० कहकेएकनवकारकाकाउस्सग्ग
करे, पारकेउत्कस्तुतिकीतीसरीगाथाकहे, सोलिखतेहैं ॥

॥ अरथेकरिआगम, भाख्याश्रीभगवंत ॥ गणधरते
गूंथ्या, गुणनिधिज्ञानअनंत ॥ सुरगुरुपणमहिमा, कहि
नशकेएकंत ॥ समरूंसुखदायक, मनशुद्धसूत्रसिद्धांत ॥
॥ ३ ॥ यहगाथाकहकेसिद्धाणंबुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगरा-

णंअन्नथ्थ० ॥ कहीकाउसग्गपारीउक्तस्तुतिकीचोथीगा-
थाकहे, सोलिखतेहैं. ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारेविघनविशेप ॥ सहुसंकटचूरे,
पूरेआशअशेप ॥ अहनिशकरजोडी, सेवेसुरनरइंद ॥ जंपे
गुणगणइम, श्रीजिनलाभसुरिद ॥ ४ ॥ इतिमहावीरजिन
स्तुति ॥ यहचोथीस्तुतिकहकेवैठकेनमोथ्थुणंकहे. पीछे
एकखमासमणदेकेश्रीआचार्यजी मिश्र, दूसराखमासमण
दीयेपीछेश्रीउपाध्यायजीमिश्र, तिसराखमासमणदेकरश्री-
वर्त्तमानआचार्यजीकानामलेवे, चोथेखमासमणेसर्वसाधु-
जीमिश्र इसीतरहकहकरगोडालीयेंवैठकेमस्तकनमावीस-
व्वस्सविदेवसिय० इत्यादिकहकरतस्समिच्छामिदुकडंकहे,
परंतु ' इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं ' एपदनकहे ॥

॥ पीछेखडेहोकरकरेमिभंतेसामाइयं० ॥ इच्छामिठा-
मिकाउस्सग्गंजोमेदेवसिओ० तस्सउत्तरी० ॥अन्नथ्थ०॥
इत्यादिकहकेआठनवकारकाकाउससग्गकरे, काउस्सग्ग-
मांहेआजुणाचउप्रहरमें ॥ (इत्यादि) पाठमनमेंचितवी,
णमोअरिहंताणंकहीकाउस्सग्गपारकेप्रगटलोगस्सकहे ॥

॥ पीछेसंडासाप्रमार्ज्जनपूर्वकबैठकेतीसरेआवश्यकसूत्रवांदणांमुहपत्तीपडिलेहुं? गुरुकहेपडिलेहेह. पीछेमुहपत्तिपडिलेहिकेवांदणांदेवे. पीछेअवग्रहमांहिजऊभायको इच्छा० ॥ सं० भ० ॥ देवसियंआलोउं ? ऐसाकहे. तबगुरुकहेआलोएहपीछेइच्छंआलोएमि० ॥ यहपाठकहके अतीचारआलोवेपीछे सव्वस्सविदेवसियइत्यादिथीमांडीने इच्छाकारेणसंदिस्सहपर्यंतकहे, तबगुरुपडिक्कमेह. यह पाठकहे ॥

॥ पीछे इच्छं तस्स मिच्छामिदुक्कडंकहे केसंडासाप्रमार्जी, प्रमार्जीतभूमिर्येआसनपरबैठकेभगवन्सूत्रभणूं ऐसा कहेतबगुरुकहेभणेह, पीछेइच्छंकहीतीननवकारगुणी, तीन करेमिभंतेकहीने, इच्छामिपडिक्कमिउंजोमेदेवसिओइत्यादिकहीएकश्रावकवंदित्तुकहे. दूसरासबसुने. पीछेखडाहोकरअब्भुट्ठिओमिआराहणाएइत्यादिसंपूर्णपाठकही. दोवांदणांदेवे, अरुअवग्रहमांहीजखडाहुवाइच्छा ॥ सं० भं०॥ अब्भुट्ठिओमिअब्भिंतरदेवसियंखामेउंगुरुकहे, खामेह ॥

॥ पीछेइच्छंखामेमिदेवसियंकहके, गोडालीयेबैठके, वामहाथेमुहपत्तिमुखेधरके, दक्षिणहाथगुरुसन्मुखकरके,

सर्वपाठकहेपीछे विधिसेती दोवांदणांदेकरआयरियउवझाए इत्यादित्रणगाथाकहिके, करेमिभंतेसामाइय, इच्छामिठामिकाउस्सग्गं, इत्यादिकहीचारित्रशुद्धिनिमित्तेकरेमिकाउसग्गं, अन्नथ्थ० ॥ कहकेआठनवकारअथवादोलोगस्सकाकाउस्सग्गकरे, पारकेपीछेदर्शनशुद्धिनिमित्तेप्रगटलोगस्सकहीसव्वलोएअरिहंतचेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नथ्थ ॥ कहकेएकलोगस्सकाकाउस्सग्गकरे, पारकेज्ञान शुद्धिनिमित्ते, पुक्खरवरदीवढ्ढेकहके, सुअस्सभगवओ०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नथ्थ० ॥ कहकेएकलोगस्सकाकाउस्सग्गकरे. पीछेपारके, सिद्धाणंबुद्धाणं० कहिके. वेयावच्चगराणंनकहे, पीछेसुयदेवयाएकरेमिकाउस्सग्गंअन्नथ्थ०॥ कहीएकनवकारकोकाउस्सग्गकरे पीछेगुरुकायोगनहोवे तोएकश्रावककाउस्सग्गपारके, नमोऽर्हत्सिद्धा० कहके, श्रुतदेवताकीस्तुतिकहे, गुरुहुवेतो, गुरुकहे, औरदूजारावे स्तुतिसुणकेकाउस्सग्गपारे. अबश्रुतदेवताकी स्तुतिकहे, सोलिखतेहै.

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनीदेयाद्, द्वादशांगीजिनोद्भवा ॥ श्रु-

तदेवीसदामह्य, मशेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ पीछेखित्तदवयाए, करेमिकाउस्सग्गं० ॥ अन्नथ्थ० ॥ कहकेएकनवकार चिंतवीपूर्वलापरेक्षेत्रदेवताकीस्तुतिकहे, सोलिखतेहैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासांक्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः॥ जिनाज्ञांसाधयंतस्था, रक्षंतुक्षेत्रदेवताः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पीछेंखडाहुवाएकनवकारकही, संडासापमार्जीउकडुबैठकेछठुआवश्यककीमुहपत्तीपडिलेहुं ? गुरुकहेपडिलेहह. पीछेमुहपत्तिपडिलेही, विधिशुंदोवांदणांदेइइच्छामोअणुसट्ठिं० ॥ कहीबैठ. पीछेगुरुएकस्तुतिकह्यांपीछे. श्रावकसमस्तमस्तकेअंजलीकरिके. णमोखमासमणाणं। नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ नमोस्तुवर्द्धमानाय० ॥ इत्यादितीनस्तुतिकहे. श्राविकाणमोखमासमणाणंकहीसंसारदावाकीस्तुतिकहे.

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोस्तुवर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानायकर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षायपरोक्षायकुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषांविकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिंदधत्या ॥ सदृशैरि-

तिसंगतंप्रशस्यं, कथितंसंतुसिवायतेजिनेन्द्राः ॥ २ ॥ क
पायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोतियोजैनमुखांबुदोद्गतः ।
सशुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, ददातुतुष्टिंमयिविस्तरोगिरां
॥ ३ ॥ स्वसितसुरभिगंडालीढभृंगीकुरंगं, गुखशशिनम
जस्रंबिभ्रतीयाबिभर्ति ॥ विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचित्य
प्रभावा, सकलसुखविधात्रीप्राणभाजांश्रुतांगी ॥४॥इति

॥ यहतीनगाथाकहिकेंपीछेंणमोत्थुणं० कहके.एक
वकखमासमणदेईकहे:—इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ०
वणभणुंसांभलुं ? गुरुकहे, भणेहसांभलेहपीछेअ
वैठकें, नमोर्हतसिद्धा० कहकेवडोस्तवनकहे, सोलिख

॥ अथ श्री चिंतामणी पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ भविकाश्रीजिनबिंबजुहारो, आतमपरमआधारो
भ० श्री० ॥ जिनप्रतिमाजिनसारखीजाणो, नकरोशं
कांई ॥ आगमवाणीनेअनुसारे, राखोप्रीतसवाई रे ॥
श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंबस्वरूपनजाणेतेकहियेकिम
णे ॥ भूलातेहअज्ञानेभरिया, नहींतिहांतत्त्वपिछाणेरे
॥ भ० श्री० ॥ २ ॥ अंबडश्रावकश्रेणिकराजा, रावण
मुखअनेक ॥ विविधपरेंजिनभगतिकरंता, पाम्याधरम

वेकरे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिनप्रतिमाबहुभगतेजोतां,
होयनिश्चयउपगार ॥ परमारथगुणप्रगटेपूरण, जोजोआद्र
कुमाररे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमाआकारेजलचर,
छेबहुजलधिमझार ॥ तेदेखीबहुलामच्छादिक, पाम्याविर-
तिप्रकाररे ॥ भ० श्री० ॥ ॥ ५ ॥ पांचमाअंगेजिनप्र-
तिमानो, प्रगटपणेअधिकार ॥ सूरीयाभसुरजिनवरपूज्या,
रायपसेणीमाझाररे ॥ भ० श्री० ॥ ६ ॥ दशमेअंगेअ-
हिंसादाखी, जिनपुज्यांजिनराज ॥ एहवाआगमअरथ-
...ी, करियेकेमअकाजरे ॥ भ० श्री०॥ ॥ ७ ॥ सम-
...धारीसतीद्रोपदी, जिनपूज्यामनरंगे ॥ जोजोएह-
नोअरथविचारी, छट्ठेग्याताअंगेरे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥
विजयसुरजिमाजिनवरपूजा, कीधीचित्तथिरराखी ॥ द्रव्य
भावविहुंभेदकीनी, जीवाभिगमतेसाखीरे ॥भ०॥श्री०॥९॥
इत्यादिकबहुआगमसाखे, कोईशंकामतीकरजो ॥ जिन-
प्रतिमादेखीनितनवलो, प्रेमघणोचित्तधरजोरे ॥ भ० श्री०
॥ १० ॥ चिंतामणिप्रभुपासपसाये, सरधाहोजोसवाई ॥
श्रीजिनलाभसुगुरुउपदेशे, श्रीजिनचंद्र सवाइ रे ॥ भ०
॥ श्री० ॥ ११ ॥ इतिश्रीचिंतामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

पीछेतीनखमासमणेआचार्य, उपाध्याय, सर्व्वसाधुवांदी. अढ्ढाईज्जेसुकहना, फेरखमाससणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ भ० ॥ देवसिपायच्छितविशुधिनिमित्तंकाउसग्गकरूं? गुरुकहे, करेह. पीछेइच्छंकहिकेदेवसिपायच्छितविशुधिनिमित्तेअन्नथ्थ. कहिके, शोलेनवकारअथवा, चारलोगस्सकाकाउस्सग्गकरे, पारकेलोगस्सकहे.

॥ पीछेखमासमणदेकरइच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दवउडावणथ्थंकरेमिकाउस्सग्गं ॥ अन्नथ्थ० ॥ इत्यादिकही शोलनवकारअथवाचारलोगस्सकाकाउस्सग्गकरे, पारके इच्छाकारेणसंदिसहभगवनूचैत्यवंदनकरूंजी ॥ ऐसाकहकरथंभणापार्श्वनाथजीकाचैत्यवंदनकरेसो लिखतेहैं ॥

॥ पिछे श्रीथमणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे, पुरवरेश्रीस्तंभनेस्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलस्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समेप्रथयतांनित्यंमनोवांच्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधि

हरोदेवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथोजगन्नाथो, नित्यनाथोनृणांश्रीये ॥ इति ॥

॥ पीछेनमोथ्थुणंसेलेकरजयवीयरायसूधीकहे ॥ पीछे खमासमणपूर्वकमस्तकनमावी ' सिरिथंभणयठ्ठियपाससामिणो० ' इत्यादिदोयगाथाकहे, सोलिखतेहैं.

॥ अथ श्रीथंभणयठ्ठिय पास सामिणो ॥

॥ सिरिथंभणयठ्ठियपाससामिणो, सेसतिथ्थसामीणं॥ तिथ्थसमुन्नयकारणं, सुरासुराणंचसव्वेसिं ॥ १ ॥ एसमहं सरणथ्थं, काउस्सग्गंकरेमिसत्तीएभत्तीएगुणसुठ्ठियसंघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंभणपार्श्वनाथजीआराधवानिमित्तंकरेमिकाउस्सग्गं ॥ पीछेखडेहोके, वंदण व० ॥ अन्न० ॥ कहीचार लोगस्सकाकाउस्सग्गकरपारकेप्रगटलोगस्सकहे, पीछे ॥ श्रीखरतरगच्छसिणगारहारजंगमयुगप्रधानभट्टारकदादासाहबश्रीजिनदत्तसूरिजीचारित्रचूडामणिजीआराधवानिमित्तंकरेमिकाउस्सग्गं ॥ अन्नथ्थ० ॥ कहकेचारनवकारकाकाउस्सग्गकरे, पीछेप्रगटलोगस्सकहके.

॥ श्रीखरतगच्छसिणगारहारजंगमयुगप्रधानभट्टारक दादासाहबश्रीजिनकुशलसूरिजीचारित्र चूडामणिजी आराधवानिमित्तंकरेमिकाउस्सग्गं ॥ अन्नथ्थ० ॥ कहकेचारनवकारकाकाउस्सग्गकर. पीछेप्रगटलोगस्सकहकेबैठकेडावागोडाउंचाकरकेखमासमणदेके, इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदनकरुंजी. ऐसेकहकेचैत्यवंदनकरे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरण, दुज्जयमयणबाणमुसमूरण ॥ सरसपियंगुवन्नगयगामिय, जयउपासभुवणत्तयसामिय ॥ १ ॥ जसुतणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइफणमणिकिरणालिद्धउ ॥ नंनवजलहरतडिल्लयलंछिय, सो जिणपासपयच्छउवंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तोभगवन्तइन्द्रमहिता· सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता आचार्याजिनशासनोन्नतिकराः पूज्याउपाध्यायका· ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठकामुनिवरारत्नत्रयाराधकाः, पंचैतेपरमेष्ठिन· प्रतिदिनंकुर्वंतुवोमंगलम् ॥ १ ॥ ॥

॥ पीछेनमोथ्थूणंसेलेकेजयवीयरायपर्यंतकहके, प·

करी, चउमासीअरुसंवच्छरीकेरोजतोअवश्यशांतिसुणेपरंतुऔरदिनोंमेंभिछोटीशांतिसुणे, सोलिखतेहैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिंशांतिंनिशांतं, शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ ओमितिनिश्चितवचसे, नमोनमोभगवतेऽर्हतेपूजाम् ॥ शांतिजिनायजयवते, यशस्विनेस्वामिनेदमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्वितायशस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजितायच, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजितायनिजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशनकराय, सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहभूतपिशाच, शाकिनीनांप्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजयाकुरुतेजनहित, मितिचनुतानमततंशांतिम् ॥ ६ ॥ भवतुनमस्तेभगवति, विजयेसुजयेपरापरैरजिते ॥ अपराजितेजगत्यां, जयतीतिजयावहेभवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापिचसंघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे ॥ साधूनांचसदाशिवसुतुष्टिः पुष्टिप्रदेजीयात् ॥

॥ ८ ॥ भव्यानांकृतसिद्धे, निर्वृतिनिर्वाणजननिसत्वानां॥
अभयप्रदाननिरते, नमोस्तुस्वस्तिप्रदेतुभ्यम् ॥ ९ ॥ भ-
क्तानांजन्तूनां, शुभावहेनित्यमुद्यते देवी सम्यग्दृष्टीनां;
धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरता,
नां, शांतिनतानांचजगतिजनतानां ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो,
वर्द्धिनिजयदेवविजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविष:
धर, दुष्टग्रहराजरोगरणभयत. ॥ राक्षसरिपुगणमारीचौरे,
तिश्वापदादिभ्य. ॥ १२ ॥ अथरक्षरक्षसुशिवंकुरुकुरुशांतिं,
चकुरुकुरुसदेतितुष्टिंकुरुकुरुपुष्टिं. कुरुकुरुस्वस्तिचकुरुकु
रुत्वं ॥ १३ ॥ भगवतिगुणवतिशिवशांति, तुष्टिपुष्टि,
स्वस्तीहकुरुकुरुजनानाम् ॥ ओमिनिनमोनमो, ह्रॉं ह्रीं
ह्रूं ह्र. यः क्ष· ह्रीफुट्फट्स्वाहा ॥ १४ ॥ एवंयन्नामाक्ष,
पुरुस्सरंसंस्तुताजयादेवी ॥ कुरुतेशांतिनिमित्तं. नमोना-
म· शांतयेतस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदानि,
दर्भितः स्तव शांतेः ॥ सलिलादिभयविनाशी, शांत्या
दिकरश्चभक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनंपठतिसदा. शृणोति
भावयतिवायथायोग्यं ॥ सहिशांतिपदंयायात् सूरिः श्री
मानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयंयांति, छिद्यंतेवि

वल्लय: ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमानेजिनेश्वरे ॥१८॥ सर्वमंगल, मांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानसर्वधर्मा-णांजैनंजयतिशासनम् ॥ १९ ॥ इति.

॥ पीछेचिराक्काअथवाबीजलीकाचांदणापडाहोयतो इरियावही० तस्सुत्तरी० अन्नत्थ० कहकेएकलोगस्सका-काउस्सग्गकरे, पीछेप्रगटलोगस्सकहेपूर्वलीपरेसामायिक पारेपीछेएकस्तवनदादाजीकोकहे ॥ इतिदेवसीपडिकमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ॐवरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसन्निहंविगयमो-हं ॥ सत्तरिसयंजिणाणं, सव्वामरपुईयंवन्दे ॥ स्वाहाः ॥१॥

॥ ॐभवणवइवाणव्यंतर, जोइसवासीविमाणवासी-य ॥ जेकेविदुट्ठदेवा, तेसव्वेउवसमंतुमेस्वाहाः ॥ १ ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखीकमलगर्भसम-गौरी ॥ कमलेस्थिताभगवती, ददातुश्रुतदेवतासौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातुभुवनदेवी, शिवंसदासर्वसाधुनाम् ॥ २ ॥ यस्याः

क्षेत्रंसमाश्रित्य, साधुभिः साध्यतेक्रियाः ॥ साक्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इतिक्षेत्रदेवतास्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमलागेहं. नीलदेहमहासहं ॥ नवखंडाभिधंपार्श्वं, सदा, ध्यायामिमानसो ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ॥ भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, सभवतुसंततंवः, श्रेयसेपार्श्वदेवः ॥१ ॥ इतिश्रीपार्श्वजिन० ॥ भवबीजांकुरजनना ॥ रागाद्याक्षयमपागतायस्य ॥ ब्रह्मावाविष्णुर्वा ॥ हरोजिनोवानमस्तस्मै ॥१॥

॥ अथ पच्चक्खाण लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरेनमुकारसहियं (मुंठसिं) पच्चक्खाइचउव्विहंपिआहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नथ्थणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, वेसिरई, ॥ इतिनवकारसीपच्चक्खाण ॥

॥ उग्गएसूरेपोरसि, (मुंठसि,) पच्चक्खाइचउव्विहंपिआहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमंअन्न०, सहस्सा०, पच्छन्न,

कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणंसव्वस-माहिवत्तियागारेणंवोसरइ ॥ इतिपोरसीपच्चक्खाण ॥ इसी-तरह, साढपोरसी, पुरमढ्ढ, अवढ्ढ, केपच्चक्खाणजाणना, निकेवल, पोरसिंसाढपोरसिं, पुरमढ्ढं, अवढ्ढं (वा) पच्च-क्खाइ ॥ इसीतरेजोपच्चक्खाणकरनाहोयसोकहना ॥ इति ॥

॥ विगयका पच्चक्खाण ॥

॥ विगयपच्चक्खाइअन्न० सहस्सा० लेवालेवेणं, गि-हत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खियेणं, महत्त-रा० सव्व० वोसिरई इति० ॥

॥ अथ देशावगासी पच्चक्खाण ॥

॥ देशावगासियंभोगपरिभोगंपच्चक्खाइअन्न० सह०. मह० सव्वस० ॥ वोसराई इति ॥

॥ अथ एकाशणेंका पच्चक्खाण. ॥

॥ प्रथमपोरसीसाढपोरसीकापच्चक्खाण, सव्वस० तक बोलके, एकाशणंपच्चक्खाइतिविहंपिआहारं, असणंखाइमं, साइमं, अन्न० ॥ सह० ॥ सागारी आगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, मह० ॥ सव्व० ॥ वोसिरई इति ॥

॥ अथ आंबिलका पच्चक्खाण ॥

॥ प्रथमपोरसीसाढपोरसीकापच्चक्खाण, करावे, पीछे आयंबिलंपचक्खाइ०, अन्न, सह० लेवा, गिह०, उखित्त०, पडुच०, मह०, स० व० एकासणंपचक्खाइतिविहंपिआहारं०, इत्यादिएकाशणेकापचक्खाणवोलेइति० ॥ इसीतरेह निवीकापचक्खाणकरावे, निवीमें, आंबिलकेठिकाणेंनिव्विगइयंपचखाइ, ऐसाकहै इति ॥

॥ अथ तिविहार उपवास पच्चक्खाण ॥

॥ सूरेउग्गएअभत्तठंपचक्खाइतिविहंपिआहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्न० सह० मह० पाणहारपोरसि, साढ पोरसि, पुरमढं, . अवढं वा पचखाइ, अन्न० सह० पच्छन्न० दिसा०, ॥ साहु०, मह०, सव्व०, वोसिरई ॥ इति.॥

॥ अथ चउविहार उपवास ॥

॥ सूरेउग्गएअभत्तठंपचक्खाइचउविहंपिआहारं, असणं, पाणंखाइमंखाइमं, अन्न० सह०, सव्व०, बोसिरई ॥ इति· ॥

॥ अथ संध्याकालके पच्चाखाण ॥

॥ दिवसचरिमंपच्चखाइचउविहं० । असणं, पाण०, खाइमं, साइमं, अन्न०, सह०, मह०, सव्व०, वोसरई ॥ इति ॥ सचादिवसचारिमंपचक्खाइदुविहंपिआहारं, असणं, खाईमं, अन्न० ॥ सह० मह० सव्व० वोसरई ॥

॥ पाणहार दिवसचचरिमंपच्चक्खामिअन्न० सह० मह० सव्व० वोसराइतिपाणहारपच्चक्खाण ॥ १ ॥

॥ भवचारिमंपच्चक्खाइतिविहंचउव्विहंपिआहारंअसणं पाणंखाइमंसाइमंअन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवचरिम, दोआगारकाभीहोय ॥ इति भवचरिमपच्चरकाण ॥

॥ तथा इमहिजगंठिसहिमुठिसहिअंगुठसहिमुखअभिग्रहपच्चरकाणकेभीएचारआगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमोचोलपट्टागारेणंसोसाधुकोंहोय ॥ इतिअभिग्रहपच्चक्खाण ॥

॥ अहणंभंतेतुम्हाणंसमीवेदेसावगासियंपच्चरकामि-दव्वओखितओकालओभावओ दव्वओणं देसावगासियं-

खित्तओणंउथ्थवाअण्णथवाकालउओणंमुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमंपच्चरकामिभावओणंजावगहेणंनगाहिज्जामिछ-लेणंनछलिज्जामिअण्णेणकेनिरयंकेणवाएसो परिणामोन-पडीवज्जाइताअभिग्गहअण्णथणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणंसव्वसमाहिवत्तियागारेणंवोसिरइ ॥ इतिदे-सावगासीपच्चरकाण ॥

॥ तथासाधुपच्चरकाणकरे. तवदेसावगासीनहीपच्चरके. अरुतिविहारउपवासमेंआंबिलमें नीवीमें एकासणप्रमुखमें पाणस्सकाछआगारपच्चरकेसोदिखावे हैं. पाणस्सलेवाडेण वाअलेवा डेणवाअथेणवावहुलेणवासासिथेणवाअसिथेणवा-वोसिरइ ॥

॥ इतिदशपच्चक्खाणः ॥ पचक्खाण, आपकरेतोअं-तमेवोसिरामिकहे ॥ और दूसरेकोंकरावेतोवोसिरइकहे.॥

॥ अथ पच्चखाण पारनेकी विधि ॥

॥ खमासमणदेकेइरियावहीपडिकमें, फिरखमासमण देके इच्छाका० पच्चक्खाणपारवामुहपत्तीडिलेहे इच्छा-मीं, इच्छाका० कहके अमुकपच्चक्खाणपारुंयथाश-क्ति, अमुक पच्चक्खाणपारियुं, तहत्तिकहकेएकनव

कारगुणी, अमुकपच्चक्खाणफासियं, पालियंसोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जंचनआराहियं, तस्समिच्छामिदुक्कडंकहीचैत्यवंदनकरे, क्षणेकसिझायकरे, पीछेयथासंभवेअतिथिसंविभागकरीपाणीपीवे ॥ इतिपचक्खाणपारणविधिः ॥

॥ अथ दादासाहबका स्तवन ॥

॥ सद्गुरुकरुणानिधानराखोलाजमेरी स० ॥ टेर ॥ जैजैजिनकुशलसूरि, समरतहाजरहजूर, महकताजिमजसकपूरमहिमाजगतेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापरतुमहोदयाल, छिनमेंकरदोनिहाल, संकटकोंचूरदेव, दोलतकीढेरी ॥ स० ॥ २ ॥ तुमहोसुरतरुसमान, वंछितफलदेवोदान । सेवककोंदीनजाणमेटोभवफेरी ॥ स० ॥ ३ ॥ सरणआयेकीराखोलाजवंछितसबपूरोकाज, हरखचंदसरणआएमहिमासुनतेरी ॥ ४ ॥ इति ॥ पुनः ॥ कुशलगुरुदेवकेदरशन, मेरादिलहोतहैपरशन । जगतमेंआपसमाकोई । मे नदेखानयनभरजोई ॥ १ ॥ विरुदभूमंडलेगाजे । फरसतांपापसहुभाजे । पूज तांसुखसंपदापावे । अचिंतीलच्छिघरिआवे ॥ २ ॥ इकमुखगुणकहुंकेता । मुझहीये

ग्याननहिएता । लासचंदकीअरजसुणलीजे । चरणकी भक्तिमोहिदीजे ॥ २ ॥ राजैथुंभठोरठोर, पैसोदेवनहिं और, दादोदादोनामसें, जगत्रजशगायोहै ॥ आपणेही भावआय, पूजैलख्खलोकपायप्यासनकोरन्नमांहे, पाणी आनपायोहै ॥ वाटघाटशत्रुदाटहाटपुरपट्टणमेंदेवगेहनेह-सुंकुशलवरतायोहै । धरमशीहध्यानधैरेसेवकांकुशलकरे सांचोश्रीजिनकुशलसूरिनामयुंकहायोहै ॥१ ॥

॥ अथ जिनस्तुति ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनादिष्टितप्रदः ॥ पूजना-त्पूरक श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुम ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ सुवर्णवर्णगजराजगामिनं, प्रलंबबाहुंसुविशाललो-चनम् ॥ नरामरेंद्रै स्तुतपादपंकजं, नमामिभक्त्यारुषभं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इतिआदिजिनस्तुति ॥

॥ अथ शातिजिन स्तुति ॥

॥ सोलमजिनवरशांतिनाथ, सेवोशिरनामी ॥ कंचन वरणशरीरकांति, अतिशयअभिरामी ॥ अचिराअंगजवि-श्वसेन, नरपतिकुलचंद ॥ मृगलंछनधरपदकमल, सेवे-

सुरनरवृंद ॥ जुगमांअमृतजेहवीए, जासअखंडितआण ॥ एकमनेंआराधतां, लहियेंकोडिकल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथ ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ महसमप्रणमुंनेमिनाथ, जिनवरजयवंत ॥ यादवकुलअवतंसहंस, उत्तमगुणवंत ॥ समुद्रविजयशिवादेवीजास, मतिसहितउदार ॥ सुंदरश्यामशरीरज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढगिरनारेंजिणलह्युंए, अमृतपदअभिराम ॥ तासक्षमाकल्याणमुनि, निशिदिनमतकल्याण ॥ ५ ॥ इतिश्रीनेमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीपार्श्व स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणीपासनाह, नमियेंमनरंग ॥ नीलवरण अश्वसेननंद, निरमलनिःशंक ॥ कामितपूरणकल्पसाख, वामासुतसार ॥ श्रीगोडीपुरस्वामिनाम, जपियेंनिराधार ॥ त्रिभुवनपतित्रेवीशमोए, अमृतसमजसुवाण ॥ ध्यानधरेंतांएहनुं, प्रगटेपरमकल्याण ॥६॥ इतिपार्श्वनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूंजगदाधारसार, शिवसंपत्तिकारण ॥ जन्मजरा

मरणादिरूप, भवतापनिवारण ॥ श्रीसिद्धारथतातमात, त्रिशलातनुजात ॥ सोवनवरणशरीरवीर, त्रिभुवनविख्यात ॥ अमृतरूपेंराजतोए, चोवीशमोजिणराय ॥ क्षमाप्रमुखकल्याणमुणि, आपोकरिसुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्रीमहावीरस्तुतिः ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहांप्रथमवंदित्तुसूत्रपर्यंतदेवसिकपडिकमी ॥ १ ॥ खमासमणदइदेवसीआलोइयंपडिकंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खियमुहपत्ती, पडिलेहुं ? चउमासीएंचउमासिर मुहपत्ती, संवच्छरीयेंसंवच्छरीमुहपत्तीपडिलेहुं ? एमकहे पीच्छेंगुरुकहे,पडिलेहेह॥ पीच्छेइच्छंकहे,दूजीखमासमणदे इ,मुहपत्तीपडिलेही,वांदणांदेई,तिहांपक्खीमेंपक्खोवइकंतो॥ चउमासीपडि०चउमासीआवइकंतो ॥ संवच्छरीमेंसंवच्छ० वइकंतो. ॥ एमयथायोगेंकहे ॥ पीछेंगुरुकहे. पुण्यवंत, देवसीनेस्थानकेंपाक्खिक ॥ चउमासिकसांवच्छरिकमप जो. थींकजयणाकरजो. मधुरस्वरेंपडिकमजो, खासेसो: धराशुद्धखासजो मांडलमेंसावचेतरहेजो. पीछेंसघला: सहत्तिकहे ॥ पीछेंऊठी ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ सं

अब्भुट्ठिओमिअब्भिंतरपक्खियं ॥३॥ खा-
द्धखामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमिअब्भिंतरपक्खियं ॥३॥ खा-
मेऊं ? गुरुकहेखामेह, पीछेमस्तकेअंजलिकरतोथको, इ-
च्छंखामेमिपक्खियं ॥ ३ ॥ कही, गोडालीयेबेसीमस्तक
नमावीदक्षिणहाथगुरुसाहामोकरी, मुहपत्तीमुखेदेई ॥ प-
क्खियेपनरसहंदिवसाणंपनरसहंराईजंकिंचिअप्पत्तियं ॥ इ-
त्यादिसर्वपाठकहे. चउमासेचउहंमासाणंअठहंपक्खाणंवी-
सोत्तरसोराइंदियाणंजंकिंचिअप्पत्तियं ॥ इत्यादिकहे. सं-
वच्छरीयेदुवालसहंमासाणं चउवीसहंपक्खाणं तिन्निसयाठि-
राइंदियाणं ॥ जंकिंचिअप्पत्तियंइत्यादिकहे ॥ तेवारेगुरु
पणमिच्छामिदुक्कडंकहे ॥ तिहांदायसाधुउचरताहुवेतोपा-
क्खियेतीन, चउमासीयेपांच, संवच्छरीयेसातसाधुनखमावे॥
पीछेउठीअवग्रहमांहिरह्योकहे ॥ इच्छा० ॥ सं० भ० ॥
पक्खियंआलवुं ? गुरुकहेआलोएह ॥ पीछेइच्छंआलो-
एमि, जोमेपक्खिउं ॥ ३ ॥ अइयारोकउं, इत्यादिसूत्र
भणी ॥ संक्षेपेअथवाविस्तारेपाखीचउमासीसंवच्छरी, अ-
तिचारआलोवे, सोलिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमिदंसणंमिय, चरणंमितवंमितहयवीरियंमि ॥

आयरणंआयारो, इअएसोपंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५, एवंपांचविधि आचारमांहिंजिको अतीचारपक्ष दिवसमांहिसूक्ष्म, बादर, जाणतांअणजाणतांहुओहोई, ते सहूमन, वचन, कायाईंकरीमिच्छामिदुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ कालेविणएवहुमाणे, उवहाणेतहयनिन्हवणे ॥ वंजणअथ्थतदुभए, अउविहोनाणमायारो ॥१॥ ज्ञानः—कालवेलामांहिपढिउंगणिउंनही, अकालेपढिउं, विनयहीनबहुमानहीनउपधानहीनश्रीउपाध्यायकनेनहीपढिउं, अथवाअनेराकनेपढियुंअनेरोगुरुकह्योव्यंजनअर्थ तदुभयकूडोपढ्यो, देववांदणेपडिकमणेसिज्झायकरतां, पढतां, गुणतां, कूडोअक्षरकानेमात्रें अधिकोओछो आगलपाच्छलभण्यो, सूत्रअर्थकूडाभण्या, भणीनेंविसार्‍यो,तपोधनतणेधर्मेकाजो अणऊधरेदांडीअणपडिलेही, वसतीअणसोधी, असिज्झाई अणोझाकालवेलामांहिदशवैकालिकप्रमुख सिद्धांतभण्यो गुण्यो, योगवह्यां, पखेंभण्यो, ज्ञानोपगरणपाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडासांपडीवहीदस्तरीओ-

लीयाकागलप्रमुखप्रतेंआशातनाहुई, पगलागो, थूंकलागो, उंसीसेमूक्यो, कनेंछतांआहारनीहारकीधो, ज्ञानद्रव्यभक्षणउपेक्षणकीधो, प्रज्ञापराधेंविणास्यो, विणसतोउवेख्यो, छतीशक्तेंसारसंभालनकीधी, ज्ञानवंतप्रतेंमच्छरवह्यो अवज्ञाअशातनाकीधी, कोईप्रत्यभणतांगुणतांप्रद्वेषमत्सर अंतरायआपघातकीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, एपांचज्ञानतणीअसद्दहणा कीधी,कोईतोतलोबोबडोहस्यो, वितर्क्योआपणाजाणपणातणोगर्वचिंतव्यो, अष्टविधज्ञानाचारविषईओजिकोअतिचारपक्षदिवसमांहेसूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुवो होय, ते सहुमनवचनकायाइंकरीमिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकियनिक्कंखिअ, निवितिगिछाअमूढदिठीअ॥ उववूहथिरीकरणे, वच्छल्लपभावणेअठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेविषेनिःशंकपणोनकीधो, तथाएकांतनिश्चयधस्योनहीं, धर्मसंबंधियाफलसघलाइमतभलाछे, एहवीश्रद्धाकीधी, धर्मसंबंधियाफलतणेविषेनिःसंदेहबुद्धिधरीनहीं. चारित्रियासाधुसाधवीतणामलमलीनगात्रदेखीदुगंछाउपजावी, मिथ्यात्वीतणीपू-

जाप्रभावनादेखीमूढदृष्टिपणोकीधो, संघमांहेगुणवंततणी अनुपवूंहणाअस्थिरीकरणअवात्सल्यअप्रीति अभक्तिचिंतवी. संघमांहेथिरीकरणवात्सल्यशक्तिछतेप्रभावनान कीधी, देवद्रव्यविनाशिओ, विणसंतुंऊवेखीओ, छतीशक्ते सारसंभालनकीधी, साधर्मिकशुंकलहकर्मकीधुं, जिन भवनतणीचोराशीआशातनाकीधी, गुरुप्रतेतेत्रीशआशातनाकीधीअधौतवस्त्रेदेवपूजाकीधी, तिहुंठामपाखेंदेवपूज्यावासकूपीकलशतणोठवकोलागो, मुखतणीनाफलागी, ठवणारियहाथथकीपडीओ, पडिलेहवोवीसारयो, नवकरवालीनेंपगलागो, दर्शनाचारविपईओजिकोअतिचार॥३॥

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिसमिईहिंतिहिगुत्तीहि ॥ एसचारितायारो, अठविहोहोइनायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भासासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिरकेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिठावणीयासमिती ५, मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, एपंचसमितीतीनगुप्ति, रुडीपरेंपालीनही ॥ साधु

तेणेंसदेवश्रावकतणेपोसहपडिक्कमणेलीधे अष्टविधचारित्राचारविषईउंजिकोअतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणेंधर्मैंश्रीसम्यक्त्वमूलबारहव्रत श्रीसम्यक्त्वतणापांचअतिचारः-संकाकंखविगिच्छा, पसंस तहसंथवोकुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंतणीबलअतिशय ज्ञानलक्ष्मी गांभीर्यादिकगुणशाश्वतीप्रतिमाचारित्रियानां-चारित्रजिनवचनतणोसंदेहकीधो. आकांक्षाःब्रह्माविष्णुम-हेश्वरक्षेत्रपालगोगोगोत्रदेवताग्रहपुज्याविणाइग हनुमंतइ-त्येवमादिकग्रामगोत्रदेशनगरजूजूआदेवदेहरानाप्रभावदे-खीरोगेंआतंकेंइहलोकपरलोकार्थैंपूज्यामान्या, बौद्धसांख्या दिकसंन्यासीभरडाभगत लिंगियाजोगीदरवेशअनेराइदर्श नियानोकष्ट मंत्रचमत्कारदेखी परमार्थ जाण्याविणभूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्रशीख्यां, सांभल्यां शराधसंवत्सरीहो-लीबलेवमाहीपूनिमअजापडिवोप्रेतबीजगोरत्रीज विणाय-गचोथ नागपांचमझूलणाछठ शीलसातमद्रा आठमनउली नवमअहवदसमव्रतइग्यारसवत्सबारसधनतेरस अनंतचौ-दशआदित्यवारउत्तरायणनवोदकजागभोगउतारयणा की-धा, पिंपलपाणीघाल्यांघलाव्यांघरयाहिरकूईतलावनदीस-

मुद्रकुंडमेंपुण्यहेतुस्नानकिधां, दानदिधां, ग्रहणशनिश्चर-माहमासनवरात्रिनाहिया, अजाणनांथाप्यां. अनेराईव्रत व्रतोलांकीधां, करावयां विचिकिच्छा—धर्मसंबंधियाफलत-णोसंदेहकीधो, जिणअरिहंतधर्मनाआगरविश्वोपकारसा-गरमोक्षमार्गदातारदेवाविदेवबुद्धेशुद्धभावेनपूज्या नमा-न्या, महात्मानाभातपाणीतणीदुगंछाकीधी कुचारित्रिया-देखीचारित्रियाऊपरअभावहुओ, मिथ्यात्वीतणीप्रभावनादे खीप्रशंसाकीधी, प्रीतिमांडी, दाक्षिणलगेतेहनोधर्ममान्यो।। श्रीसमकितविषेअनेरोजिकोअतिचारपक्षदिवसमांहि सूक्ष्म, वादर, जाणतांअजाणतांहुओहोय, तेसहूमन, वचन, कायाइकरीमिच्छामि० दुकडं ॥ १ ॥

॥ पहिलेप्राणातिपातविरमनव्रतेपांचअतिचार वहवंध छविच्छेए, अइभारेभत्तपाणवुच्छेए।। द्विपदचउपदप्रतेंरीश-वशेंगाढोघाउप्रहारघात्यो, गाढेवंधणेवांध्यां, घणेभारेपि-ड्या, निर्लाछनकर्मकिधां. चारापाणीतणीवेलासारसंभाल नकीधी, लहिणेदेणेकिणहीप्रतेंलंघाव्युं, तेणेंभूखेंआपण-जीम्या, अणगलपाणीवावर्युं, रूडेगल्युंनही, गलाव्युंन-ही, अणगलपाणीझीर्यां, लुगडांधोयां, इंधणअणसोध्युंजा

स्थुसापकानखजूराखुलहलामाकडजूआंगोगिंडासाहतांमू-
आं, दुखव्या, रूडेथानकनमूक्या, कीडीमकोडीउदहीघीवे-
लीकातराचूडेली पतंगियादेडकांअलसिया ईलीकूतिडांसम
साबगतरामाखीप्रमुखजेकोईजीवविणठा, चापियादुहव्या-
मालाहलावतांपंखीकागचिडकलानांइंडाफूटां, अनेराएकें
द्रियादिकजिकेजीवविणठा, चांप्पा, दुहाव्या, हालतांचा-
लतांअनेरुंकांइकामकाजकरतांविध्वंसपणुंकीधुं. जीवरक्षा
रूडीनकीधी, संखारोसूकव्यो, सुल्याधानतावडेदीधां, द-
लाव्यां, भरडाव्यां, खाटलातावडेझाटक्या, मूक्या, मूका-
व्यां, जीवाकुलभूमिलींपावी, वाशीगारराखीरखावी, द-
लणखांडणेलींपणेरूडीजयणानकीधी. आठमचउदशना-
नियमभांग्या, धूणीकरावी ॥ पहिलाप्राणातिपातव्रताव-
षइनुंअनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूलमृषावादविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसारहस्सदारे, मोसुवएसेयकूडलेहेय ॥ सहसा
त्कारः—किणहिकप्रतेंअयुक्तो आलदीधो, किणहिकप्रतें
एकांतेंवातकरतांदेखीतुम्हेंताराजाविरुद्धचिंतवोछो. इत्या-

दिककह्युं. स्वदारमंत्रभेदकीधो, अनेराईकिणहीनोमंत्र आलोचमर्मप्रकाश्यो, किणहीनेंकूडीबुद्धिदीधी, कूडोलेखलिख्यो, कूडीसाखभरी, थापणमोसोकीधो, कन्यादोर गायभूमि संबंधियालेहणेंदेयणें व्यवसायवादवदावढिकरत मोटकुंझूठबोल्युं, हाथपगभणीगालदीधी, करडकामोड्या अधर्मवचनबोल्यां ॥ बीजेमृषावादव्रतविषइ० ॥

॥ त्रीजेअदत्तादानविरमणव्रतनापांचअतिचार ॥ तेमाहडप्पआगे. घरबाहिरक्षेत्रखले पराई वस्तुअणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनीवस्तुमोललीधी, चोरधाडीतभतेंसंबलदीधुं, संकेतकह्युं, विरुद्धराज्यातिक्रमकीधो, नवापुराणांसरसविरससजीवनिर्जीववस्तुतणाभेलसंभेलकीधा, खोटेतोल माममापेवहोरयां, दाणचोरीकीधी, साटेलांचलीधी, मातापितापुत्रकलत्रपरिवारवंचीजूदी गांठकिधी, किणहींनेंलेखपलेंखभूलव्युं, पडीवस्तओलवीलीधी. त्रिजेअदत्तादानव्रतविषओ० ॥

॥ चोथेस्वदारसंतोषमैथुनव्रतेंपांचअतिचार ॥ अपरिगहियाइतर, अणंगविवाहतिव्वअणुरागे ॥ अपरिगृही-

तागमन, इत्वरपरिगृहितागमन. विधवावेश्यास्त्रीकुलांगः
नास्वदार शोकतणेविषदृष्टिविपर्यासकीधो, सरागवचन
बोल्या, आठमचउदसअनेरांइपर्वतिथितणानियमभांगा,
घरघरणांकीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्पचिंत:
व्या, अनङ्गक्रीडाकीधी, परायाविवाहजोड्या, कामभो-
गतणेविषेतीव्राभिलाषकीधो, कुस्वप्नलाधां. नटविटपुरु-
षशुंहासुंकिधुं, चोथमैथुनव्रतवि० ॥

॥ पांचमेपरिग्रहपरिमाणव्रतेपांचअतिचार ॥ धणधन्न
खित्तवत्थु ॥ धनधान्यक्षेत्रवस्तुरुप्पसुवर्णकुप्पाद्विपदचतु-
ष्पदनवविधपरिग्रहतणानियमउपरांतवृद्धिदेखीमूर्च्छालगेसं
क्षेपनकीधोमातापितापुत्रकलत्रादितणेलेखेकीधो, परिग्रह
परिणामलेईपढ्योनहीं. पढीवीसारिओ, नियमवीसारीओ॥
पाचमेपरिग्रहपरिमाणव्रतविषइओ ॥

॥ छठेदिग्विरमणव्रतेपांचअतिचार ॥ गमणस्सयप-
रिमाणे ॥ ऊर्द्धदिसिअधोदिसितिर्यग्दिसिजायवाआयवा
तणोनियमजेकोईअजाणभांगो, एकगमासंकोडीबीजीग-
मावधारी, विस्मृतिलगेंअधिकभूमिगया, पाठवणीआधी
केली ॥ छठेदिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥

॥ मातमेभोगोपभोगपरिमाणव्रत ॥ जेहनाभोजन आश्रीपांचअतिचारअनेकरमहूंनीपन्नरे, एवंवीसअतिचार ॥ सचितेपडिवद्धे, अपोलदुप्पोलयंचअहारे० सचित्ततणे नियमलीधेअधिकसचितलीधुं, तथासचित्तमलीवस्तुअ-पक्काहारदुपक्काहारतुच्छौपाधितणुंभक्षणकीधुं. होलओवी-पहुंकाकडीभडथांकीधां. सुल्यांधानप्रमुखभक्षणकीधां ॥ सचित्तदव्वविगई, पाणहतंवोलवथकुसुमेसु ॥ वाहणसयण-विलेवण, वंभदिसिन्हाणभत्तेसु ॥१॥ एचवदेनियमदिनप्र-तेसंभारयासंक्षेप्यानहि, लेईनियमभांग्या. वावीसअभक्ष, वत्तीसअनंतकायमांहिआदुंमुलागाजरपींडालुसुरण सेलरां काची आंवली गोल्हां खाधा, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटीखाधी, त्रिहुं दिवसनुं दही लीधूं, मधुमहुडांमाखणमाटीवेंगणपीलुपीचूपपोटा पींपी विषहीम करहाघोलवडांअणजाण्यांफल टींवरुंअथाणुंआमणवोरका-चुंमीठुं, तिलखसखसकाचांकोठिवडांखाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगवगतीवेलायेंव्यालूकीधुं, दिवसउग्याविणाशि-राव्या, तथापन्नरेकर्मादानइंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडी-कम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्ये, लक्खवाणि-

ज्ये, रसवाणिज्ये, केशवाणिज्ये, विषवाणिज्ये, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलावसोसणया, असईपोसणया, एपांचवाणिज्य, पांचकर्म्म, पांचसामान्य, महारंभलीहालाकराव्या. इंटवाहनीवाहपचाव्या, धाणीचणापक्वान्नकरीवेच्या. वासीमाखणतपाव्यां, अंगीठाकीधाकराव्या, तिलादिकसंचीया, फागुण मासउपरांतराख्या, कूकडासूडाप्रमुखपोष्या, अनेरुंजेकांई बहुसावद्यकठोरकर्मादिकसमाचर्युं ॥ सातमाभोगोपभोव्रतविषइ० ॥

॥ आठमाअनर्थदंडविरमणव्रतनापांचअतिचार ॥ कंदप्पेकुक्कुइए० ॥ कंदर्प्पलगेंविटनीपरेंहास्यकुतूहलमुखादि अंगकुचेष्टाकीधी, मूरखपणालगेंकुणहीनेअसंबुद्धवाक्य बोल्या. खांडाकटारीकुसिकुहाडारथऊखलमूसलअगनघरटीआदिकसजकरीमेल्यां, माग्यांआप्यां, कणकवस्तु ढोरलेवराव्यां, अनेरोकांइपापोपदेशदीधो, अंघोलन्हाण, दांतण, पगधोअणपाणीतेलअधिकआण्यां, हिंडोलेहींच्या, राजकथादेशकथाभक्तकथास्त्रीकथापराइवातकीधी-आर्त्तध्यानध्यायां, कर्कशवचनबोल्या, करडकामो,

ध्या. संभेडालाया, भेंसासांढकूकडा, मिंढाश्वानादिजू झतांकलहकरतांजोयां, खाधीलगेंअदेखाईचिंतवी, माटी मीठुंकणकपासियाकाजविणचांप्या, तेहउपरबयठा, आले वनस्पतिखुंदी, छासपाणीधीरसतेलगुलआम्लवेतसवेरजा दिकतणांभाजनउघाडांमूक्यां. तेमांहिकीडीकुंथुआमा खीउंदरगिरोलीप्रमुखजीवविणठा, सूडाप्रमुखजीवक्रीडाहे तेंबांधीराख्या, घणीनिद्राकीधी, रागद्वेषलगेंएकनेऋद्धि परिवार वांछीएकनें मृत्युहाणिचिंमासीआठमाअनर्थदंड व्रतवि० ॥

॥ नवमासामायिकव्रतेपांचअतिचार ॥ तिविहेदु प्पणिहाणे ॥ सामायिकलीधेमनआहटदोहटचितव्युं, व चनसावद्यबोल्युं, कायअणपडिलेहुं हलाव्युं, छतीवेला सामायिकनलीधुं, सामायिकलईउघाडमुखेबोल्या, उंघ आवीकीधी, वीजदीवातणीउजाहीलागी. कणकपासी यामाटीमीठुंनीलफूलहरिकायनासंघट्टहुआ, पुरुषतीर्यच नासंघट्टहुआ तथास्त्रीतिर्यचीआभडी, मुहपत्तीयोसं घट्टी, सामायिकअणपूरओपारिओ, पारओवीसारिओ नवमेसामायिकव्रतविषइयो० ॥

॥ दशमेदेशावकाशिकव्रतेंपांचअतिचार ॥ अपेसवणे० ॥ आणवणप्पओगेपेसवणप्पओगेसद्दाणुवाइरूवाणुवाइबहियापुग्गलक्खेवे ॥ नियमितभूमिकामर्यादबाहिरथकीकांईअणाव्युं, आपकन्हाथी बाहिरमोकल्या, सादकरीरुपदेखाडीकांकरीनाखीआपणपणुंछतुंजणाव्युं ॥ दशमेदेशावकासिगव्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमेपोषधोपवासव्रतेंपांचअतिचार ॥ संथारुच्चारविही, पमायतहचेवभोअणाभोए० ॥ पोसहलीधेसंथारातणीभूमिबाहिरलाथंडिलांदिवसेंशोध्यांपडिलेह्यांनहीं, मातरुंअणपडिलेह्युंवावरिओ, अणपुंजीभूमिकाइंपरठविओ, परठवतां चिन्तवणानकीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहोनकह्यो. परठव्यां पूंठेवारत्रणवोसिरामिवोसिरामिनकह्युं. पोसहशालमांहिपइसतांनीसरतांनीस्सहीआवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकायतेऊकायवाऊकायवनस्पतिकायत्रसकायतणासंघट्टपरितापउपद्रवहुआ, संथारापोरसीतणोविधिभणओ विसारिओ, पोरसिमांहिउंघ्या, अविधिसंथारुपाथर्युं, कालवेलायेंपडिक्कमणुंनकीधुं, पारणातणीचिंतानिपजावी, कालवेलादेववांदवावीसारिया,

पोसहअखुरोलीयो, सत्रारोपारीयो, पर्वतिथिआवीपोसह-लीधोनही ॥इग्यारमेपोपधोपवासव्रतीपत्वयो० ॥

॥ वारमेअतिथिसंविभागव्रतेंपांचअतिचार ॥ सचित्ते निख्खवणे० ॥ सचित्तवस्तुहेठेऊपरिथकेमहातमाप्रतेंअसूझतुंदानदीधुं, अदेवातणीबुद्धेंसूझतुंफेडीअसुझतुकीधुं, देवातणीबुद्धेअसूझतुंफेडीसूझतुं कीधुं, आपणुंफेडीपरायुं कीधुं, विहरवावेलाटलिगयाअसुरकरीमाहतमातेड्या.मच्छरलगेंदानदीधुं, गुणवंतआवेभगतिनसाचवी, छतीशक्तिसाधर्मिकवात्सल्यनकीधुंअनेराइधर्म्म क्षेत्रासिदाताछती शक्तें उद्धरयानहीं ॥ वारमेअतिथिसंविभागव्रतविपइयो० ॥

॥ संलेहणातणापाचअतिचार, इहलोएपरलोए० ॥ इहलोकासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगेजीविआसंसप्पओगेमरणासंसप्पओगेकामभोगासंसप्पओगे, इहलोकमनुष्यभवमानमहत्वलोकतणीसेवाठकुराईवलदेव वासुदेवचक्रवर्ति पदवांच्छया,परलोकइंद्रअहमिद्रदेवाधिदेवपदवीवांछी, सुखआव्येजीववातणीवांछाकीधी, दुःखआव्येमरणातणीवांछाकीधी, कामभोगतणीइच्छाकीधी, संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचारवारभेदं ॥ छअभ्यंतरछबाहिर. अणसण-

णोयरिया, अणसणकहीयेंउपवास, तेपर्व्वीतिथीछती
तेंकीधुंनही. ऊणोदरीतेपांचसातकवलऊणारह्यानही.
व्यसंक्षेपविगयप्रमुखपरमाणकीधुंनहीं. आसनादिकका-
किलेशनकीधो, संलीणताअंगोपांगसंकोच्यांनहीं, न-
कारसी पोरसीगंठसीमूठसीसाड्ढपोरसिपुरिमड्ढएकासणो वे-
आसणोनीवीआंबिलप्रमुखपच्चरकाणपारव्यांवीसार्या. वेस-
नवकारभण्योनहीं, ऊठतांदिवसचरिमंनकीधुं नीवी
आंबिलउपवासादिकतपकरीकाचुंपाणीपीधुं, वमनथयुं ॥
ह्यतपव्रतविषइयो० ॥

॥ अभ्यंतरतप ॥ पायच्छित्तंविणओ०गुरुकनेंमनशुद्धे
आलोयणालीधीनही, गुरुदत्तप्रायच्छिततपलेखाशुद्धपुह-
चाड्युंनहीं, देवगुरुसंघसाहम्मीप्रतेंविनयसाचव्यो नही,
वाचनापृच्छनापरावर्त्तनाअनुप्रेक्षाधर्मकथालक्षणपंच विध
सिज्झायकीधीनहीं, धर्म्मध्यानशुक्लध्यानध्यायुंनही, कर्म
क्षयनिमित्तलोगस्सदसवीसनो काउस्सग्गनकीधो ॥ अ-
भ्यंतरतपविषइयो० ॥

॥ वीर्याचारनातीनअतिचार ॥ अणगुहियबलवीरि-
ओ, परिक्कमइजोजहुत्तठाणेसु ॥ जुंजइअजहाथामं, नाय-

त्रीवीरियायारो ॥ १ ॥ पढवेगुणवेविनयवेयावच्चदेवपूजा सामायिकदानशीलतपभावनाप्रमुखधर्मकृत्यतणे विपे मन वचनकायानणुंछतुंवलवीर्यगोपव्युं, रुडांपंचाङ्गखमासमण नदीधां, वेठांपडिकमणुंकीधुं ॥ वीर्याचारव्रतविपयो० ॥

॥ नाणाइअठअइवय. समसंलेहणपणपनरकम्मेसु ॥ बारसतववीरिअतिगं, चउवीससयअईयारा ॥ १ ॥ पडी सिद्धाणं करगे० ॥

॥जिनप्रातिपिद्धबावीसअभक्ष्यबत्तीसअनंतकायबहुवीजभक्षणमहाआंरभमहापरिग्रहादिककीधां, नित्यकृत्यदेवपूजासामायिकादिकतथातीर्थयात्रादिकनकीधां, जीवाजीवादिविचारसदहियानही, आपणीकुमतिलगें उत्सूत्र प्ररूपणाकीधी, प्राणातिपात, १, मृपावाद २, अदत्तादाने ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग २०, द्वेप ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृपावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. एअढारहपापस्थानकमांहिजेकांइकीधोकराव्युंअनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारेंश्रावकधर्मेश्रीसम्यक्त्वमूलबारहव्रतचोवीसांमो अतिचारमांहि

जीकोकोइअतिचारपक्षदिवसमांहिसूक्ष्मवादरजाणतां अ-
जाणतां हुवोहोयतेसहूमनवचनकायायेंकरीमिच्छामिदुक्कडं
॥ इतिश्री-श्रावकोंकेबाहरव्रतकाअतिचारसं० ॥

॥ पीछेंसव्वस्सविपरिकिय ॥ इत्यादिकइच्छाकारेणसं-
देस्सहपर्यंतकहेतेवारेगुरुकहे. चउत्थेणपडिक्कमह. चउ-
मासेछठेणपडिक्कमह. संवत्सरीयेंअठमेणपडिक्कमह. इच्छं
स्सभिच्छामिदुक्कडं कही. वे द्वादशावर्तवांदणांदेवे. पीछे
च्छाकारेणसंदिस्सहभगवान्देवसियं आलोइयं पडिक्कंता
॥१॥ पत्तेयखामणेणं, अब्भूठिओमिअभिंतरपाक्खियं॥३॥
मेउं ? गुरुकहेंखा०॥पीछेंइच्छंखामेमिपाक्खियं॥ ३ ॥ इ-
यादिपाठसर्वपूर्वकह्यो; तिमकहीमिच्छामिदुक्कडंदेईखमावे;
छेंबेवांदणादेइ. भगवन् ! देवसियंआलोइयंपडिक्कंता
क्खियं ॥ ३ ॥ पडिक्कमावेह ? गुरुकहेसम्मंपडिक्कमह.
छेंइच्छंकही ॥ करेमिभंतेसामाइयं ॥ इच्छामिठामि
उस्सग्गंजोमेपाक्खिओ ॥ इत्यादिकही, तस्सुत्तरी०
अन्नथ्थ० ॥ कही ॥ काउसग्गकरे, गुरुपासीसूत्रकहे,
सांभले. अनेगुरुथकीजूदापडिक्कमताहुवे, तोएकश्रा-
कखमासमणदेइकहे. भगवन् ! सूत्रभणुं ? गुरुकहे.

भणेह. एसोवचनमनमेधारी॥ इच्छंकही, उभोथको, हाथ जोडीमुहपत्तीमुखेंदेई. तीननवकारकही, मधुरस्वरेंसूत्रार्थ मनमेंचितवनोवंदित्तुसूत्रगुणे. बीजाश्रावक करेमिभंते० इच्छामिठामिकाउस्सग्गंतस्सुत्तरी० ॥ अनथ्थ० ॥ कही काउस्सग्गमेंरह्याखुणे. सूत्रप्रातें नमोअरिहंताणंकही, काउसग्गपारी, उभाथकातीननवकारसूणीनें पीछे॥३॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमिभंतेकही, इच्छामिपडिक्कमिओ जोमेपरिकओ ॥ २ ॥ इत्यादिकहीवंदित्तुसूत्रगुणे, पडिक्कमेदेसियंसव्वं ॥ एहनेठिकाणेंपडिक्कमेपरिकयं, चउम्मासियं, संवच्छरियंसव्वंकहे पीछेंऊठी, अब्भुठिओमिआराहणाएइत्यादिपूर्णभणी, खमासमणदेईइच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुलगुणउत्तरगुणअतिचारविशुद्धिनिमित्तं, काउस्सग्गकरूं ? गुरुकहेकरेह पीछेंइच्छंकही. करेमिभंते सामा० ॥ इच्छामिठामिकाउस्सग्गंतस्सु० अन्नथ्थ० इत्यादिकही, पाखीयें बारलोगस्सचउमासियेंवीसलोगस्स संवच्छरीयेंचालीसलोगस्सनोकाउस्सग्गकरे. एकनवकार ऊपर, काउस्सग्गकरीपारीलोग्गस्सकहे. बेसीमुहपत्ती पडिलेही. बेवांदणांदेईइच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ समाप्ति

खामणेणं ॥ अब्भुटिओमिअब्भिंतरपरिक्कयं ॥ ३ ॥
खामेऊ? गुरुकहेखामेह. पीछेंइच्छंखामेमिपक्खियं ॥
इत्यादिपाठपूर्वककह्यो. तिमकहे, पीछेंइच्छाका० सं०॥भ०॥
पारवी ॥ ४ ॥ खामणांखामूं? गुरुकहे, पुण्यवंतोचारखे
खमासमणदेई. तीनतीननवकारकही, पारवी ॥ २ ॥ स-
सासखाणमांखामेह. पीछेंश्रावकएकखमासमणदेई. मस्त-
कनीचुं नमावी, तीननवकारगुणे, इमचारवारकहे, पी-
छेंगुरुकहेनिच्छारगपारगाहोह. पीछेंश्रावककहे. इच्छं इ-
च्छामिअणुसठिंकही, गुरुकहे, पुण्यवंतोपारवीनेलखे, एक
उपवासअथवादोयआंबिलअथावातीननीवी. अथवाचार
एकासणां, अथवाबेहजारसज्झायकरी, एकउपवासनीपठं
पूरज्यो, पारवीनेस्थानकेंदैवसिकभणजो. एमचउमासेंएक
सर्वदुगुणोकहणो, संवच्छरीयेंत्रिगुणोकहणो. पीछेंजिणें
तपकीधाहुवेतपइठियंकहे. नकीधाहुवेततहत्तिकहे ॥ पीछें
बेवांदणांदेई. अब्भुटिओमिअब्भिंतरदेवसियंखामेमिइत्या-
दिकहे. पीछेंबेवांदणांदेई. आयरियउवज्झाए० तीनगाथा
कहे, इमआगेंसर्वविधिदैवसिकपडिक्कमणानीकरेपणइतरो
विशेषहे. श्रुतदेवतानोकाउस्सग्गकरीस्तुतिकहे. पिछें

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते तत्र प्रथमं ॥

॥ अजिअंजिअसव्वभयं, संतिचपसंतसव्वगय पावं॥ जयगुरुसंतिगुणकारे, दोविजिणवरेपणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलभावे, तेहंविउलतवनिम्मलसहावे ॥ निरुवममहप्पभावे थोमामिसुदिठसभ्पावे ॥२॥ गाहा ॥ सव्वदुखप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं, ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिय संतिणं, ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहयधिइमहप्पवत्तणं, तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्कयरं, अजिअं निचियंचगुणेहि महामुणिसिद्धिगयं ॥ अजिअस्सयसंतिमहामुणिणोविअसंतिकरं, सययंममनिवुइकारणयंचनमंसणयं ॥ ५ ॥ अलिगणयं ॥ पुरिसा जइदुखवारणं, जइअ विमग्गह सुहखकारणं ॥ अजिअं संतिचभावओ, अभयकरेसरणंपवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअसुवरयजरमरणं, सुरअसुर गरुलभूयगवईपययपणिवइअं ॥ अजिअमहमविअसुनय नय निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअभविदिविजमहिअं

सययगुवणसे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिगुत्तमगुत्तम नित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहि निहिं ॥ संतिअरंपणमामिदमुत्तमतित्थयरं. संतिमुणी ममसंति समाहिवरंदिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थि वंचवरहत्थिमत्थयपसत्थय विच्छिन्नसंथिअं थिरस रिच्छवच्छंमयगललीलायमाणवरगंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थवाहुंधंतकणगरुअगनिरुवहय पिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवंसुइसुहमणाभिरामपरमरम णिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवो हरिओ ॥ पणमामिअहंपयओ, पावंपसमेउसेभयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धओ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरोपढमंतओ महाचक्कवट्टिभोएमहप्पभावोजो बाहत्तरिपुरवर सहस्स वर नगरनिगमजणवयवईबत्तीसारायवर सहस्साणुआयमग्गो चउदसवररयणनवमहानिहि चउसठिसहस्स पवरजुवईण सुंदरवईचुलसीहय गयरहसयसहस्ससामिछण्णवइ गाम कोडिसामीआसिज्जोभारहंमिभयवं ॥ ११ ॥ वेड्ढओ ॥ तंसंतिंसंतियरं, संतिन्नंसव्वभया ॥ संतिंथुणामिजिणं संतिं

विहेउमे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इक्खागुविदेहनरीसर, नरवसहामुणिवसहा ॥ नवसारयससिसकलाणग, विगय तमाविहुअरया ॥ अजिउत्तमतेअगुणेहिमहामुणि, अमिय बलाविऊलकुला ॥ पणमामिभवभयमूरण जगसरणा ममसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचंदसूरवंद हठतुठजिउपरम लठरूवधंतरुप्पपटसेअसुद्धनिद्धधवल ॥ दंतपंतिसंत्तिसत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्ति पवर, दित्त तेअ वंदधेअसव्वलोअभाविअप्पभावणेअपइसमेसमाहि ॥१४॥ नारायओ ॥ विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसुर कलाइरेअतेअं ॥ तियसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइ रेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेअसयाअजिअं, सारीरेअबलेअजिअं ॥ तवसंजमेअअजिअं, एस अहं थुणामिजिणंअजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरिंगिअ ॥ सोमगुणेहिपावइनतंनवसरयससी, तेअगुणेहिपावइ न तंनवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिपावइनतंतिअसगणवइ, सार गुणेहिपावइनतं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ ति त्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअंचुअकलि-कलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयंतिगरणपयओ, संतिमहंमहा

मुणिसरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय सिरिरयअंजलि, रिसिगणसंथुअंथिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइनरवइ, थुअमहिअच्चिअंबहुसो ॥ अइरुग्गयसरय दिवायर, समहिअसप्पभंतवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ, चारणवंदिअंसिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगणमंसिअं ॥ देवकोडि-सयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहंअरयंअरुयं ॥ अजिअंअजिअंपयओपणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगयावरविमाण, दिव्वकणगरहतुरय पहकरसएहिंहुलिअं ॥ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचल कुंडलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्ढओ ॥ जंसुरसंघासासुरसंघावेरविउत्ताभत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअ संभमपिंडिअसुठुसुविम्हिअसवबलोघा ॥ उत्तमकंचणरय णपरूविअभासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणयभत्तिव-सागयपंजलिपेसियसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं, तिगुणमेवयपुणोपयाहिणं ॥ पण-मिऊणयजिणंसुरासुरा, पमुइआसभवणाइंतोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तंमहामुणिमहंपिपंजलि, राग दोसभयमोह

वज्जिअं ॥ देवदाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहि, ललिअहंसवहुगामिणिआहि ॥ पीणसोणिथणसालणिआहि, सकलकमलदललोअणिआहि ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतरथणभरविणमियगायलयाहि, मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहि ॥ वरखिंखिणिनेउर सतिलय वलय विभूसणियाहि, रइकर चउर मणोहरसुंदरदंसणियाहि ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिपायवंदिआहि वंदिआयजस्सतेसुविक्कमाकमाअप्पणो निडालएहिमंडणोड्डणप्पगारएहिकेहिकेहिवीअवंग तिलयपत्तलेह नामएहि चिल्लएहिसंगयंगयाहिभत्तिसन्निविठ वंदणागयाहिंहुंतिते वंदिआपुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहंजिणचंदं, अजिअंजिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसंपयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सारिसिगणदेवगणेहि. तोदेववहूहिपयओपणमिअस्सा ॥ जस्सजगुत्तमसासणयस्सा भत्तिवसागयपिंडिअआहि ॥ देव वरच्छरसाबहुआहि सुरवर, रइगुणपंडिअआहि ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंसमद्दतंतिताल मेलिएतिउक्खराभिराममद्दमीसएकएअ,

सुइसमाणणेअसुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं ॥ वलय मेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसएकएअदेवनट्टिआहिं ॥ हावभावविब्भमप्पगारएहिंनच्चिऊणअंगहारएहिं वंदिआय जस्सतेसुविक्कमाकमा ॥ तयंतिलोअसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेसहंनमामिसंतिमुत्तमंजिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ, झयवर मगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा ॥ दीवसमुद्दमंदरदिसागय सोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठासमप्पइठा, अदोसदुठा गुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठातवेणपुठा, सिरीहिंइठारिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ तेतवेणधुअसव्वपावया, सव्व-लोअहिअमूलपावया ॥ संथुआअजिअसंतिपायया, हुंतु मेसिवसुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवंतवबल विउलं, थुअंमएअजिअसंतिजिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गइंगयंसासयंविउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तंबहु-गुणप्पसायं, मुक्खसुहेणपरमेणअविसायं ॥ नासेउमे वि-सायंकुणउअपरिसाविअप्पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउअनंदिं, पावेउअनंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाविअ-

सुहनंदिं, मभयदिसउसंजमेनंदि ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खि-
अचाउम्मासिय, संवच्छरिएअवस्सभणिअव्वो ॥ सो-
अव्वोसव्वेहि, उवसग्गनिवारणोएसो ॥ ३८ ॥ जोपढइ
जोअनिसुणइ, उभओकालंपिअजिअसंतिथयं ॥ नहुहुंति
तस्सरोगा, पुव्वुप्पनाविनासंति ॥ ३९ ॥ जइइच्छहपरम
पयं, अहवाकित्तिसुवित्थडंभुवणे ॥ तातेलुक्कुद्धरण, जिण-
वयणेआयरंकुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजित-
शांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक्कमनक्खनिग्गयपहादंडच्छलेगंगिणं. वंदा-
रुणदिसंतइव्वपयडं निव्वाणमग्गावलि ॥ कुंदिंदुज्जल
दंतकंतिमिसओ नीहंतनाणंकुरु. ऽकेरोविदुइज्जसोलस
जिणेथोसामिखेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरंजोमिणिज्जं
जलीहि, खयसमयसमीरंजोजणिज्जागईए ॥ सहलनहय
लंवालंघएजोपएहि, अजिअसहवसंतिसोसमच्छो थ्थुणेउं
॥ २ ॥ तहविहुबहुमाणुल्लासभत्तिप्भरेण, गुणकणमविकि-
त्तीहामिचिंतामणिव्व ॥ अलमहवअचिंताणं समाम्पयओमि
फलहइलहुसव्वंवंछिअंणिच्छिअंमे ॥ ३ ॥ मयलजयहिआणं

नामभित्तेणझाणं, विहडइलहुदुठानिठदोघट्टथंठ ॥ नभिर-
सुरकिरीडग्गिठपायारविंदे, सययमजिअसंतितेजिणिंदेभि-
वदे ॥ ४ ॥ पसरइवरकित्तिवड्डुएदेहदित्ति, विलसइभुवि
मित्तीजाघएसुप्पावित्ती ॥ फुरइपरमतित्तीहोइसंसारछित्ती,
जिणजुअपयभत्तीहीअचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ललियपयपयारं
भूरिदिव्वंगहारं, फुडगणरसभावोदारसिंगारसारं ॥ अण-
मिसरमणीजदंसणच्छेअभीया, इवपुणमणिवंधाकासनट्टो-
वयारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंतीतेकयासेससंती, कणय-
यपसंगाछज्जएजाणिमुत्ती ॥ सरभसपरिरंभारंभनिव्वा-
गलच्छी, घणथणघुसिणिक्कुप्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहु
विहनयभंगंवथ्थुणिच्चंअणिच्चं, सदसदणभिलप्पा लप्पमेगं
अणेगं ॥ इयकुनयविरुद्धंसुप्पसिद्धंतुजेसिं, वयणमवय
णिज्जंतेजिणेसंभरामि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोएताव मोहं
धयारं, भमइजयमसण्णंताव्वमिच्छत्तछण्णं ॥ फुरइफुडपलं-
ताणंताणाणंसुपूरो, पयडअजिअसंतिझाण सूरो न जाव
॥ ९ ॥ अरिकरिहरितिण्हुण्हंबुचोराहीवाही, समरडमर
मारीरुद्दखुद्दोवसग्गा ॥ पलयमजिअसंती कित्तणे झत्ति
जंति, निविडतरतमोहाभक्खरालुंखिअव्व ॥ १० ॥ निचि

अदुरिअदारुदित्तझाणग्गिजाला, परिगयमिवगोरं, चिति-
अंझाणरुत्रं ॥ कणयनिहसरेहाकंतिचोरंकरिज्जा, चिरथिर
मिहलच्छिगाढसंथंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं
पथ्थिवुत्तासिआणं, जलहिलहरिहीरंताणगुत्ति ठियाणं ॥
जलिअजलणजालालिगिआणं चझाणं, जणयइलहुसंतिं
संतिनाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकिण्णं पक्कपाइ
क्कपुण्णं, सयलपुहविरज्जंछड्डिउं आणसज्जं ॥ तणमिव
पडिलग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरणमणुपवण्णा हुंतु ते मे
पसणा ॥ १३ ॥ छणससिवयणाहि फुल्लनित्तुप्पलाहिं,
थणभरनमिरिहिंमुट्ठिगिज्झोदरीहि ॥ ललिअभुअलयाहिं
पीणसोणिथ्थलीहि, सयसुररमणीहि वंदिआ जेसि पाया
॥ १४ ॥ अरिसकिडिभकुट्ठगंठिकासाइसार, खयजरवण
लुआसाससोसोदराणि ॥ नवमुहदसणच्छी कुच्छिकण्णा-
इरोगे, मह जिणजुअपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इय
गुरुदुहतासेपक्खिवएचाउमासे, जिणवरदुगथुत्तं वच्छरे वा
पवित्तं ॥ पढइसुणइसिज्झाएहझाएइचित्ते, कुणह सुणह
विग्घंजेणधाएहसिग्घं ॥ १६ ॥ इयविजयाजियसत्तुपुत्त
सिरिअजिअजिणेसर, तहअइराविससेणतणइपंचमचक्की-

सर ॥ तित्थंकरसोलसमसंतिजिणवल्लहसंथुअ, कुरुमंगल ममहर सुदुरिअमखिलंपिथुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघु- अजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥ २ ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊणपणयसुरगण, चुडामणि किरणरंजिअमु- णिणो ॥ चलणजुअलंमहाभय, पणासणंसंथवंवुच्छं ॥ १ ॥ सडियकरचरणनहमुह, निबुड्डनासाविवन्नलावन्ना ॥ कुठ महारोगानल, फुलिंगनिद्दड्ढसवंगा ॥ २ ॥ तेतुहचलणा राहण, सलिलंजलिसेयवुड्ढियच्छाया ॥ वणदवदड्ढा गि- रि, पायपुव्वपत्तापुणोलच्छि ॥ ३ ॥ दुवायखुभियजल- निहि, उब्भडकल्लोलभीसणारावे ॥ संभंतभयविसंठुल, निज्झामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलियजाणवत्ता, खणेण पावंतिइच्छिअंकूलं ॥ पासजिणचलणजुअलं, निच्चंचिअ जेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धअवणदव. जालावलि मिलियसयलदुमगहणे ॥ डझंतमुद्धमियवहु, भीसणरव भीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमजुअलं, निवाविअ सयलतिहुअणाभोअं ॥ जेसंभरंतिमणुआ, नकुणइजलणो भयंतेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोगभीसण, फुरिआरुणनयण

तरलजिहालं ॥ उग्गभुअंगंनवजलय, सथ्थहंभीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंतकीडसरिसं, दूरपरिच्छुढविसमविसवेगा ॥ तुहनामख्खरफुडसिद्ध, मंतगुरुआनरालोए ॥ ९ ॥ अड विसु भिल्लतकर, पुलिदसदुलसद्दभीमासु॥ भयविहलु वुन्नकायर, उल्लूरिअपहिअसथ्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्त विहवसारा, तुहनाहपणाम मत्तवावारा ॥ ववगयविग्धा सिग्घं, पत्ताहियइच्छियंठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनल-नयणं, दुरवियारियमुहंमहाकायं ॥ नहकुलिसघायविअ लिअ, गइंदकुंभथ्थलाभोअं ॥ १२ पणयससंभमपथ्थिव, नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ॥ तुहवयणपहरण धरा, सीहंकुद्धंपिनगणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं, दीह करुल्लालवड्ढिउच्छाहं ॥ महुपिंगनयणजुअलं, ससलिल नवजलहरायारं ॥ १४ ॥ भीमंमहागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नविगिणंति॥ जेतुम्हचलणजुअलं, मुणिवइतुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मितिख्खखग्गा, भिघायपविद्ध उध्धुय कबंधे ॥ कुंतविणिभिन्नकरिकलह, मुक्कसिक्कारपउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धररिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवलं ॥ पावंतिपावपसामण, पासजिणतुहप्पावेण ॥१७॥

रोगजलजलणविसहर, चोरारिमइंदगयरणभयाइं ॥ पास
जिणनामसंकि, त्तणेण पसमंतिसव्वाइं ॥ १८ ॥ एवंमहा
भयहरं, पास जिणिंदस्ससंथ्थवमुआरं ॥ भवियजणाणं
दयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ रायभयजक्खरक्ख-
स, कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ॥ संझासु दोसु पंथे,
उवसग्गेतहयरयणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ, ताणं
कइणोयमाणतुंगस्स ॥ पासापावंपसमेउ, सयलभूवणच्चि
अचलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीय स्मरण
संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तंजयउ जएतिथ्थं, जमिथ्थ तिथ्थाहिवेणवीरेण ॥
सम्मंपवत्तिअं, भव्वसत्तसंताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअ
सयलकिलेसा, निहयकुलेसापसथ्थसुहलेसा ॥ सिरिवद्ध-
माणतिथ्थस्स, मंगलं दिंतुतेअरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म
बीआ, बीआपरमेठ्ठिणोगुणसमिद्धा ॥ सिद्धातिजयपसि-
द्धा, हणंतुदुथ्थाणितिथ्थस्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता,
पंचपयारंसयापयासंता ॥ आयरिआतहातिथ्थं, निहयकु-
तिथ्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगा, वायगायसिअवा

यवायगावाए॥पवयणपाडिणीयकए, वणितुसव्वस्ससंवस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुगुज्जुअ, साहूणंजणिअसव्व साहज्जा ॥ तित्थप्पभावगाते, हवंतुपरमेठिणोजइणो ॥६॥ जेणाणुगयंनाणं, निव्वाणफलंचचरणमविहवइ ॥ तित्थस्स दंसणंतं, मंगलमुवणेउसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छम्मो सुअधम्मो, समग्गभव्वंगिवग्गकयसम्मो ॥ गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलंसम्ममिहदिसउ ॥ ८ ॥ रम्मोचरित्तधम्मो, संपाविअभव्वसत्तासिवसम्मो ॥ नीसेसकिलेसहरो, हवउ सयासयलसंघस्स ॥ ९ ॥ गुणगणगुरुणोगुरुणो, शिवसुहमइणोकुणंतु तित्थस्स ॥ सिरिवद्धमाणपहुपय, डिअस्सकुसलंसमग्गस्स ॥ १०॥ जियपडिवक्खाजक्खा, गोमुहमायंगयसुहपमुक्खा ॥ सिरि बंभसंतिसहिआ, कय नयरक्खासिवंदितु ॥ ११ ॥ अंबापडिहयडिंबा, सिद्धासिद्धाइआपवयणस्स ॥ चक्केसरिवइरुट्टा, संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीओदितुसंघस्समंगलं विउलं ॥ अच्छुत्तासहिआओ, विस्सुअसुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिणसासणकयरक्खा, जक्खाचउवीस सासण सुरावि ॥ सुहभावासंतावं, तित्थस्ससयापणासंतु ॥१४॥

जिणपवयणंमिनिरया, विरहाकुपहाउसव्वहासव्वे ॥ वेया वच्चकराविअ, तिथ्थस्सहवंतुसंतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग, विहिअभव्वाणजणिअसाहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्त जलथ्थल, वणपव्वयवासिदेवदेवीओ ॥ जिणसासणठि- आणं, दुहाणिसव्वाणिनिहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपाला- सखित्तवालयानवग्गहासनखत्ता ॥ जोइणिराहुग्गहका लपासकुलिअद्धपहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकालकंटएहिं, सवि ठिवथ्थेहिंकालवेलाहिं ॥ सव्वेसव्वथ्थसुहं, दिसंतुसव्वस्स- संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइवाणअंतर, जोइसवेमाणिआयजे देवा ॥ धरणिंदसक्कसहिआ, दलंतु दुरिआइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं, गच्छइपुरओपणासिअतमो- हं ॥ तंतिथ्थस्सभगवओ, नमोनमोवद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणोवीरो, जस्सज्जविसासणंजएजयइ ॥ सिद्धि- पहसासणंकुपह, नासणं सव्वभयमहणं ॥ २२ ॥ सिरि उसभसेणपमुहा, हयभयनिवहादिसंतुतिथ्थस्स ॥ सव्व जिणाणंगणिहा, रिणोणहंवंछिअंसव्वं ॥ २३ ॥ सिरिव- द्धमाणतिथ्था, हिवेणतिथ्थंसमप्पिअंजस्स ॥ सम्मंसुहम्म

सामी, दिसउसुहंसयलसंघस्स ॥ २४ ॥ पयइएमादिआ जे; भदाणदिसंतुसयलसंघस्स ॥ इयरसुराविहुसम्मं, जिणगणहरकहियकारिस्स ॥२५॥ इयजोपढइतिसंझं, दुस्सझं तस्सनत्थिकिपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिउ, सुनिठिअग्गे सुहोहोइ ॥ २६ ॥ इतिश्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थ स्मरणं ॥ ४ ॥

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामकं पंचम स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअंगुणगणरयण, सायरंसायरंपणमिऊणं ॥ सुगुरुजणपारतंतं, उवहिव्वथुणामितंचेव ॥ १ ॥ निम्महियमोहजोहा, निहयाविरोहापणटसंदेहा ॥ पणयंगिवग्ग दाविअ, सुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुजइचसोहा, समत्तपरतित्थजणियसंखोहा ॥ पडिभग्गमोहजोहा दंसि असुमहथ्थसथ्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअसथ्थवाहा, हयदुह दाहासिवंमतरुसाहा ॥ संपावियसुहलाहा, खीरोदहिगुव्व अगाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा, सज्जो निरुवज्जगहिअपवज्जा ॥ सिवसुहसाहणसज्जा. भवगिरि गुरुचूरणेवज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्मप्पमुहा, गुणगण निवहासुरिंदविहियमहा ॥ ताणातिसंझनामं, नामंनपणा-

सइजिणाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअजिणदेवो, देवायरिओ दुरंतभवहारी ॥ सिरिनेमचंदसूरी, उज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरीमंतमाहप्पो ॥ पडिहयकसायपसरो, सरयससंकुव्व सुह जणओ ॥ ८ ॥ सुद्धसीलचोरचप्परण, पच्चलो निच्चलोजिणमयंमि ॥ जुगपवरसुद्धसिद्धांत, तजाणउपगयसुगुणजणउ ॥ ९ ॥ पुरओदुल्लहस्सअणहिल्लवाडएपयडं ॥ मुक्काविआरिऊणं, सीहेणवदव्वलिंगिगया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय निसिवि, प्फुरंतसच्छंदसूरिमयतिमिरं ॥ सूरेणवसूरिजिणे, सरेणहय महिअदोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंतसुहमुत्ती ॥ पहयपरवाइदित्ती, जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयडिअनवंगसुत्तथ्थ, रयणकोसोपणासिअपओसो ॥ भवभीअभविअजणमण, कयसंतोसोविगय दोसो ॥ १३ ॥ जुगपवरागमसार, प्परूवणाकरणबंधुराधणिअं ॥ सिरिअभयदेवसूरी, मुणिपवरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावयसंतासो, हरिव्वसारंगभग्गसंदेहो ॥ गयसमयदप्पदलणो, आसाइअपवरकव्वरसो ॥ १५ ॥ भीमभवकाणणंमिअ, दंसिअगुरुवयणरयणसंदेहो ॥ निसेस सत्तगुरुओ,

सूरीजिणवल्लहोजयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअमच्चरणो, चउर णुओगप्पहाणसच्चरणो ॥ असममयरायमहणो, उड्ढमुहो सहइजस्सकरो ॥ १७ ॥ दंसिआनिम्मलनिच्चल, दंतगणो गणिअसावओच्छभओ ॥ गुरुगिरिगरुओसरहिव्व, सूरि जिणवल्लहोहोत्था ॥ १८ ॥ जुगपवरागमपीऊ, सपाणि पीणयमणाकयाभवा ॥ जेणजिणवल्लहेणं, गुरुणातंसव- हावंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअपवरपवयण, सिरोमणी वूढदु- व्वहखमोया ॥ जोसेसाणंसेखु, व्वसहइ सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआणमहीणं, सुगुरूणं पारतंतमुव्वहइ ॥ जयइजिणदत्तसूरी. सिरिनिलओपणयमुणितिलओ ॥२१॥ इतिश्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री षष्ठ स्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउविग्घं, जिणवीराणाणुगामिसंघस्स ॥ सिरिपासजिणोथंभण, पुरठिओनिठिआनिठो ॥ १ ॥ गो- यमसुहम्मपमुहा, गणवइणोविहिअभव्वसत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाणजिणतित्थ, सुत्थयंतकुणंतुसया ॥ २ ॥ सक्का- इणोसुराजे, जिणवेयावच्चकारिणोसंति ॥ अवहरिअविग्घं संघा, हवंतुतेसंघसंतिकरा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणय ठिअपा,

ससामिपयपउमपणयपाणीणं ॥ निद्दलिअदुरिअ विंदो, धरणिंदोहरउदुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्खजक्खा, पडि हयपडिवक्खपक्खलक्खाते ॥ कयसुगुणसंघरक्खा, हवंतु संपत्तिसिवसुक्खा ॥५॥ अप्पडिचक्कापमुहा, जिणसासण देवयाउजिणपणिआ ॥ सिद्धाइआसमेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसाम्मचउर, पुरट्ठिओवद्धमाण जिणभत्तो ॥ सिरिवंभसंतिजक्खो, रक्खउसंघ पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिहगुत्तसंताण, देसदेवाहिदेवयाताओ ॥ निव्वुइपुरप[illegible]याणं, भव्वाणकुणंतुसुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के सरिचक्कधरा, विहिपहरिउच्छिण्णकंधराधणिअं ॥ सिवस-रणलग्गसंघस्स, सव्वहाहरउविग्घाणि ॥ ९ ॥ तिथ्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरोसंगओसुसंघेण ॥ जिणचंदोभयदेवो रक्खउजिगवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सोजयउ वद्धमाणो, जिणेसरोणेसरुवहयतिमिरो ॥ जिणचंदाभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहाजेय ॥ ११ ॥ गुरुजिणवल्लहपाए, भयदेव पहुत्तदायगेवंदे ॥ जिणचंदजिणेसरव, द्धमाणतिथ्थस्स वुड्ढिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणंसम्मं, मन्नंतिकुणंति जेय कारंति॥मणसावयसावउ[illegible], जयंतुसाहम्मिआतेवि ॥१३॥

जिगदत्तगुणेनाणाइणो. मयाजेधरंतिधारिति ॥ दंसिअ-
मियवायपए, नमामिमाहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इतिषष्ठं
स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामक सप्तमस्मरणम ॥

॥ उवसग्गहरंपासं, पासंवंदामिकम्मघणमुक्कं ॥ विस
हरविसनिण्णासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥
भवेभवेपासजिणचंद पर्यंतसंपूर्णकहना ॥ ५ ॥ इतिश्री
पार्श्वजिनस्तवनं सप्तमरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं
समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्र प्रारम्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकंदलित-
पापतमोवितानम् ॥ सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा,
वालंबनंभवजलेपततांजनानाम् ॥ १ ॥ य. संस्तुत. सक-
लवाङ्मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धिपटुभि. सुरलोकनाथै ॥
स्तोत्रैर्जगत्रितयचित्तहरैरुदारै., स्तोष्येकिलाहमपितंप्रथ-
मंजिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्याविनापिविबुधार्चित
पादपीठ. स्तोतुंसमुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बालंविहाय
जलसंस्थितमिंदुबिंब. मन्य कइच्छतिजन सहसाग्रहीतुम्

॥ ३ ॥ वक्तुंगुणान्गुणसमुद्रशशांककांतान्, कस्तेक्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, कोवातरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापितवभक्तिवशान्मुनीश, कर्त्तुंस्तवंविगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेवमुखरीकुरुतेबलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किलमधौमधुरंविरौति, तच्चारुचाम्रकलिका निकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेनभवसंततिसंनिबद्धं, पापंक्षणात्क्षयमुपैतिशरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिवशार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथतवसंस्तवनंमयेद, मारभ्यतेतनुधियापितवप्रभावात् ॥ चेतोहरिष्यतिसतांनलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैतिननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तांतवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्सं, कथापिजगतांदुरितानिहंति ॥ दूरेसहस्रकिरणः कुरुतेप्रभैव, पद्माकरेषुजलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूतनाथ, भूतैर्गुणैर्भुविभवंतमभिष्टुवतः तुल्या भवंतिभवतोननुतेनकिंवा, भूत्याश्रितंयइहनात्मसमं करो

ति ॥ १० ॥ दृष्ट्वाभवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्रतो
षमुपयातिजनस्यचक्षूः ॥ पीत्वापयः शशिकरद्युतिदुग्ध-
सिंधोः, क्षारंजलंजलनिधेरशितुंकइच्छेत् ॥११॥ यैःशांत-
रागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललाम-
भूत ॥ स्तावंतएवखलुतेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्तेसमानमपरं
नहिरूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रंक्वतेसुरनरोरगनेत्रहारि, निः-
शेषनिर्ज्जितजगात्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनंक्व
निशाकरस्य, यद्वासरेभवतिपांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रागुणास्त्रिभुवनं तव
लंघयंति ॥ येसंश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवा
रयतिसंचरतोयथेष्टम् ॥१४॥ चित्रंकिमत्रयदितेत्रिदशां
गनाभि, र्नीतंमनागपिमनोन विकारमार्गम् ॥ कल्पांत-
कालमरुता चलिताचलेन, किमंदराद्रिशिखरंचलितंकदा-
चित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्ज्जिततैलपूरः कृत्स्नंजग
त्त्रयमिदंप्रकटीकरोषि॥ गम्योनजातुमरुतांचलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसिनाथजगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तंकदा-
चिदुपयासिनराहुगम्यः, स्पष्टीकरोषिसहसायुगपज्जगं-
ति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,

मासिमुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयंदलितमोहमहां-
धकारं, गम्यंनराहुवदनस्यनवारिदानाम् ॥ विभ्राजतेतव
मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्व्वशशांकबिंबम्
॥ १८ ॥ किंशर्वरीषुशशिनान्हिविवस्वतावा, युष्मन्मुखेंदु
दलितेषुतमस्सुनाथ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके
कार्यंकियज्जलधरैर्ज्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानंयथात्वयि
विभातिकृतावकाशं, नैवंतथाहरिहरादिषुनायकेषु ॥ तेजः
स्फुरन्मणिषुयातियथामहत्त्वं. नैवं तुकाचशकले किरणा-
कुलेऽपि ॥२०॥ मन्येवरं हरिहरादयएवदृष्टा, दृष्टेषुयेषु
हृदयंत्वयितोषमेति ॥ किंवीक्षितेनभवताभुवियेन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरतिनाथभवांतरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणांशतानि
शतशोजनयंतिपुत्रान्, नान्यासुतंत्वदुपमंजननीप्रसूता ॥
सर्वा दिशोदधतिभानिसहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति
स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंतिमुनयः परमंपुमांस
मादित्यवर्णममलंतमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपल-
भ्यजयंतिमृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्यमुनींद्रपंथा॥२३॥
त्वामव्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतम-
नंगकेतुम् ॥ योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूप

ममलंप्रवंदतिसंत; ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेवविबुधार्चितबुद्धि
बोधात्. त्वंशंकरोऽसिभुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासिधीर
शिवमार्गविधेर्विधानात्. व्यक्तंत्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमो
ऽसि ॥२५॥ तुभ्यंनमस्त्रिभुवनार्त्तिहरायनाथ, तुभ्यंनमः
क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यंनमस्त्रिजगत, परमेश्वराय,
तुभ्यंनमोजिनभवोदधिशोषणाय ॥२६॥ कोविस्मयोऽत्र
यदिनामगुणैरशेषै, स्त्वंसंश्रितो निरवकाशतयामुनिश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वै,, स्वप्नांतरेऽपिनकदाचिद
पीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयुख, मा
भातिरूपममलंभवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त
तमोवितानं, बिंबंरवेरिवपयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहा
सनेमणिमयुखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तववपु; कन
कावदातम् ॥ बिंबंवियद्विलसदंशुलतावितानं, तुंगोदया
द्रिशिरसीवसहस्त्ररश्मे; ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचा
रुशोभं, विभ्राजतेतववपु, कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशां
कशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटंसुरगिरेरिवशातकौंभम् ॥
३० ॥ छत्रत्रयंतवविभातिशशांककांत, मुच्चै,स्थितंस्थगि
तभानुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्र-

स्त्र्यापयत्त्रिजगत; परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपं
कजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयुखशिखाभिरामौ ॥ पादौ
पदानितवयत्राजिनेंद्रधत्त; पद्मानितत्रविबुधा;परिकल्पयंति
॥ ३२ ॥ इथ्थंयथातवविभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनावि
धौनतथापरस्य ॥ यादृक्प्रभादितकृत; प्रहतांधकारा, ता
दृक्कुतोग्रहगणस्यविकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदावि
लविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमभ्द्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयंभवतिनो भवदा
श्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त,
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभाग; ॥ बद्धक्रम; क्रमगतंहरि
णाधिपोऽपि, नाक्रामतिक्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥ ३५ ॥
कल्पांतकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं, दावानलंज्वलितमुज्ज्व
लमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वंजिघत्सुमिवसंमुखमापतंतं, त्वन्नाम
कीर्तनजलंशमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणंसमदकोकिल
कंठनीलं, क्रोधोद्धतंफणिनमुत्फणमापततम् ॥ आक्रामति
क्रमयुगेनानिरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनीहृदियस्य पुंस;
॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्ज्जित भीमनाद, माजौ बलं
बलवतामपिभूपतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयुखशिखापविद्धं

त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्न-
गजशोणितवारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे
जयं विजितदुर्ज्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौक्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठी
नपीठभयदोल्वणवाडवाग्नो ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपा-
त्रा, स्त्रासंविहायभवत; स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूत
भीषणजलोदरभारभुग्ना, शोच्यांदशामुपगताश्च्युतजीविता
शा; ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्याभवंतिमक
रध्वजतुल्यरूपा· ॥४१॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा,
गाढंबृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघा, ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशंम-
नुजा; स्मरंत;, सद्य; स्वयं विगतबंधभयाभवंति ॥४२॥
मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनो
त्थम् ॥ तस्याशुनाशमुपयातिभयंभियेव, यस्तावकंस्तव-
मिमंमतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजंतवजिनेंद्रगुणैर्नि-
बद्धां,भक्त्यामयारुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्तेजनोयइह
कंठगतामजस्रं, तंमानतुंगमवशासमुपैतिलक्ष्मी, ॥४४॥
॥ इतिभक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भोभव्या; श्रृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायांत्रिभुवनगुरोरार्हतांभक्तिभाजः ॥ तेषांशांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरीक्लेशविध्वं सहेतुः ॥ १ ॥ भोभोभव्यलोकाइहहिभरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतांजन्मन्यासनप्रकंपानन्तरंअवधिनाविज्ञायसौधर्माधिपतिःसुघोषाघण्टाचालनानन्तरसकलसुरासुरेंद्रैः सहसमागत्यसविनयमर्हद्भट्टारकंगृहीत्वा, गत्वाकनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमितिकृत्वा, महाजनोयेनगतस्स पंथाः ॥ इतिभव्यजनैः सहसमागत्य, स्नात्रपीठस्नात्रंविधाय, शांन्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं ॥ इति कृत्वाकर्णदत्वानिशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्णाहं २, प्रीयंतां २, भगवंतोऽर्हन्तः, सर्वज्ञाःसर्वदर्शिन त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः, त्रैलोक्यपूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्योतकराः, ॐ ॥ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,

स्वामी ११. मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४ अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २० शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४. एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितीर्थंकरा ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४. सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०. श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५ शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९. मुनिसुव्रत २०. नमि २१. नेमि २२' पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १. सुरदेव २. सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४. सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६. उदय ७. पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०. सुव्रत ११. अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५. चित्रगुप्ति १६, समाधि १७. संवर १८. यशोधर १९. विजय २०. मल्लि २१. देव २२. अनन्तवीर्य २३ भद्रंकर २४.

॥ एते भाविनीर्थंकरा जिना ॥ शान्ता शान्तिकरा

भवंतु, मुनयोमुनिप्रवरारिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्ग मार्ग्गेषुरक्षंतुवोनित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संबर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ट ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वसुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, वि वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनका: ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथ्विमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, ॥ इति वर्त्तमानजिनजनन्य: ॥

ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १० यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कु-

वेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणि १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४, एता वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धिलक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंतितेजिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुपदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता १३, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतुमेस्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्यशांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतुपुष्टिर्भवतु ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ अर्हद्भ्योनमोनम;, ॐ ह्रीँ ॥ श्रीँ अर्हँ सिद्धेभ्योनमोनम: ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ आचार्य्येभ्योनमोन ; ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ उपाध्यायेभ्योनमोनम; ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ श्री गौतमस्वामिप्रमुख सर्वसाधुभ्योनमोनम; ॥ १ ॥ एषपंचनमस्कार: सर्वपाप क्षयंकर; ॥ मंगलानांचसर्वेषां, प्रथमंभवतिमंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जयविजये, अर्हंपरमात्मनेनम; ॥ कमलप्रभ सूरींद्रो, भाषतेजिनपंजरम् ॥ ३ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालंय; पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलंसलभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्ज्जित; ॥ देवताग्रेपवित्रात्मा, षण्मासैर्लभतेफलं ॥ ५ ॥ अर्हंतंस्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धंचक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यंश्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायंतुघ्राणके ॥६॥ साधुवृन्दंमुखस्याग्रे, मन; शुद्धं विधायच ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधी; सर्वार्थसिद्धये ॥ ७॥ दक्षिणेमदनद्वेषी, वामपार्श्वेस्थितोजिन; ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञ; परमेष्ठीशिवंकर; ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्री जिनोरक्षे, दाग्नेयींविजितेंद्रिय; ॥ दक्षिणाशांपरंब्रह्म, नैर्ऋतिंचत्रिकाल

वित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशांजगन्नाथो, वायवीं परमेश्वर ;॥ उत्तरांतीर्थकृतसर्वा, मीशानींचनिरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, न्नाकाशं पुरुषोत्तम ; ॥ रोहिणीप्रमुखादेव्यो, रक्षंतुसकलंकुलं ॥ ११ ॥ ऋषभोमस्तकंरक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभव ; कर्णयुगलं, नासिकांचाभिनंदन : ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्री सुमतीरक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभोविभु ; ॥ जिव्हां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभु. ॥ १३ ॥ कंठंश्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयंश्रीसुशीतल ; ॥ श्रेयांसो बाहु युगलं, वासुपूज्य · करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलोरक्षे, दनंतोऽसौस्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्ना भिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकंरक्षे, दरोरोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरुपृष्टिवंशं, जंघेचमुनिसुव्रत· ॥१६॥ पादांगुली- र्नेमीरक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथ; सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वा काशमयंजगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वितरागोनिरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेश्मशानेवा, संग्रामेशत्रुसंकटे ॥ व्याघ्र चौरागिन्सर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥१९॥ अकालमरण प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वेमहादोषे, मूर्खत्वे

रोगपीडीते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसनेचापादिस्मरेत् ॥२१॥ प्रातरेवसमुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्यकिंचिद्भयंनास्ति, लभतेसुखसंपदं ॥ २२॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियंसलभतेन्नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थायपठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीमनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे-देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूडामणिरेषजैनो, जीयादगुरुः, श्री कमलप्रभाख्यः ॥ २५॥ इति श्रीजिन पंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥

॥ कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मं ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमभिनम्यजिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्यस्वयंसुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्नविभुर्विधातुं ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो,स्तस्याहमेषकिलसंस्तवनंकरिष्ये ॥ २॥ ग्मं ॥) सामान्यतोऽपितववर्णयितुंस्वरूप, मस्म

कथमधीशभवंत्यधीशाः धृष्टोपिकोशिकशिशुर्यदिवादिवा-
धो, रुपंप्ररूपयतिकिंकिलधर्मरश्मेः ॥३॥ मोहक्षयादनुभव-
न्नपिनाथमर्त्यो, नूनंगुणान्गुणयितुंनतवक्षमेत ॥ कल्पा-
न्तवान्तपयसः प्रकटोपियस्मा, न्मीयेतकेनजलधेर्ननुरत्न
राशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मितवनाथजडाशयोपि, कर्त्तुं-
स्तवंलसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोपिकिननिजबाहुयुगं
वितत्य, विस्तीर्णतांकथयतिस्वधियांवुराशिः ॥ ५ ॥ ये
योगिनामपिनयांतिगुणास्तवेश, वक्तुंकथंभवतितेषुममाव
काशः ॥ जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंतिवानिज
गिरानतुपक्षिणोपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमाजिनसं-
स्तवस्ते, नामापिपातिभवतो २ जगंति।तीव्रातपोपहतपांथ
जनान्निदाघे, प्रीणातिपद्मसरसः सरसोनिलोपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्त्तिनित्वयिविभो शिथिलीभवंति, जंतोः क्षणेननिविडा
अपिकर्म्मबंधाः ॥ सद्योभुजङ्गममयाइवमध्यभाग, मभ्या
गतेवनशिखंडिनिचंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंतएवमनुजाःस-
हसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि
स्फुरिततेजसिदृष्टमात्रे, चौरैरिवाशुपशवः प्रपलायमानैः
॥ ९ ॥ त्वंतारकोजिनकथं भविनांतएव, त्वामुद्वहंतिहृद-

ोनयदुत्तरंतः ॥ यद्वाहृतिस्तरतियज्जलमेषनून, मंतर्ग-
स्यमरुतः सकिलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन्हरप्रभृतयो
ेहतप्रभावा, सोऽपित्वयारतिपतिः क्षपितः क्षणेनः ॥ विध्या
ेपताहुतभुजः पयसाथयेन, पीतंनकिंतदपिदुर्द्धरवाडवेन
॥ ११ ॥ स्वामिणण तुल्य गरिमाणमपिप्रपन्ना, स्त्वांजं
तवः कथमहोहृदयेदधाना ः ॥ जन्मोदधिंलघुतरंत्यतिला-
घवेन, चिंत्योनहंतमहतांयदिवाप्रभाव ॥१२॥ क्रोधस्त्वया
यदिविभोप्रथमंनिरस्तो, ध्वस्तास्तदावतकथंकिलकर्म्मचौ-
राः ॥ प्लोषत्यमुत्रयदिवा शिशिरापिलोके, नीलद्रुमानि
विपिनानिनाकिंहिमानी ॥१३॥ त्वांयोगिनोजिनसदापर-
मात्मरूप, मन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मल
रुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्यसंभविपदंननुकर्णिकाया॥१४॥
ध्यानाजिनेशभवतोभविनःक्षणेन, देहंविहायपरमात्मदशां
व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलभावमुपास्यलोके, चामीकरत्व-
मचिरादिवधातुभेदा ः॥१५॥ अन्तसदैवजिनयस्यविभा
व्यसेत्वं, भव्यैकथंतदपिनाशयसेशरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथ
मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्विग्रहंप्रसमयंतिमहानुभावाः ॥१६॥
त्वामनीषिभिरयंत्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्रभवतीहः

भवत्प्रभावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किंना मनोविषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेववीततमसंपर वादिनोपि, नूनंविभोहरिहरादिधियाप्रपन्ना ॥ किंकाच कामलिभिरीशसितोपिशंखो, नोगृह्यतेविविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्म्मोपदेशसमयेसविधानुभावा, दास्तांजनो भवतिते तरुरप्यशोक ॥ अभ्युद्गते दिनपतौसमहीरुहोपि, किंवाविबोधमुपयातिनजीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक्पतत्यविरलासुरपुष्पवृष्टिः॥ त्वद्गोचरेसुमनसांयदिवामुनीश, गच्छंतिनूनमधएवहिबंधनानि ॥ २० ॥ स्थानेगभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतांतवगिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वायतः परमसंमदसंग भाजो, भव्याव्रजंतितरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमुत्पतन्तो, मन्येवदंतिसुचयःसुरचामरौघा,। यस्मैनतिंविदधतेमुनिपुंगवाय, तेनूनमूर्द्धगतयः खलुशुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामंगभीरगीरमुज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिहभव्यशिखंडिनस्त्वां ॥ आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसी वनवांबुवाहं ॥ २३ ॥ उद्गच्छतातवशितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्ब

भूव ॥ सानिध्यतोपियदिवातववीतराग, निरागतांव्रजति कोनसचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोप्रमादमवधूयभजध्वमेन मागत्यनिर्वृतिपुरींप्रतिसार्थवाहं ॥ एतन्निवेदयतिदेवजगत्त्रयाय, मन्येनदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषुभवताभुवनेषुनाथ, तारान्वितोविधुरयंविहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधाधृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेनप्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रतापयशसामिवसंचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेणभगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिननमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्यरत्नरचितानपिमौलिबंधान् ॥ पादौश्रयंतिभवतोयदिवापरत्र, त्वत्सङ्गमेसुमनसोनरमन्तएव ॥ २८ ॥ त्वंनाथजन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि,यत्तारयस्यसुमतोनिजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तंहिपार्थिवनिपस्यसतस्तवैव, चित्रंविभोयदसिकर्म विपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोपिजनपालकदुर्गतस्त्वं, किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिः त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपिसदैवकथंचदेव, ज्ञानंत्वयिस्फुरतिविश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसिरजांसिरोषा, दुत्थापितानिकमठेन शठेन

यानि ॥ छायापितैस्तवननाथहताहताशो, ग्रस्तस्त्वमीभि रयमेवपरंदुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जदूर्ज्जितघनौघमदभ्र-भीम, भ्रश्यत्तडिन्मुशलमांसलघोरधारं ॥ दैत्येनमुक्तमथ दुस्तरवारिदध्रे, तेनैवतस्यजिनदुस्तर वारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्द्धकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड, प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनि र्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोस्याभवत्प्र-तिभवंभवदुखहेतु ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएवभुवनाधिपयेत्रि-संध्य, माराधयंतिविधिवद्विधतान्यकृत्याः भक्त्युल्लसत्पु-लकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयंतवविभोभुविजन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौमुनीश, मन्येन मे श्रवणगोचरतांगतोसि ॥ आकर्णितेतुतवगोत्रपवित्रमंत्रे, किंवाविपद्विपधरीसविधंसमेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपि तव पादयुगंनदेव, मन्येमयामहितमीहितदानदक्षं ॥ तेनेहज-न्मनिमुनीशपराभवानां, जातोनिकेतनमहंमथिताशयानां ॥ ३६ ॥ नूनंनमोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वंविभोसकृदपि प्रविलोकितोसि ॥ मर्माविधोविधुरयंतिहिमामनर्थाः प्रोद्य त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोपिमहितो पिनिरीक्षितोपि, नूनंनचेतसिमया विधृतोसिभक्त्या ॥

जातोस्मितेनजनबांधवदुखपात्रं,यस्मात्क्रिया:प्रतिफलंति नमावशून्या: ॥ ३८ ॥ त्वंनाथदु:खिजनवत्सलहेशरण्य, कारुण्यपुण्यवसतेवशिनांवरेण्य ॥ भक्तयानतेमयिमहेश दयांविधाय, दु:खांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य, मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं ॥ त्वत्पादपंकजमपिप्रणिधानवंध्यो, वध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवंद्यविदिताखिलवस्तुसार, संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्वदेवकरुणाहृदिमांपुनीहि, सीदंतमद्यभयदव्यसनांबुराशे ॥ ४१॥ यद्यस्तिनाथभवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेःफलंकिमपिसंततिसंचितायाः ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्य शरण्यभूया:, स्वामित्वमेवभुवनेत्रभवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इत्थंसमाहितधियोविधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः त्वद्बिंबनिर्म्मलमुखांबुजबद्धलक्ष्या, येसंस्तवंतवविभोरचयंतिभव्याः ॥ ४२॥ जननयनकुमुदचंद्र, प्रभास्वरा:स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ तेविगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षंप्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

□□□

॥ अथ सेत्रुंजरास ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआनं-
द ॥ रासभणुं ॥ रलियामणो । सेत्रुंजनोसुखकंद ॥१॥
संवतच्यारसतोतरे । हुवाधनेसरसूरि । तिणसेत्रुंजमहात-
मकियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोस
या । सेत्रुंजैऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । से-
त्रुंजमहातमएम ॥ ३ ॥ सेत्रुंजतीरथसारिषो । नहीछैती-
रथकोय । स्वर्गमृत्युपातालमें । तीरथसगलाजोय ॥ ४ ॥
नामेनवनिधिसंपजे । दीठांदुरितपुलाय । भेटंतांभवभ-
यटलै । सेवंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैदीपए । दक्षि-
णभरमझार । सोरठदेसखुह्यामणो । तिहांछैतीरथसार ॥
॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढालपहिली । रामगिरी ॥ ❀ ॥

॥ सेत्रुंजोनेंश्रीपुंडरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक ।
विमलाचलनेकरुंपरणाम । एसेत्रुंजैनाइकवीसनांम ॥१॥
सुरगिरिनेंमहागिरिपुन्यगरा । श्रीपदपर्व्वतइंद्रप्रकास ।
महातीरथपूरवेसुखकाम । ए० ॥ २ ॥ सासतोपर्वतनेंदृ-
ढशक्ति । मुक्तिनिलोतिभक्तीजैभक्ति । पुष्फदंतमहाप-
दमगठाम । ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठसुभद्रकैलाश । पाता-

लमूलअकर्मकतास । सर्वकामकीजैगुणग्राम । ए० ॥४॥ श्रीसेत्रुंजैनाइकवीसनाम । जपैजवेठाअपणैठांम । सेत्रुंजजात्रानोफलकहै । महावीरभगवंतइमकहै ॥ ५ ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ सेत्रुंजोपहिलैअरै, असीजोयणपरमांण । पिहुलोमूलऊंचपण । छव्वीसजोयणजाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयणजाणवो । बीजैअरैविशाल । वीसजोयणऊंचोकह्यो । मुझवंदणात्रिकाल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजैअरै । पिहुलोतीरथराय । सोलजोयणऊंचोसही । ध्यानधरूंचितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयणपिहुलपण । चौथेअरैमझार । ऊंचोदसजोयणअचल । नितप्रणमैंनरनार ॥४॥ बारजोगणपंचमअरै । मूलतणैविसतार । दोजोयणऊंचो अछे । सेत्रुंजतीरथसार ॥ ५ ॥ सातहाथछठैअरै । पिहुलोतीरथजेह । ऊंचोहोस्यैसउधनुष । सासतोतीरथएह ॥ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जिनवरसुंमेरोमनलीणो ॥ ❀ ॥ केवलन्यानीप्रमुखतीर्थंकर । अनंतसीधाइणठामरे अनंतवलीसीझसैइणठामै । तिणकरूंनितपरणामरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजैसाधुअनंतासीधा । सीझसीवलीयअनंतेहैं [illegible]ण- सेत्रुंजतीरथनहीभेट्यो । तेगरभावासकहतरे ॥ [illegible] ॥

॥ २ ॥ फागुणसुदिआठमनेंदिवसै । रिषभदेवसुखकाररे।
रायणरूंखसमोसर्याखामी । पूर्वनिणाणूंवाररे । से० ॥
॥ ३ ॥ भरतपुत्रचैत्रीपूनमदिन । इणसेत्रुंजगिरिआयरे ।
पांचकोडिसूंपुंडरीकसीधा । तिणपुंडरीकककहायरे । से० ॥
॥ ४ ॥ नमिविनमिराजाविद्याधर । वेवेकोडिसंघातरे ।
फागुणसुदिदशमीदिनसीधा । तिणप्रणमुंपरभातरे । से० ।
॥ ५ ॥ चैत्रमासवदिचउदसनेदिन । नमिपुत्रीचौसठिरे ।
अणसणकरिसेत्रुंजगिरऊपर । एसहुसीधाएककठरे । से० ।
॥ ६ ॥ पोतराप्रथमतीर्थंकरकेरा । द्रावडनेवारिखिलरे ।
कातीसुदिपूनमदिनसीधा । दशकोडिसुंमुनिशिलरे । से० ।
॥ ७ ॥ पांचेपांडवइणगिरसीधा । नवनारदरिषिरायरे ।
संवभजूनगयाइहांमुगतै । आठेकरमखपायरे । से० ॥८॥
नेमिविनातेवीसतीर्थंकर समोसर्यागिरिशृंगरे । अजित-
शांतितीर्थंकरवेऊं । रह्याचोमासोरंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ स-
हस्साधुपरिवारसंघातै । थावच्चासुतशाधरे । पांचसैसाधु-
सुं[illegible]मुनिवर । सत्रुंजैसिवसुखलाधरे ॥ से० ॥ १० ॥
[illegible]मुनिसेत्रुंजेसीधा । भरतेसरनेंपाटरे । रामअनें
भर[illegible] । सीधामुक्तितणीएवाटरे ॥ से० ॥ ११ ॥ जा-

लिभयालीनेंउत्रयाली । प्रमुखसाधुनीकोडिरे । साधुअ-
नंतासेत्रुंजैसीधा, प्रणमुंवेकरजोडिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ * ॥
ढालचौपाईनी ॥ * ॥ सेत्रुंजैनाकहुंसोलउद्धार । तेखु-
णिज्योसहुकोखुविचार । सुणतांआनंदअंगनपाय । ज-
नमजनमनापातिकजाय ॥ ऋभत्रदेवअयोध्यापुरी । स-
मवसस्यासत्रालीहितकरी । भरतगयोवंदणनैकाजयेउपदे-
सदियोजिनराज ॥ २॥ जगमांहैमोटाअरिहंतदेव । चौ-
सठइंद्रकरेजसुसेव । तेहथीमोटोसंघकहाय । जेहनेंप्रणमें
जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमोटासंघवीकह्यो । भरतसुणीं-
नेंमनगहगह्यो । भरतकहैतेःकिमपामियै । प्रमुकहैसेत्रुंजै
जात्राकियै ॥४॥ भरतकहैसंघवीपदमुज्झ । थेआपोहुंअं-
गजतुज्झ । इंद्रैआण्याअक्षतवास । प्रमुआपैसंघवीपदता-
स ॥ ४ ॥ इंद्रैतिणवेलाततकाल । भरतसुभद्राविहंनैमा-
ल । पहिरावीघरसंप्रेडिया । सखरसोनानारथआपिया ॥
॥ ६॥ रिखभदेवनीप्रतिमावली । रतनतणीदीधी[illegible] ॥
भरतैगणधरवरतेडिया । सांतिकपोष्टिकस्तुतिह[illegible] ॥
कंकोत्रीमुंकीसहुदेस । भरततेडायासंघअसेस[illegible]
संघअयोध्यापुरी । प्रथमप्रथकीरथजात्राकरी । [illegible]

भगिनिकीधीअतिघणी । संघचलायोसेत्रुंजाभणीगणधर बाहुबलकेवली । मुनिवरकोडिसाथेलियावली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तिनीसगलीरिद्धि । भरतेंसाथेलीसिद्धि । हयगयरथ पायकपरवार । तेतो कहतांनावैपार ॥ १० ॥ भरतेमरसंघवीकहवाय । मारगचैत्यउधरतोजाय । संघआयोसेत्रुंजैपास । सहुनीपूगीमननीआस ॥ ११ ॥ नयणेनिरख्यो सेत्रुंजराय । मणिमाणकमोत्यांसुंवधाय । तिणठामेंरहीप होच्छवकियो । भरतेंआनंदपुरवासियो ॥ १२ ॥ संघसेत्रुंजाऊपरचढ्यो । फरसंतापातिकझडपड्यो । केवलन्यानीपगलातिहांप्रणम्यारायणरूंखछैजिहां ॥ १३ ॥ केवलन्यानीसनात्रनिमित्त । ईशानेंद्रआणीसुपवित्त । नदीसेत्रुंजैसोहामणी । भरतेंदीठीकौतुकभणी ॥ १४ ॥ गणधर देवतणेउपदेस । इंद्रेवलिदीधोआदेस । श्रीआदिनाथतणोदेहरो । भरतकरायोगिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानोप्रासादउत्तुंग । रतनतणीप्रतिमासनरंग । भरतेंश्रीआदीसरतणी प्रतिमाथापीसोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानीप्रतिमाभली । माहीपूनिमथापीरली । ब्राह्मीसुंदरीप्रमुखमा[illegible] । भरतैथाप्यानवलैनाद ॥ १८ ॥ इमअनेकप्रति-

माप्रासाद । भरतकरायागुरुप्रसाद । भरततणोपहिलो उद्धार । सगलोहीजाणैसंसार ॥ १९ ॥ ढालसिंधूडोआ- साउरी ॥ * ॥ भरततणेपाटैआठमेदंडवीरजथयोरायोजी । भरततणीपरिसंघकीयो । सेत्रुंजसंघवीकहायोजी ॥ १ ॥ सेत्रुंजैउद्धारसांभलो । सोलमोटाश्रीकारोजी । असंख्यात वीजावलि । तेहनकहुंअधिकारोजी । से० ॥ २ ॥ चैत्य- करायोरूपातणो । सोनानोबिंबसारोजी । मूलगोबिंबभं- डारीयो । पच्छिमदिशतिणवारोजी । से० ॥ ३ ॥ सेत्रुं- जै जात्राकरीसफलकियोअवतारोजी । दंडवीरजराजा- तणो । एवीजोउद्धारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सोसागरोपम- अतिक्रम्यादंडवीरजथीजिवारोजी । ईशानेंद्रकरावीयो । एतीजोउद्धारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथादेवलोकनोधणी । माहेंद्रनामउदारोजी । तिणसेत्रुंजैनोकरावीयो । ए चोथो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमादेवलोकनोधणी । ब्र ह्मेंद्रसमकितधारोजी । तिणसेत्रुंजैनोकरावीयो । पांच मोउद्धारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपतीइंद्रनोकीयो ॥ छठोउद्धारोजी । चक्रवर्तिसगरतणोकीयो । [illegible] द्धारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदनपासैसुण्यो [illegible]

नोअधिकारोजी । व्यंतरइंद्रलरावीयोएआठमोउद्धारोजी ॥ ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभुस्वामिनोपोतरो । चंद्रशेषरनाम मल्हारोजी । चंद्रजसरायकरावीयो । एनवमोउद्धारोजी । से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनीसुणीदेशना । शांतिनाथसुत सुविचारोजी । चक्रधररायकरावीयो । एदशमोउद्धारोजी ॥ से० ॥ ११ ॥ दशरथसुतजगदीपतो । मुनिसुव्रतस्वामीवारोजीश्रीरामचंद्रकरावीयो । एइग्यारमोउद्धारोजी ॥ से० ॥१२॥ पांडवकहैअम्हेपापीयाकिमछूटांमोरीमायोजी । कहैकुंतीसेत्रुंजतणी । यात्राकीयांपापजायोजी ॥ से० ॥ ॥ १३ ॥ पांचेपांडवसंघकरी । सेत्रुंजभेटयोअपारोजी । काष्टचैत्यबिंबलेपना । एबारमोउद्धारोजी ॥ से० ॥१४॥ मम्माणीपाषाणनी । प्रतिमासुंदररूपोजी । श्रीसेत्रुंजैना संघकरी । थापीसकलसरूपोजी से० ॥ १५ ॥ अठोत्तर सोवरसांगयां । विक्रमनृपथीजिवारोजी । पोरवाडजावड करावीयो । एतेरमोउद्धारोजी । से० ॥ १६ ॥ संवतबार तिहोत्तरे । श्रीमालीसुविचारोजी । वाहडदेमुहतैकरावीयो एचवदमोउद्धारोजी ॥ से० ॥१७॥ संवततेरइकोत्तरे ओसवालदेसलहरअधिकारोजी । समरेसाहकरावीयो । ए

पनरसेोलउद्धारोजी। से० ॥ १८ ॥ संवतपनरसत्यासीयै। वैशाखवदिसुभवारोजी । करमेंडोसाकरावीयो। एसोलमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रतिकालैसोलमो । एवरते छैउद्धारोजी । नितनितकीजैवंदना । पामीजैभवपारोजी ॥ से० ॥ २० ॥ दूहा । वलिसेत्रुंजमहातमकहुं । सांभलोजिमछैतेम । सूरिधनेसरइमकहै । महावीरकह्याएम ॥ ॥ १ ॥ जेहवोतेहवोदरसणी । सेत्रुंजैपुजनीक । भगवंतनो वेसवांदतां । लाभहुवैतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजाउपरै । चैत्यकरावैजेह । दलपरमाणसमोलहै । पल्योपसुखदेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंजऊपरदेहरो । नवोनीपावैकोय । जीर्णोद्धारकरावतां । आठगुणोफलहोइ ॥ ४ ॥ सिरऊपरि गागरधरी । स्नात्रकरावैनारि । चक्रवर्तिनीस्त्रीथई । सिवसुखपामैसार ॥ ५ ॥ कातीपूनिमसेत्रुंजे । चढिनैकरैउपवास । नारकीसौसायरसमो । करैकरमनोनास ॥ ६ ॥ कातीपरवमोटोकह्यो । जिहांसीधदशकोडि । ब्रह्मस्त्रीबाल कहत्या । पापथीनासैछोड ॥ ७ ॥ सहस्सलाखश्रावकतणी। भोजनपुन्यविशेष । सेत्रुंजसाधुपडिलाभतां । अ[illegible] हथीदेख ॥ ८ * ॥ ढाल ॥ ५ ॥ * ॥ धन २ [illegible]

सुकुमालनैंएहनी ॥ * ॥ सेत्रुंजैगयांपापछूटीयै । लीजें
आलोयणएमोजी । तपजपकीजैतिहांरही । तीर्थंकरक
ह्योतेमोजी ॥१॥ से०। जिणसोनानीचोरीकरी। एआ
लोयणतासोजी । चैत्रीदिनसेत्रुंजचढी । एककरैउपवास
जी ॥ २॥ से०॥वस्तुतणीचोरीकरी । सातआंबिलसुध
थायोजी । कातीसातादिनतपकीयां । रतनहरणपापजा
योजी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसीपीतलतांबारजतनी । चोरि
कीधीजेणो । जी सातादिवसपुरमढकरै । तोछूटैगिरिग
णोजी॥ ४ ॥ से० । मोतीप्रवालमूंगीया । जिण
चोरयानरनारोजी । आंबिलकरिपूजाकरे । त्रिणटं
कसुद्धआचारोजी ॥ ५ ॥ से०॥ धानपाणीरसचोरीया
जेभेटैसिद्धक्षेत्रोजी ।सेत्रुंजतलहटीसाधुनैं । पडिलाभेसु
चित्तोजी ॥ ६ ॥ से० । वस्त्राभरणजिणेंहरया । तेछू
इणमेलोजी । आदिनाथनीपूजाकरे। प्रहऊठीवहुवेलोजी
॥७ ॥ से० ॥ देवगुरुनोधनजेहरे । तैसुद्धथायेएमोजी
[illegible]चकादव्यस्वरचेतिहां । पात्रपोपैबहुप्रेमोजी ॥ ८॥से०।
[illegible]त्रभैमघोडामही । गजनोचोरणहारोजी । छेतेवस्तुती
[illegible]। अरिहंतध्यानप्रकारोजी ॥ ९ ॥ से० ॥ पुस्तकदे

हरापारका । तिहांलिखैआपणोनामोजी । छूटैछम्मासी-
तपकीयां । सामायकतिणठामोजी ॥ १० ॥ से० ॥ कुं-
वारीपरिव्राजका,सघवअधवगुरुनारोजी । व्रतभांजैतिणनें
कह्यो । छम्मासीतपसारोजी ॥ ११ ॥ से० ॥ गोविप्रस्त्री।
बालकरिषी । एहनोघातकजेहोजी । प्रतिमाआगैआ-
लोवतां । छूटैतपकरितेहोजी ॥ १२ ॥ से० ॥ * ॥ ढाल
६ कुंमरभलैआवीयोए ॥ एहनी ॥ *॥संप्रतिकालैसोलमोए
एवरतैछैउद्धार।सेत्रुंजयात्राकरुंएसफलकरुंअवतार॥से०॥
छहरीपालतांचालियैए।सेत्रुंजकेरीवाट॥ से० ॥ पालीता-
णंपहुचीयैए । संघमिल्याबहुथाट ॥ २ ॥ से०॥ ललित-
सरोवरपेखीयैए । वांलिसत्तानीवाव । से०॥ तिहांविसरा-
मोलीजियेए । वडनैचौतरै आवि ॥ ३॥ से० ॥ पाली-
ताणेंपाजडीए । चढीयेउठिप्रभात ॥ से० ॥ सेत्रुंजनदी-
यसोहामणीए।दूरथकीदेखंत ॥ ४ ॥ से०॥ चढियैहिंगु-
लाजनेंहडेए । कलिकुंडनमीयैपास । से० ॥ बारांभा-
रैसीयैए । आणीअंगउल्लास ॥ ५ ॥ से० । मरुदेवी
रनोहरूए । गजचढीमरुदेवीमाय ॥ से० ॥ शांति
जनसोलमोए । प्रणमीजैतसुपाय ॥ से० ॥ ६ ॥

पोरवाडैपरगडोए । सोमजीसाहामल्हार । से० । रूपजी
संघवीकरावीयोए । चौमुखमूलउद्धार से०॥७॥ चोमुख
प्रतिमाचरचीयैए । भमतीमांहिमलाबिंव । पांचेपांडवपू-
जियैए । अदभुतआदिप्रलंब ॥ ९ ॥ खरतरवसहीखां
तिसुंए । बिंवजुहारुंअनेक॥ से० ॥नेमिनाथचवरीनमुंए
। टालूंअलगउद्वेग ॥ से० ॥ ९ ॥धरमदुवारमांहेनीसरुंए
कुगतिकरुंअतिदूर॥ से० ॥ आवुंआदिनाथदेहरैए ।कर-
मकरुंचकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायकआणसुंमुदाए।
आदिनाथभगवंत ॥ से० देवजुहारुंदेहरैए । भमतीमां-
हिमंत ॥ से० ॥११ ॥ सेत्रुंजेऊपरिकीजीयैए । पांचे-
ठामसनात्र । से० । कलशआठोत्तरसोकरुंए । निरमल
नीरसुगात्र ॥ स० ॥ प्रथमआदीसरआगलेए । पुंडरीक
गणधार ॥ से० ॥रायणतलपगलानमुंए । शांतिनाथसु-
खकार ॥से०॥ १३ ॥ रायणतलपगलानमुंए । चौमुखप्र
तिमाच्यार ॥ से० ॥ बीजीभूमिविचावलीए। पुंडरीकग-
णधार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरजकुंडनिहालीयैए । अतिभ-
लिभ्रलकाल्लोल ॥से०॥ चेलणातलाईसिद्धासिलाए ।अं-
णु रसुंउल्लोल ॥ से० ॥ १५ ॥ आदिपुरपाजेऊतरुंए ॥

सामीसंपत्तो, चउविहदेवनिकायहिंजुत्तो ॥ ८ ॥ देवहिसम वसरणतिहांकीजें, जिणदीठेंमिथ्यामतछीजे ॥ त्रिभुवनगु रुसिंहासनबेठा, ततखिणमोहादिगंतपइठा ॥ ९ ॥ क्रोधमान मायामदपूरा, जायेनाठाजिमदिनचोरा ॥ देवदुंदुभिआ गासेवाजी, धरमनरेसरआव्योगाजी ॥ १० कुसुमवृष्टिविर चेतिहांदेवा, चउसठइंद्रजमांगेसेवा ॥ चामरछत्रसिरोवरिसो हे, रूपहिजिनवरजगसहुमोहे ॥ ११ ॥ उपसमरसभरवरव रसंता, जोजनवाणिवखाणकरंता ॥ जाणविवर्द्धमानजिण पाया, सुरनरकिन्नरआवइराया ॥ १२ ॥ कंतसमोहियजलह लकंता, गयणविमाणहिरणरणकंता ॥ पेखविइंदभूइमनचिं ते, सुरआवेअमजज्ञहुवंते ॥ १३ ॥ तीरततरंडकजिमतेवहिता, समवसरणपुहताहगहगहिता ॥ तोअभिमानेंगोयमजंपे, इण अवसरकोपेंतणुकंपे ॥ १४ ॥ मूढालोकअजाण्युंबोले, सुर जाणंताइमकांइडोले ॥ मोआगलकोइजाणभणीजें, मेरुअ वरकिमउपमदीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीरजिणवरनांणलिण वरनाणसंपन्न, पावापुरसुरमहियपत्तनाहसंसारतारण ॥ ति हिंदेवइनिम्महिय, समवसरणबहुसुक्खकारण ॥ जिणवरज गउज्जोयकरे, तेजहिकरदिनकारसिंहासणसामीठव्यो, हुओ

तोजयजयकार॥१६॥ भास॥ तोचढिंयोघणमाणगजे,ईद भूयभूयदेवतो॥ हुंकारोकरसंचरिय,कवणसुजिणवरदेवतो ॥ जोजनभूमिसमोसरण,पेखविप्रथमारंभतो ॥ दहदिस देखेविबुधवधू,आवंतीसुररंभतो ॥ १७ ॥ मणिमयतोरण दंडध्वज,कोसीसेनवघाटतो॥ वयरविवर्जितजंतुगण,प्राती हारिजआठतो ॥ सुरनरकिन्नरअसुरवर,इंद्रइंद्राणीरायतो ॥ चित्तचमकियचिंतवए, सेवंताप्रभुपायतो ॥ १८ ॥ सहस किरणसामीवीरजिण,पेखिअरूपविसालतो ॥ एहअसंभव संभवए,साचोएइंद्रजालतो॥ तोबोलावइत्रिजगगुरु,इंद्रभू इनामेण॥तो श्रीमुखसंसासामिसवे,फेडेवेदपएणतो॥१९॥ मानमेलमदठेलकरे,भगतहिंनाम्योसीसतो ॥ पंचसयांसूं व्रतालियाए,गोयमपहिलोसीसतो॥ बंधवसंजमसुणविकरे, अगनिभूइआवेयतो ॥ नामलेईआभासकरे,तेपणप्रतिबो धेयतो ॥ २० ॥ इणअनुक्रमगणहररयण,थाप्यावीरइग्या रतो॥ तोउपदेसेभुवनगुरु,संयमशुंव्रतबारतो॥ बिहुंउपवासें पारणोए.आपणपेविरंततो ॥ गोयमसंयमजगसयल,जय जयकारकरंततो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइइंद्रभूइचढियो बहुमान.हुंकारोकरिकंपतो,समवसरणपहुतोतुरंतो ॥ जेसं

सासामिसवे,चरमनाहफेडेफुरंततो ॥ चोवबीजसंज्जाषमनें, गोयमभवहिविरत्त ॥ दिक्खलईसिक्खासही,गणहरपयसंप त्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आजहुओसुविहाण,आजपचेलिमां पुण्यभरो ॥ दीठगोयमसामि,जोनियनयणेअमियझरो ॥ समवसरणमझार,जेजेसंसाऊपजेए ॥ तेतेपरउपगार,कार णपूछेमुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहांदीजेदीख,तांहांकेवलउप जेए ॥ आपकनेंअणहुंत,गोयमदीजेंदानइम ॥ गुरुउपर गुरुभक्ति,सामीगोयमऊपनिय ॥ अणचलकेवलनाण,राग जराखेरंगभरे ॥ २४ ॥ जोअष्टापदसेल,वंदेचढचउवीस जिण ॥ आतमलब्धिवसेण, चरमसरीरीसोजमुनि ॥इय देसणानिसुणेह,गोयमगणहरसंचरिय ॥ तापसपनरसएण, जोमुनिदीठोआवतोए ॥ २५ तपसोसियनियअंग,अह्मांसु गतिनऊपजेए ॥ किमचढसेदृढकाय,गजजिमदिसेगाज तोए ॥ गिरुओएअभिमान,तापसजोमनचिंतवेए ॥ तोमु निचढियोवेग,आलंबविदिनकराकिरण ॥ २६ ॥ कंचणम णिनिप्पन्न,दंडकलसध्वजवडसहिय ॥ पेखविपरमाणंद, जिणहरभरतेसरमहिय ॥ नियनियकायप्रमाण,चिहुंदिसि संठियजिणहबिंब ॥ पणमविमनउल्लास,गोयमगणहरतिहां

वसिय ॥ २७ ॥ वयरसामीनोजीव,तिर्यकजंभकदेवति
हां ॥ प्रतिबोध्यापुंडरीक,कंडरिअध्ययनभणी ॥ वलता
गोयमसामि,सवितापसप्रतिबोधकरे ॥ लेइआपणसाथ,चा
लेजिमजूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीरखांडघृतआण.अमीय
वठअंगूठठवे ॥ गोयमएकणपात्र,करावेपारणुंसवे ॥ पंच
सयांशुभभाव,उज्जलभरियोखीरमिसे ॥ सचागुरुसंयोग,
कवलतकेवलरूपहुआ ॥ २९ ॥ पंचसयांजिणनाह,समव
सरणप्राकारत्रय ॥ पेखविकेवलनाण, उप्पन्नोउज्जोयकरे
॥ जाणेजणविपीयूप,गाजंतीधनमेघजिम ॥ जिनवाणी
निसुणेवि,नाणीहुयापंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इणअनु
क्रमइणअनुक्रमनाणपन्नेरसें,उपन्नपरिवरिय,हरिदुरियजिण
नाहवंदइ,जाणेवीजगगुरुवयण, तिहिंनाणअप्पाणनिंदइ,
चरमजिनेसरइमभणे, गोयमकरिसखेव, छेहजाइआपण
सही,होस्यांतुलावेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामिओएवीरजि
णंद,पुनमचंदजिमउल्लसिय ॥ विहरिओएभरहवासंमि,व-
रसबहुत्तरसंवसिय ॥ ठवतोएकणयपउमेण,पायकमलसंघे
सहिय ॥ आवियोएनयणाणंद,नयरपावापुरसुरमहिय
॥ ३२ ॥ पेखियोएगोयमसामि,देवसमाप्रतिबोधकरे ॥

आपणोएतिसलादेवि,नंदनपुहतोपरमपए ॥ वलतोएदेव आकाश,पेखविजाण्योजिणसमेए ॥ तोमुनिएमनविखवाद,नादभेदजिमऊपनोए॥ ३३ ॥ इणसमेएसामियदेखि, आपकनासूंटालियोए ॥ जाणतोएतिहुअणनाह,लोकविवहारनपालियोए ॥ अतिभलोएकीधलोसामि,जाण्योकेवलमागसेए ॥ चिंतव्योएबालकजेम,अहवाकेडेंलागसेए ॥ ३४ ॥ हुंकिमएवीरजिणंद,भगताहिंभोलेंभोलव्योए ॥ आपणोएउंचलोनेह,नाहनसंपेसाचव्योए ॥ साचोएएवीतराग,नेहनहेंजेंलालियोए ॥ तिणसमेएगोयमचित्त,राग वैरागेंवालियोए॥ ३५ ॥ आवतोएजोउलट्ट,रहितोरागेंसाहियोए ॥ केवलएनाणउप्पन्न,गोयमसहिजउमाहियोए॥ तिहुअणएजयजयकार,केवलमहिमासुरकरेए ॥ गणधरुए करयबखाण,भवियाभवजिमनिस्तरेए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढमगणहरपढमगणहरवरसपच्चास,गिहवासेंसंवसियतीसवरससंजमविभूसिय॥ सिरिकेवलनाणपुणबारवरसातिहुअणनमंसिय,राजगृहीनयरीठव्यो,बाणवइवरसाउ ॥ सामी गोयमगुणनिलो,होसेसिवपुरठाउ ॥ ३७ ॥ भास॥ जिम सहकारेंकोयलटहुके ॥ जिमकुसमावनपरिमलमहके,जि-

मचंदनसोगंधनिधि ॥ जिमगंगाजललहिरांलहके,जिम कणयाचलतेजेंझलके,तिमगोयमसोभागनिधि ॥ ३८॥जि ममानसरोवरनिवसेहंसा, जिमसुरतरुवरकणयवतंसा, जि- ममहुयररराजीववनें ॥ जिमरयणायररयणेंविलसे,जिमअंब- रतारागणविकसे,तिमगोयमगुरुकेलघने ॥ ३९ ॥ पूनम- निसिजिमससियरसोहे, सुरतरुमहिमाजिमजगमांहे, पूरव दिसिजिमसहसकरो ॥ पंचाननाजिमगिरिवरराजे, नरवइ घरजिममेगलगाजे,तिमजिनशासनमुनिपवरो ॥४०॥जि- मगुरुतरुवरसोहेसाखा,जिनउत्तमसुखमधुरीभाषा, जिमवन केतकिमहमहए ॥ जिमभूमीपतिभुयवलचमके, जिमजि- नमंदिरघंटारणके,गोयमलवधंगहगह्योए ॥ ४१ ॥ चिंता- मणिकरचढीयोआज, सुरतरुसारेवंछियकाज, कामकुंभसहु वशिहुआए ॥ कामगवीपूरेमनकामी,अष्टमहासिद्धिआवे धामी,सामीगोयमअणुसरीए ॥ ४२ ॥ पणवक्खरपीहलो पभणीजें,मायावीजोश्रवणसुणीजें ॥ श्रीमितिसोभासंभ- वोए ॥ देवांधुरअरिहंतनमीजें, विनयपहुउवझ्झायथुणीजें इणमंत्रेगोयमनमोए ॥ ४३ ॥ परघरवसतांकांयकरीजें, देसदेसांतरकांयभमीजें,कवणकाजआयासकरो ॥ प्रहऊठी

गोयमसमरीजें, काजसमग्गलततखिणसीझे, नवनिधिवि लसेतिहांघरेए॥ ४४ ॥ चवदयसयबारोत्तरवरसें, गोयमग- णहरकेवलदिवसें, कीयोकवितउपगारपरो ॥ आदहिंमं- गलएपभणीजें, परवमहोच्छवपहिलोदीजें, रिद्धिवृद्धिक- ल्याणकरो॥ ४५॥ धन्नमाताजिणउयरेंधरियो, धन्यपिता जिणकुलअवतरियो, धन्यसुगुरुजिणदीखियोए॥ विन- यवंतविद्याभंडार, तसुगुणपुहवीनलब्भइपार, वडजिम साखाविस्तरोए ॥ गोयमस्वामीनोरासभणीजें, चउविह संघरलियायतकीजें, रिद्धिवृद्धिकल्याणकरो ॥ ४६॥ कुं- कुमचंदनछडोदिवरावो, मागकमोतीनाचोकपूरावो, रयण सिंहासणबेसणोए॥ तिहांवैठेगुरुदेशनादेसी, भविकजी- वनांकाजसरेसी, नितनितमंगलउदयकरो॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतमस्वामीनोरासससंपूर्ण ॥

॥ रागप्रभातीजेकर, प्रहऊगमतेसूर ॥ भूख्यां भोजनसंपजे, कुरलाकरेकपूर ॥ १ ॥ अंगूठेअमृतवसे, लब्धितणाभंडार ॥ जेगुरुगोतमसमरियें, मनवंछितफल दातार॥ २॥ पुंडरीकगोयमपमुहा, गणधरगुणसंपन्ना॥ प्रह ऊठीनेंप्रणमतां, चवदेसेबावन्न ॥ ३॥ खंतिखमगुणकलि-

यं, सुविणियंसव्वलद्धिसंपण्णं॥ वीरस्सपढमसीसं, गोयम सामीनमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथस्वकुलप्रकाशलिख्यते ॥

॥ सुगुरुमेरेखरतरपतिजिनराया ॥ जाकेपाटपरंपर दीपाया ॥ सु० ॥ एक ॥ शासनपतिमहावीरकेपाटें, सुधर्मास्वामीकहाया ॥ जंबूसेंइग्यारमेपाटें, आर्यसुस्थित सुहाया ॥ सु० ॥ १ ॥ जिननेकोटिसूरिमंत्रजपकर, कोटिकगच्छपदपाया ॥ वीरकेसोलमेवज्रस्वामी. वज्रसाखाकहाया ॥ सु० ॥ २ ॥ वज्रसेनकेपाटेंचंद्रसुरि, चंद्रकुलवरताया ॥ ऐसेपाटपरंपरअडत्रिस, उद्योतन सूरिकहाया ॥ सु० ॥ ३॥ चैत्यवासिजिनचंद्रआचार्जि छोडवर्द्धमानआया। उद्योतनकेपाटेंवर्द्धमान, गच्छचोरासीकहाया ॥ सु० ॥ ४ ॥ वर्द्धमानसूरिधरणीद्रमेंजकें, सूरिमंत्रशुद्धकराया ॥ इनकेपाटेंजिनेश्वरसूरि, कुमती जनगभराया ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकसहस्रअरएंशीवरषे, चैत्यवासींकुंहराया॥ अनहलपाटनदुर्लभराजा, खरतरवि

रुदधराया ॥ सु० ॥ ६॥ तासुपाटेंजिनचंदसूरीसर, अभ
यदेवसूरिराया ॥ जयतिहुणअरुनवांगवृत्ति, ग्रंथकावतारी
कहाया ॥ सु० ॥ ७ ॥ वल्लभसूरिकेपाटदत्तसूरि, मृतक
गउऊठाया ॥ वज्रथंभविदारिविद्यानिकाली, मुंगलपुतकुं
जीवाया ॥ सु० ॥ ८ ॥ अंबडाचिंतेंमतलबेबुंजद, अंबि-
बतलाया ॥ युगप्रधानजिनदत्तसूरीश्वर, सुरनररहेजोड-
राया ॥ सु० ॥ ९ ॥ मरकीनिवारीपंचनदीसाधी, झिहा
जकूंतराया ॥ सवालाखश्रावकप्रतिबोधे, देवलोकसुख
पाया ॥ सु० ॥ १० ॥ मणिधरश्रीजिनचंद्रसूरीश्वर, जि
नपतिजिनेश्वरराया ॥ जिनप्रबोधजिनचंद्रसूरीश्वर, नर-
वररहेलोभाया ॥ सु० ॥ ११ ॥ कलिकालमेंकेवलिविरुद
अनेकवादीकूंहराया ॥ चारराजाकुंप्रतिबोधदेके, राज-
गच्छकहाया ॥ सु० ॥ १२ ॥ इनकेपाटजिनकुशलसूरि-
श्वर, दादोकरओलखाया ॥ पूनमसोमवारेंजेपूजे, वंछित
होयसवाया ॥ सु० ॥ १३ ॥ बालपनेमेंपद्मसुरिजी, पा-
ग्ननपासमेंआया ॥ नदीकिनारेसरस्वतीदेवी, गुरुकुंआन
बोलाया ॥ सु० ॥ १४ ॥ सरस्वतीकंठाभरणएपदवी,
खरतरपतिनेपाया ॥ जिनलब्धिजिनचंद्राजिनोदय, जिन

राजसूरिकहाया ॥ सु० ॥१५॥ जिनभद्रजि रचंदसमुद्र हंसगुरीसरराया ॥ माणिक्यसुरिकेपाटविराजें, चंद्रसुरि सुहाया ॥ सु० ॥ १६ ॥ करमचंदनेनिजगुरुमहिमा, अकबरकुंदरसाया ॥ जीवदयापरमानाकराया, युगप्रधानपदपाया ॥ सु० ॥ १७ ॥ गुरुनिजपाटेंसिंहसुरिकुं, स्वहस्तेंवैठाया ॥ सवाकरोडसेंपाटउच्छवकर, करमचंद जसपाया ॥ सु० ॥ १८ ॥ जिनराजजिनरत्नसुरिजी, जिनचंद्रज्योतिसवाया ॥ जिनसौख्यसुरिसागरविच, पोतनवीनबनाया ॥ सु० ॥ १९ ॥ जिनभक्तिजिनलाभ सुरीश्वर, जिनचंद्रनामधराया, श्रीहर्षसुरिकेपाटसौभाग्य, सुरिराजकहाया ॥ सु० ॥ २० ॥ हंसगुरिजिनचंद्रसुरि एम, पाटतिहोत्तरआया ॥ वीरसेंलेकेंवर्तमानतक, निजगुरुनामबनाया ॥ सु० ॥ २१ ॥ श्रीजिनहर्षसुरीश्वरके निज, द्वितीयशिष्यकहाया ॥ हंशविलासशुभद्दितगणिके, लघुशिष्यकहाया ॥ सु० ॥ २२ ॥ बृहत्खरतरमें आज्ञाकारी, विक्रमपुरगुरुराया ॥ कल्यानानिधानपाठक पदशोभित, जिनआज्ञामनलाया ॥ सु० ॥२३ ॥ पांडव वेदअष्टनंदचंदमें, १९४५ माद्रमाससुहाया ॥ वसंतपंच-

मीमंगलवारें, सहुनरमनउलसाया ॥सु०॥ २४॥कुंकनदेशैं सागरकिनारें, पुरमुंबाईसुहाया ॥ श्रीचिंतामणिपार्श्वप्रसादें, शुभगुरुकागुणगाया ॥ सु० ॥ २५ ॥ प्रहऊठी गुरुठाभजेसमरे, तनमनवेनलगाया ॥ गोपालचंदकहेगुरु मेरे, आनंदहोतसवाया ॥ सु० ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ अथसुतकविचारलिख्यते ॥

॥ पुत्रजन्महोनेसेंदिन १० दससुतक ॥ पुत्रीजन्म होनेसेंदिन १२ बारसुतक ॥ ओरजोस्त्रीकेपुत्रहोय, उस स्त्रीकेएकमासकोसुतक ॥ पुत्रहोतमरणपामे, तोदिन १ एकसुतक ॥ परदेशेंमृत्युहोयतोदिन १ एकसुतक ॥ गाय, भेंप, घोडी, सांढघरमांहेवियावे, तोदिन १ एकसुतक ॥ मरणहूवांकलेवरघरबाहिरलइजाय, जहांतकसुतक ॥ दासदासीअपनीनेष्टायेंरहतपुत्रपोत्रादिककाजन्ममरणहो, तोदिन ३ तीनसुतक ॥ ओरजित्तनामहिनाको गर्भगिरे, तितनेदिनसुतक ॥ अबजिनकेजन्ममरणका सुतकहोवेये १२ बारादिनदेवपूजानकरे. ओरमृतककेसुतकमेंघरके जोमूलकांधियाहोवेसो १० दिनदेवपूजानकरे॥ ओरअन्य घरका ३ तीनदिनदेवपूजानकरे. ओरजोमृतक-

कोछूवाहोवे, सो २४ चोवीसप्रहरपडिकमणनकरे ॥ जोसदाकाअखंडनियमहोवे, तोसमताभावरखकेंसंवरपणामेंरहे. परंतुमुखसेंनवकारमंत्रकाभीउच्चारणकरेनहिंस्थापनाजीकेहाथलगावेनहिं. ओरजोमृतककोछुवानहोतोमात्र आठप्रहरपडिकमणनकरे ॥

भेंसकेजबबच्चाहोय, जब १५ पंदरदिनपीछेंदूधपीणोकल्पे. गायकेबच्चाहोयतो १७ सतरेदिनपीछेंदूधपीणो कल्पे. बकरीकोदूध ८ आठदिनपीछेपीणोकल्पे ॥

१ ऋतुवतीस्त्री, चारदिनगांडादिककोनछुवे. २ चारदिनप्रतिक्रमणनकरे, ३ पांचदिनदेवपूजानकरे, ४ रोगादिककारणेंतिनादिवसउपरांतकोइस्त्रीकोंरक्तचलतादीसे, जिसकाविशेषदोषनहि ॥ शुद्धविवेकसेंपवित्रहोकरदिन ५ पांचपीछेंस्थापनापुस्तकछुवे, जिनदर्शनकरे, अग्रपूजाकरे, परंतुअंगपूजानकरे, साधुकोंपडिलाभे. ऋतुवंतीतपस्याकरे, सोतोसफलहोय. परंतु ऋतुदिनमेंजिनपूजाप्रतिक्रमणादिकक्रियासफलनहोवे, एसाचर्चग्रंथमेंकहाहे. जिनकेघरमेंजन्ममरणकासुतकहोवे उहां १२ बारदिननकसाधुआहारपाणीनवहोरे. मृतकवा-

लेकाघरकाजलसेंतथाअग्निसें १२ बारादिनतकदेवपूजा नकरे. निशीथसुत्रकेशोलमाउद्देशामेंजन्ममरणकेसुतक वालेकाघरदुर्गच्छनिककहाहे.

गायकेमूत्रमें २४ चोवीसप्रहरपीछें, भैंषकेमूत्रमें १६ सोलप्रहरपीछें, गाउर,गधेडी, घोडीकेमूत्रमें ८ आठप्रहर पीछें, नरनारीकेमूत्रमेंचारप्रहरपीछें, संमूर्च्छिमजीवउप-जे. इत्यादिसुतककासंक्षेपविचारइहांलिखाहे. विशेषवि-चारशास्त्रांतरसेजानना ॥ इतिसुतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अथश्रीश्रावककीनित्यकरणीनीसज्झाय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावकतुंऊठेपरभात, चारघडीलेपीछ-लीरात ॥ मनमांसमरेश्रीनवकार, जेमपामेभवसायरपार ॥ १ ॥ कवणदेवकवणगुरुधर्म, कवणअमारुंछेकुलकर्म, कवणअमारोछेव्यवसाय, एवुंचिंतवजेमनमांय ॥ २ ॥ सामायिकलेजेमनशुद्ध, धर्मनीहैडेधरजेबुद्ध ॥ पडिकम-णुंकरेरयणीतणुं, पातकआलोईआपणुं ॥ ३ ॥ काया-शक्तेंकरेपच्चख्खाण, सुधिपालेजिननीआण ॥ भणजेगण जेस्तवनसज्झाय, जिणहूंतीनिस्तारोथाय ॥ ४ ॥ चिता-रेनित्यचउदेनीम, पालेदयाजीवतांसीम ॥ देहरेजाइजुहारे

देव, द्रव्यभावथीकरजेसेव ॥ ५ ॥ पोपालें गुरुवंदनजाय, सुणोवखाणसदाचित्तलाय ॥ निर्दुपणसुजंतोआहार, सासाधुनेदेजेसुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मिवत्सलकरजेघणां, सगपणमहोटासाहम्मीतणां ॥ दुःखीयाहीणादीननेंदेख, करजेतासदयासुविशेप ॥ ७ ॥ घरअनुसारेंदेजेदान, महोटाशुंमकरेअभिमानगुरुनेमुखेलेंतेआखडी, धर्मनमूकीशएकेघडी ॥ ८ ॥ वारशुद्धकरेव्यापार, ओछाअधिकानोपरिहार ॥ मभरिशकेनांकूडीसाख, कूडाजनशुंकथनमभांख ॥ ९ ॥ अनंतकायकहीयेवत्रीश, अभक्ष्यवाविशेविश्वावीश ॥ तेभक्षणनविकीजेंकिमे, काचांकवलाफलमताजिमे ॥ १० ॥ रात्रिभोजननावहुदोप, जाणीनेकरजेसंतोप ॥ साजीसावूलोहनेगुली, मधुधावडीमतवेचोवली ॥ ११ ॥ वलीमकरावेरंगणपास, दूपणघणांकह्यांछेतास ॥ पाणीगलजेबेवार, अणगलपीतांदोपअपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनांकरजेयत्न, पातकछंडीकरजेपुण्य ॥ छाणांइंधणचूलोजोय, वावरजेजिमपापनहोय ॥ १३ ॥ घृतनीपरेवावरजेनीर, अणगलनीरसधोइशचीर ॥ वारेंव्रतसुधुंपालजे, अतिचारसघलाटालजे ॥ १४ ॥ कह्यां

पन्नरेकर्मादान, पापतणीपरहरजेखाण ॥ शीशमलेजेअ-
नरथदंड, मिथ्यामलमभरजेपिंड ॥ १५ ॥ समकितशु-
द्धहैडेराखजे, बोलविचारीने भांखजे ॥ पांचातिथिमकरो
आरंभ, पालोशीयलतजोमनदंभ ॥ १६ ॥ तेलतक्रघृतदू-
धनेदहिं, ऊघाडांमतमेलोसही ॥ उत्तमठामेंखरचोवित्त,
परउपगारकरोशुद्धचित्त ॥ १७ ॥ दिवसचरिमकरजेचो-
विहार, चारेआहारतणोपरिहार ॥ दिवसतणाआलोएपाप,
जिमभांजेसघलासंताप ॥ १८ ॥ संध्यायेंआवश्यकसाच-
वे, जिनवरचरणशरणभवभवें ॥ चारेशरणकरीदृढहोय,
सागारीअणसणलेसोय ॥ १९ ॥ करेमनोरथमनएहवा,
तीरथशत्रुंजजेहवा ॥ समेतशिखरआबूगिरनार, भेटीश
हुंधनकबआवतार ॥ २० ॥ श्रावकनीकरणीछेएह, एह-
थीथायभवनोछेह ॥ आठेकर्मपडेपातलां, पापतणांछूटे
आमलां ॥ २१ ॥ वारूलहियेंअमरविमान, अनुक्रमेंपामे
शिवपुरधाम ॥ कहेजिनहर्षघणेससनेह, करणीदुःखहर-
णीछेएह ॥ २२ ॥ इतिश्रीश्रावकनीकरणीस० ॥

॥ अथअठपुहरीपोसहाविधिलिख्यते ॥

रात्रिनीपाछलीघडियेंनिद्रादुरकरीने, पंचपरमेष्ठिसम-

रणकरी, गृहचिंतापरिहरीपर्वदिवसथकीप्रथमदिवसेंपडि-
लेहीराख्यांजेपोसहनांउपगरण, तेलेई, पोसहशालायेंथाप
नाचार्यसमीपें, अथवागुरुनोसंयोगहवेतोगुरुनीपासेंआवी
भूमिप्रमार्जीएकखमासमणदेई, इरियावहिपडिकामिपीछें
खमासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ०॥ पोसह
मुहपत्तीपडिलेहुं ? गुरुकहे, पडिलेहेह. इच्छंकहीखमा
समणदेई, मुहपत्तीपडिलेहे. पीछेंउभोथई, खमासमणदेई
इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ०॥ पोसहसंदिस्साउं ? गुरुकहे
संदिस्सावेह, पीछेंइच्छंकही, खमासमणदेई. इच्छाका०
॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसहठाउं ? गुरुकहेठाएह, पीछेंइच्छं
कहीखमासमणदेईउभोथईआघोशरीरनमावीमुखें मुहपत्ती
देई, मधुरस्वरेंतीननवकारगुणीकहे. इच्छकारभगवान्
पसाउकरी, पोसहदंडकउच्चरावो ? गुरुकहेउच्चरावेमो
पीछेंकरेमिभंतेपोसहं ॥ इहांसेंलेकेअप्पाणंवोसिरामि
तककहे. सोलिखे हैं.

॥ अथपोसहकापच्चक्खाणप्रारंभः ॥

करेमिभंतेपोसहंआहारपोसहं, देसओसव्वओव
सरीरसक्कारपोसहं, सव्वओबंभचेरपोसहं, सव्वओअव्व

पोसहं, सव्वओचउव्विहेपोसहे, सावज्जंजोगंपच्चक्खामि, जावदिवसंअहोरत्तिंवापज्जुवासामि, दुविहंतिविणंमणेणं वायाएकाएणं, नकरेमिनकारवेमि, तस्सभंतेपडिक्कमामि निंदामि, गरिहामिअप्पाणंवोसिरामि.

॥ एपाठतीनवारगुरुवचनअनुभाषणकरतोउच्चरे॥

पीछेएकखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिकमुहपत्तीपडिलेहुं ? गुरुकहे, पडिलेहेह. बीजीखमासमणदेईमुहपत्तीपडिलेहे. पीछेंदोयखमासमणेंसामायिकसंदिस्साउं ? सामायिकठाउं ? कही, खमासमणदेइ. अर्धावनतगात्रऊभोथकोतीननवकारगुनीतीनकरेमिभंतेउउच्चरीदोयखमासमणे बेसणोसंदिस्साउं ? बेसणोठाउं ? कही, पीछेंदोयखमासणेंसिज्झायसंदिस्साउ ? सिज्झायकरुं ? कहीखमासमणदेईऊभोथको, आठनवकारनो सिज्झायकरीतादिपरिसहेदोयखमासमणें, पांगरणुंसंदिस्साउं ? पांगरणुंपडिग्घाउं ? कहे. एसर्वसामायिकविधिपूर्वेकह्योछे तेमहीजकरवो, पणइतनोविशेषछे. पहिलांइरियावहीपडिक्कमीछे, तेमाटेइहांसामायिकदंडकऊच्चरखांपीछेइरियावहीपडिक्कमीजें ॥ पीछेचैत्यवंदन, जयवीयराय

सुधीकरीकुसुमिणदुस्सिणकाउस्सगकरे, पीछैंपडिक्कमण वेलासीमसिज्झायध्यानकरे. पीछैंपूर्वोक्तरीतेंपडिक्कमणकरे, पणइतरोविशेषकेचारथुइयेंदेववांद्यापीछैंखमासणदेईकहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ बहुवेलंसंदिस्साउं ? गुरुकहे, संदिस्सावेह. पीछैंइच्छंकहीखमासमणदेईकहे. इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ बहुवेलंकरुं ? गुरुकहे, करेह ॥ पीछैंइच्छं कहीतीनखमासमणेंश्रीआचार्यजीमिश्र १, श्रीउपाध्याय-जीमिश्र २, त्रीजेसव्वेसाधुवांदी, कम्मभूमिहिकम्मभूमि-हिंइत्यादि नमस्कारभणे. जोपडिलेहणवेलानहिहुवेतोसी-मंधरस्वामीनुंचैत्यवंदनादिकरी, सिज्झायकरे. हवेपडिलेण वेलापडिलेहणकरे, सोलखीयेंछैयें. दोयखमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहणकरुं ? कहीमुहपत्तीपडिलेहे पीछैंदोयखमासमणेंअंगपडिलेहणसंदिस्साउं ? अंगपडि-लेहणकरुं ? कहे. पीछैगुरुवचनेंइच्छंकही. धोतियोकणदो-... ...दीवस्त्रपहेरी, खमासमणदेईइच्छकारभगवान् ! पडिलेहणकरावोजी ॥ एमकही, स्थापनाचार्य ...ापे, अनेजोगुर्वादिकस्थापनाचार्यपडिलेहे, ...देईउक्तरीतेंआग्याभागे. पीछैंखमासमण

देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधिमुहपत्तीपडि लेहं ? गुरुकहे. पडिलेहेह. पीछेइच्छंकही, मुहपत्तीपडि-लेहीदोखमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ ओहीपडिलेहणसंदिस्साउं ! गुरुकहे, संदिस्सावेह. ओ-हीपडिलेहणकरुं, गुरुकहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलांपडिलेहणपाठलिख्यते ॥

॥ आगाढेआसन्नेउच्चारेपासवणेअणाहियासे ॥ १॥ आगाढेमज्झेउच्चारेपासवणेअणाहियासे॥ २ ॥ आगाढेदुरे उच्चारेपासवणेअणाहियासे ॥ ३ ॥ आगाढेआसन्नेपासव-णेअणाहियासे ॥ ४ ॥ आगाढेमज्झेपासवणेअणाहियासे ॥ ५ ॥ आगाढेदुरेपासवणेआहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्नेउच्चारेपासवणेअणाहियासे ॥७॥ आगाढेमज्झेउच्चारे पासवणेआहियासे ॥ ८ ॥ आगाढेदुरेउच्चारेपासवणेअहि-यासे ॥ ९ ॥ आगाढेआसन्नेपासवणेअहियासे ॥ १० ॥ आगाढेमज्झेपासवणेअहियासे ॥ ११ ॥ आगाढेदुरेपास-वणेअहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढेआसन्नेउच्चारेपासवणे अणाहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढेमज्झेउच्चारेपासवणेअण-हियासे ॥ १४ ॥ अणागाढेदुरेउच्चारेपासवणेअणाहियासे

॥ १५ ॥अणागाढेआसन्नेपासवणेअणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढेमज्झेपासवणे अणाहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढेदुरेपासवणेअणहियासे ॥ १८॥ अणागाढेआसन्नेउच्चारेपासवणेअहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढेमज्झेउच्चारे पासवणेअहियासे ॥ २० ॥ अणागाढेदुरेउच्चारेपासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढेआसन्नेपासवणेअहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढेमज्झेपासवणेअहियासे ॥ २३ ॥अणागाढेदुरे. पासवणेअहियासे ॥ २४ ॥ एथंडिलयाडिलेहणपाठकह्या ॥

॥ यहचोवीसथंडिलांकहांकहांकरनां?सोलिखतेहैं.

॥ ६ थंडिलाशय्याकेदोनुंतरफदहिणेंपासे ३, वामपासे ३, पडिलेहें ॥ ६ थंडिलांदरवज्जेकेभीतरदोनुपासें दहिणें ३, वामें ३ पडिलेहे ॥ ६ थंडिलांदरवज्जेके बाहरदोनुपासेंपडिलेहे ॥ ६ थंडिलांजिहांउच्चारपस्रवणकी जगाहोवे, तेदोनुंतरफपडिलेहें ॥ इति २४ थंडिलापडिलेहणाविधिः संपूर्ण. ॥

पीछेंइच्छंकही, कंबलवस्त्रादिपडिलेहीपोसहशाला प्रमार्जीकाजोविधिशुंपरठवी, एकखमासमणदेईइरियाव-

हीपडिक्कमें, इहाआचारदिनकरमेंकह्योछे. दोयखमास मणेंइच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वसतीसंदिस्साउं ? व सतीपडिलेहुं ?कहीवसतीमात्रोप्रमुखप्रमार्जे. इत्यादिपण विधिप्रपाप्रमुखग्रंनकह्यो ॥

॥ हवेएकखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झायसंदिस्साउं ? गुरुकहे, संदिसावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झाय करुं ? गुरुकहेकरेह. पीछेंइच्छंकहीनवकारएककथनपूर्वकउपदेशमालाप्रमुखसिज्झायकरी, नवकाएककहीधर्मध्यानकरे, भणे, गुणे, वखाणसुणे. इमकरतांपूर्णपहरदिन चढ्यां. उग्घाडापोरिसीअथवा, बहुपडिपुन्नापोरिसीकही, खमासमणदेईइरियावहीपडिक्कमीदोयखमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहणकरुं ? गुरुवचनेंइच्छं कही, मुहपत्तीपडिलेहीपानभोजनपात्रपडिलेहीराखे. पीछेंसिज्झायध्यानकरे ॥

॥ हवेकालवेलायेंआवस्सहीपूर्वकदेहरेजईपांचेशक्रस्तवेंदेववांदणविधिदोप्रकारसेंलिखतेहैं ॥

॥ तीनप्रदक्षिणादेई, तीनवारनमस्कारकरी, भूमि

प्रमार्जी, पुरुषहुवेतोप्रभुजीकेदक्षिणपासेंबेसे. स्त्रीहुवेतो वामपासेंबेसे. पीछें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदनकरुं ? इच्छंकही. चैत्यवंदनकहे पीछेंनमोत्थुणं कहे. खमासमणदेईइरियावहीपडिकमे. एकलोगस्सनो काउस्सग्गकरे. मुखेंलोगस्सकहे संडासाप्रमार्जीबेसे. तीनतथाचारतथापांचआदिदेईनमस्कारकहे. " जंकिंचिनामतित्थं " इत्यादिकहीपछिंनमोत्थुणंकहे. उभोथई अरिहंतचेईयाणंकरेमिकाउस्सग्गंवंदणवत्ती० अन्नत्थु०कही, एकनवकारनोकाउस्सग्गकरे पारीएकथुईकीगाथा कहे. पीछेंलोगस्स० सव्वलोएअरि० वंदणव० अनत्थु कहीएकनव० पारीदुसरीथुईकीगाथाकहे पीछेंपुक्खरदी वुअस्सभग०वंदण०अन्नत्थुकहीएकनवकार० पारीतीसरी थुईकीगाथाकहे० पीछेंसिद्धाणंवुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थु० इत्यादिकथनपूर्वकचोथीथुइकीगाथाकहकरबैठके नमोत्थुणंकहेफेरअरिहंतचेई० कहे, इसीतरेंचारथुइयेंदेव वांदीबेसे ॥ नमोत्थुणंकहे नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादिकही पीछेंस्तवनकहेपीछेंजयवीयरायकहीनमोत्थुणं सव्वेतिविहेणवंदामिपर्यंतकहे ॥ एमपांचेशक्रस्तवेंदेव-

वंदनाविधिजाणवो ॥

॥ एविधिप्रवचनसारोद्धारप्रमुखग्रंथमेंकह्योछे. तथा चैत्यवंदनबृहद्भाष्यमेंएमकह्योछे ॥ नमस्कारकथनपूर्वक शक्रस्तवकही, इरियावहीप्रतिक्रमणादिकरे; वलीनमस्कारकथनपूर्वकसक्रस्तवकहीदोयवारचारथुइसेंदेववांदे. फेरशक्रस्तवकही " जावंतिचेइयाइं " गाथाभणीखमासमणपूर्वकजावंतिके० बीजीगाथाकही, स्तवनकहे. वलीनमोत्थुणंकही, जयवीयरायकहे ॥ इतिदेववंदनाविधिः ॥

पीछेंनिस्सहीपूर्वकपोसहशालामांहेआवीइरियावही पडिक्कमे. पीछेंसिज्झायध्यानकरे, जोतिविहारउपवास कियाहुवे, तोपच्चक्खाणवेलापूर्णहुवांजलपीणेकूंपच्चक्खाण पारे ॥

॥ हवेपच्चक्खाणपारणेकाविधीलिखतेहैं ॥

खमासणदेइइरियावहीपडिक्कमे. फिरएकखमासण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चक्खाणपारवामुहपत्तीपडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछेंइच्छंकहीखमासणदेइ, मुहपत्तीपडिलेहे. फेरएकखमासणदेई, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहारअमुकपच्चक्खाणपारुं ? गुरुकहे, पुणो-

विकायव्वो. पीछेंयथाशक्तीकही, खमासमणदेई॥ इच्छा-का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहारपारुं ? गुरुकहे, आयारोनमोतव्वो. पीछेंतहत्तिकही, अमुकपच्चक्खाणचउविहार कर्यो, एमकहीएकनवकारगुणीपचक्खाणफासियं, पालियं सोहियंतीरियं, किट्टियं, आराहियं, जंच न आराहियं, तस्समिच्छामिदुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदनकरे. क्षनमात्रसिज्झायकरीयथासंभवेंअतिथिसंविभागकरीपाणीपीवे ॥

॥ तथाउपधानवाहीहुवे, तोपोरिसीप्रमुखपच्चक्खाण पारीआहारकरे पीछेंआसणवैठोथकोहीजदिवसचरिमपच्चक्खे, पीछेंइरियावहीपडिकमीचैत्यवंदनकरे. एचैत्यवंदन आहारसंवरणनिमित्तछे ॥ इतिपच्चक्खाणपरणेकाविधि ॥

॥ पीछेंजोबहिर्भूमिजावणोहुवेतोआवस्सहीकहीउपयोगीथको, निर्जीवथंडिलेजई; अणुजाणहजस्सुग्गहोकहीपूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकनेपूंठिअणदेई, मळमूत्रपरिठवे, प्राशुकजलेशुद्धथईतीनवारवोसिरामि, एहवुंकहिवे करीमलमूत्रवोसिरावी, पोसहशालायेंनिस्सहीपूर्वकपेसी इरियावहीपडिकमे. खमासमणदेईकहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ गमणागमणंआलोयहं ? गुरुकहे, आ-

लोएह. पीछेइच्छंकहीगमणागमणआलोवे ॥ तेइमआ-
वस्सहीकरी, प्राशुकदेशेंजई, संडासापूंजी, थंडिलोप-
डिलेहीउच्चारप्रश्रवणवोसिरावी, निस्सहीकरी, पोसहशा-
लायेंआव्यो ॥ आवंतिजंतेहिंजंखंडियं, जंविराहियंत-
स्सामिच्छामिदुक्कडं, एमकहीबेसे. पीछेंपडिलेहणवेलासी-
मासिज्झायध्यानकरे ॥

॥ हवेपाछलेपहुरेइरियावहीपडिकमीखमासमणदेई
कहे. इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहणकरुं ? गुरुक
हेकरेह. इच्छंकहीदूजेखमासमणेइच्छाका० ॥ सं० ॥
भ० ॥ पोसहशालाप्रमार्जुं ? गुरुकहे,प्रमार्जह. पीछेंइच्छं
कही. मुहपत्तीपडिलेहीदोयखमासमणेंअंगपडिलेहणसंदि-
स्साउं ? अंगपडिलेहणकरुं ? कहे पीछेंगुरुवचनेंइ-
च्छंकहीमुहपत्तीपडिलेहीदंडासणो पूंजणीप्रमुखसें प्रमार्जी
पोसहशालाप्रमार्जे. पीछेंकाजोशुद्धकरी, उद्धरी,
एकांतेंविखरतोपरठवीइरियावहीपडिकमी, खमासमण-
पूर्वककहे ॥ इच्छकारभगवान् ! पसाउकरीपडि-
लेहणापडिलेहावोजी ॥ पीछेंस्थानाचार्यपडिलेही
स्थापे. गुरुसमीपेंअथवाथापनाचार्यसमीपेंएकखमासमण

देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्तीपडिलेहुं ? गुरुकहे, पडिलेहेह. पीछेंइच्छंकहीखमासमणेदेई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछेंदोयखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झायसंस्साउं ? सिज्झायकरुं ? उन्करीतेंक्षण मात्रसिज्झायकरीतिविहारउपवासकीधोहुवेतोगुरुसाखेंपा: णिहारपच्चक्खे ॥ उपधानवाहीप्रमुखआहारकीधोहुवेतोवां: दगांदायदेई, पच्चक्खाणकरे. पीछेंएकखमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधिथंडिलांपडिलेहणसं- दिस्साउं ? बीजेखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधिथंडिलांपडिलेहुं ? गुरुवचनेंइच्छंकही, दो- यखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बेसणोसं- दिस्साउंबेसणोठाउं ? कहींबेसे. वस्त्रकंबलादिपडिलेहे पुं- जणीहुवेतोतेपणमुहपत्तीशुंपडिलेहे उपवासीतोछेतेमाटे सर्वपाछोकडिपट्टोधोतीयोकणदोरोपडिलेहे, उपधानवा- हीप्रमुखभोजनकीधोहुवेतोकडिपट्टादिपडिलेह्यां. पीछें वस्त्रकंबलादिपडिलेहे एविशेषछे ॥ पीछेंकालवेलासीम सिज्झायध्यानकरे. पीछेंउच्चारप्रश्रवण २४ थंडिलांपडि- लेहे, जोचउदशहुवे, तोपांखीचउमासीपडिकमणो करे,

संवच्छरीयेंसंवच्छरीपडिक्कमणोकरे. तिहांदेवसीपडिक्कमणापुर्वेंलिख्योछे, तिमसहजकरे, पणइतरोविशेषछे ॥ इच्छा० ॥ देवसीआलोएमइत्यादिदेवसीआलोयांपछें " ठाणेकमणेचंक्कमणे " इत्यादिपाठकहे. खुद्दोवद्दवकाउरसग्गकियांपछिंदोयखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ भ० ॥ सिज्झायसंदिस्साउं ? सिज्झायकरुं ? कही बैठोथकोतीननवकारप्रमुखसिज्झाकरे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादितीनपडिक्कमणविधिआगेंएहीपुस्तकमेंलिखगयेहैंवहांसेंजानलेनां.

॥ हवेपडिक्कमणोहुवापछिंसाधुकीवेयावच्चकरीपोरसीसीमासिज्झायध्यानकरे.जोळघुनीतिप्रमुखकरवीहुवे,तो आसज्जकहेतोथकोभूमिप्रमार्जेथंडिलस्थानकेंजइ, देहशंकानिवारे, प्रश्रवणवोसिरावी, स्वस्थानकेंआवे. भगवन् ! बहुपडिपुन्नापोरसीएमकहीखमासमणदेईइरियवाहीपडिकमे. पछिंराईसंथाराविधिकरे ॥

॥ हवेराईसंथाराविधिकहेछे ॥

॥ खमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ०

हुं ? गुरुकहे, पडिलेहेह. ५

इच्छंकही, खमासमणदेईमुहपत्तीपाडिलेहे. एकखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइसंथारोसंदिस्साउं ? बीजेखमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राईसंथारोठावुं ! पीछेंगुरुनवचनेंइच्छंकही, चउकसायपडिमल्लुल्लूरणइत्यादिनमस्कारकथनपूर्वकजयवीयरायसूधीचैत्यवंदन करे. भूमिप्रमार्जी, संथारोउत्तरपट्टोपाथरे, पीछेंशरीर प्रमार्जीनिस्सहीनिस्सहीएमकहीसंथारेबेसी, तीननवकार तीनकरेमिभंतेऊच्चरी ॥ नमोखमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, ' अणुजाणहचिट्ठिज्जाअणुजाणहपरमगुरु ' इत्यादिराइसंथारागाथाभणी, वामहाथसिराणेंदेईसोवे, निद्रानावेजांसीमनुनिवरचरित्रचिंतवे, पसवाडोफेरेतोशरीरसंथारोप्रमार्जीफेरे, जोदेहशंकाथेंऊठे, तोपुर्वोक्तविधेंदेहशंकानिवारी, इरियावहीपडिक्कमे ॥ पीछैंजघन्येंपणतीनगाथानीसिज्झाकरीसोवे ॥ इतिराइसंथाराविधिकह्यो ॥

॥ हवेरात्रिनेंपाछिलेपहोरऊठी, नवकारादिगुणी, इरियावहीपडिक्कमे. खमासमणदेईकुसुमिणदुस्सुमिणकाउस्सग्गकरी, पूर्वोक्तविधेंसामायिकलेवे, इहाइरियावहीनपडिक्कमे. पीछेदोयखमासमणेंसिज्झायसंदिस्सावीआठनव-

कारगुणी, पडिक्कमणवेलासीमसिज्झायकरे. पडिक्कमण वेलाहुवांपडिक्कमणोपूर्वेलीपरेकरे, पणइतरोविशेपछे, केराइ आलोयांपीछैंसंथाराउवंदणकीइत्यादिपाठकहे, एमसंपूर्ण पडिक्कमणोकरीपडिलेहणवेलायेंपूर्वोक्तविधें पडिलेहणकरी, धर्मशालापूंजीकाजोऊद्धरीइरियावहीपडिक्कमे. दोयखमासमणेंसिज्झायसंदिस्सावी, उपदेशमालाप्रमुखसिज्झाय करे. पीछैंपोसहपारे ॥

॥ अथपोसहपारणेकीविधिलिखतेहैं ॥

॥ खमासमणदेईमुहपत्तीपडिलेहे. फेरखमासमणदेईकहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसहपारुं ? गुरु कहे, पुणोविकायव्वो. पीछैंयथाशक्तिकही, खमासमण देईकहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसहपारुं! गुरु कहे, आयारोनमोत्तव्वो, पीछैंतहत्तिकहे, खमासमणदेई अर्धावनतगात्रेंउभोथकोतीननवकारगुणी, खमासमणदेई, मुहपत्तीपडिलेहे, पीछैंखमासमणदेईकहे ॥ इच्छाका० ॥ ॥ सं ॥ भ० ॥ सामायिकपारुं ? गुरुकहेपुणोविकायव्वो. पीछैंयथाशक्तिकही, खमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥ ॥ सं० ॥ भ० सामायिकपारुं ? गुरुकहेआयारोनमोत्त-

ञ्वो. पीछेंतहत्तिकहीखमासमणदेईअर्धावनतगात्रेंउभोथ कोहाथजोडयां-मुहपत्तीमुखेंदियांथकांतीननवकारगुणीसं-डासापडिलेहे. गोडालीयेंबेसीमस्तकनमावी, "भयवंदस-न्नभद्दो" इत्यादिभावनारूपगाथाकहे पीछेंपोसहनाउप गरणसंवरी, देहरेंजईदेवजुहारे. घरेआवीआहारनिष्पन्नहु-वोदेखीसाधुसमीपेंआवे, अतिथिसंविभागव्रतसाचवणानि-मित्तेसाधुभणीनिमंत्रणाकरी, घरेंलेजावे, साधुपण-शुद्धआहारलेई, स्वस्थानकेंआवे, तिवारपीछेंसाधुनें-जेआहारदीधो, तेहनोहीजशेषआहारआपकरे॥ आठपु-हरीपोसहग्रहणपारणविधिः ॥

॥ हवेदिनऊग्यापीछेंपोसहले, तेहनोविधिकहेछे ॥

॥ घरथकीनिश्चितथईधर्मस्थानकेंआवी, सर्वउपगर-णपडिलेही, कचरोविधिशुंपरठवीइरियावहीपडिकमे. खमा समणपूर्वकआग्यामागी, पोसहमुहपत्तीपडिलेहे, आगें पोसहग्रहणकाविधिपूर्वेलिखाहैं. तिमहीजजाणवो. पण दिवसपोसहहीजकरणोहुवे, तो पोसहदंडकउच्चरतांजाव दिवसंपज्जुवासामि, एहवोपाठकहे. अनेजोअट्ठपुहरी करवोहुवे, तो जावअहोरत्तिपज्जुवासामिएहवोपाठकहे.

पीछेंसामायिकविधिसर्वकरीचैत्यवंदनकुसुमिणदुस्समिण काउस्सग्गकरीपाडिक्कमणोकरीदोयखमासमणेंबहुवेलंसंदिस्सावे २, अनेजोपूर्वेपडिक्कमणोगुरुसाथेंकस्योहुवे, तोपडिक्कमणानेंअंतेंपडिलेहीराख्यांजेवस्त्र, तेपहेरीपोसहसामायिकसर्व्वविधिकरीदोयखमासमणेंबहुवेलंसंदिस्सावे २, तथाजोगुरुसेंजूदोपाडिक्कमणोकस्योहुवे, तो गुरुपासेंआवीपोसहसामायिकसर्व्वविधिकरी, आलोयणखामणादिनिमितेंमुहपत्तीपडिलही बे वांदणांदेई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइयंआलोउं ? गुरुकहे, आलोएह. पीछेंराईआलोवे, फेरएकखमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुठिओमिअब्भिंतर, राईयंखामेमि ? गुरु कहेखामेह. पीछेसबपाठकहे, राईखामेह, पहिलांपडिक्कमणामेंनवकारसीपच्चख्योथोतेमाटेंपीछें गुरुसाखेंपच्चकाणउपवासनोकरे. पीछेंदोयखमासमणेंबहुवेलंसंदिस्सावे ॥ एतीएप्रकारकाविकल्पजाणनां. हवेपडिलेहणतोपूर्वेकरीछे, पणआदेशमागवो. तेएमखमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहणसंदिस्साउं ? बीजेखमासमणेंपडिलेहणकरुं ? कहीमुहपत्तीपडिलेहे. पीछेंइमहीजदोयख-

मासमणेंअंगपडिलेहणसंदिस्सावीमुहपत्तीपडिलेहे. पीछेंख-लीखमासमणदेई. इच्छकारभगवन् ! पसाउकरीपडिलेहण पडिलेहावोजी. एमकहे, पीछेंएकखमासमणदेई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधिमुहपत्तीपडिलेहुं ? कही कोईवस्त्रअणपभिलेह्योराख्योहुवे, तोपडिलेहे, नहींतोवली आसणपडिलेहे. दोयखमासमणेंसिज्झायसंदिस्सावीउपदेशमालाप्रमुखसिज्झायकरे. 'आगेंसर्वक्रियापूर्वेअठपुहरी पोसहमेंलिखीहै, तिमहीजजाणवी, पणइहांअठपुहरीपोसहमेंलिखीहै, तिमहीजजाणवी, पणइहांअठपुहरीपोसहतो पाछलीरातेंवलीसामायिकनलेवे. जिणेंदिवससंबंधीचउ पुहरीपोसहलीधोहुवे, तेपाछलेपुहरपच्चक्खाणकियापीछें दोयखमासमणेंओहीपडिलेहणसंदिस्साउं ? ओहीपडिलेहणकरुं ? कहे, पणथंडिलापदनकहे. अनेथंडिलानहीं पडिलेहे. यहनि केवलदिनसंबंधीपोसहग्रहणकरणेमेंविशेषविधिही, सोबताई ॥ इतिदिनसंबंधीपोसहग्रहविधिः॥

॥ अथरात्रिसंबंधिचउपुहरीपोसहनोविधिकहेहें ॥

॥ तिहांजिणेप्रथमचउपुहरीदिवसपोसोऊचर्योहैं. पीछेंसंध्यानीपडिलेहणकरतांरात्रिपोसहनोभावथयो, तो

पच्चक्खाणकियांपछैंदोयखमासमणेंपोसहमुहपत्ती पडिले-
हीतीननवकारगुणीतीनवारपोसहदंडकउच्चरे. तिहांजाव
रत्तिंपज्जुवासामिएमपाठउच्चरे, पछैंसामायिकविधिपूर्वोले
ख्योहैतिमकरे, पणसामायिकउच्चर्यांपछैंदोयखमासमणे
सिज्झायसंदिस्सावीआठनवकारकही बेसणोसंदिस्सावी,
पांगरणोसंदिस्सावी, पछैंदोयखमासमणें ॥इच्छाका० ॥
॥ सं० ॥ भ० ॥ ओहीथंडिलांपाडिलेहणसंदिस्साउंओ-
हीथंडिलांपाडिलेहणकरुं? गुरुकहे, करेह. इच्छंकहीउपाधि
पडिलेहे. आगेसर्वक्रियापूर्वोलिखीतिमजाणवी. तथाजे
श्रावकउपवासीतोव्यग्रपणेंदिवसेंपोसहनकरीशक्यो, तेरा-
त्रिपोसहनोभावथये, पाछलेपहुरधर्मस्थानकेंआवे. जो
वसतीप्रमार्जीहुवे, तोसखो, नहीतोवसतीप्रमार्जी, काजो
परिठवीसर्वउपगरणपडिलेहीइरियावहीपडिक्कमे. पीछैंचउ-
विहारपच्चक्खाणकरीदोयखमासमणपोसहमुहपत्तीपडिलेही
दोयखमासमणदेईपोसहसंदिस्सावे. फेरखमासमणदेई,
तीननवकारगुणी, तीनवारपोसहदंडकउच्चरे. तिहांदि-
वससेसंरत्तिंपज्जुवासामिकहे. संध्याहुवेतोरत्तिंपज्जुवासा-
मिकहे. पीछैंबिहुंखमासमणेंसामायिकमुहपत्तीपडिलेहे. दो

पखमासणदेई, सामायिकसंदिस्सावे, फेरखमासमणदेई, तीननवकारगुणी, तीनकरेमिभंतेऊच्चरे. दोयखमासमणदेईसिज्झायसंदिस्सावी. आठनवकारकहे. फेरदोखमासमणदेई, बेसणोसंदिस्सावीसीतादिकेंत्रेखमासमणदेई, पांगरणुंसंदिस्सावे, पीछेत्रेखमासमणदेई, अंगपडिलेहणसंदिस्सावी, मुहपत्तीपडिलेहे. फेरत्रेखमासमणदेई, ओहीथंडिलांपडिलेहणसंदिस्सावीजोअणपडिलेह्योउपगरणहुवेतोपडिलेहे. जो सर्वउपगणपडिलेह्यांहुवे, तोपणथानकशून्यताटालवाभणीवलीआसणपडिलेही, पडिक्कमणवेलासीमसिज्झायध्यानकरे. पीछेंउच्चारप्रश्रवणना २४ थंडिलांपडिलेहीपडिक्कमणोकरे, तथापाछलीरातेंवलीसामायिकनलेवे, इतनांनिकेवलरात्रिसंबंधिपोसहलेवानाविकल्पजाणवा ॥ इतिरात्रिपोसहविधि संपूर्णः ॥

॥ अथठाणेकमणेचंकमणेलिख्यते ॥

॥ ठा [illegible] णे [illegible] । ३ ॥ इरि

य [illegible] पीय [illegible] २९ [illegible] । [illegible]

[illegible] । रव [illegible] ।ड [illegible] ।ढ

कारण [illegible] ॥

राउवेदट्टणकी, आउदट्टणकी, परिअट्टणकी, पमारणकी छप्पइयासंघट्टणकीअन्नरकुविसयकायकी, सव्वसविराइअ दुचिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेणसंदिस्सह, इच्छंतस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथदेववांदणमेंअथवाप्रातःकालसंध्याकालकेप्रतिक्रमणमेंकहनेकीस्तुतिः ॥

॥ तत्रप्रथमबीजकीस्तुतिः ॥

॥ महीमंडणंपुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणंकेवलन्नाणगेहं ॥ महानंदलच्छीबहुबुद्धिरायं, सुसेवामिसीमंधरंतित्थरायं ॥ १ ॥ पुरातारगाजेहजीवाणजाया, भवस्संतितेसव्वभव्वाणताया ॥ तहासंपयंजेजिणावट्टमाणा, सुहंदितु तेमेतिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तारसंसारकुवारपायं, कलंकावलीपंकपरकालतोयं ॥ मणोवंछियथ्थसमुदारकप्पं, जिणंदागमंवंदिमोसुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसेजिणंदाणणंभोजलीणा, कलारूवलावण्णसोहग्गपीणा ॥ वहंतस्स चित्तंमिणिच्चंपिझाणं, सिरीभारईदेहिमेसुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजीनीस्तुतिः ॥

॥ अथपंचमीस्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्त रसीमदिव्यपदवीवश्यायमन्त्रोत्तमम् ॥ येनप्रोज्ज्वलपंचमीवरतपोव्याहारितत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनःसतनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रीयम् ॥ १ ॥ येपंचाश्रवरोधसाधनःपराः पंचप्रमादीहरा., पंचाणुव्रतपंचसुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वापंचहृषीकनिर्जयमथोप्रापागतिपंचमी, तेऽमीसंतुसुपंचमीव्रतभृतांतीर्थंकराः शंकराः ॥ २ ॥ पंचाचारधुरीणपंचगणाधीशेनसंसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितंपंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभंगुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशीरोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुयायामिजैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानांपरमेष्ठिनांस्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानांभविनांगृहेषुवहुशोयापंचदिव्यंव्यधात् ॥ प्रह्वोपंचजनेमनोमतकृतोस्मारत्नपञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतुसासिद्धायिकात्रायिका ॥ ४ ॥ इतिश्रीज्ञानपंचमीस्तुति. ॥

॥ अथअष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चउवीसेजिनवर, प्रणमुंहुंनितमेव ॥ आठम

दिनकरियें, चंद्रप्रभुनींसेव ॥ मूरतिमनमोहे, जाणेपूनिमचंद ॥ दीठांदुःखजाये, पामेपरमानंद ॥ १ ॥ मिलिचोसठइंद्रपूजेप्रभुजीनापाय ॥ इंद्राणीअपच्छरा, करजोडीगुणगाय ॥ नंदीश्वरद्वीपें, मिलिसुरवरनीकोड ॥ अठाइमहोच्छव, करताहोडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजाशिखरे, जाणीलाभअपार ॥ चउमासेंरहिया, गणधरमुनिपरिवार ॥ भवियणनेतारे, देईधरमउपदेश ॥ दूधसाकरथी पण, वाणीअधिकविशेष ॥ ३ ॥ पोसोपडिक्कमणुं, करियेंव्रतपच्चक्खाण ॥ आठमतपकरतां, आठकर्मनीहाण ॥ आठमंगलथाये, दिनदिनकोडिकल्याण ॥ जिनसुसूरिकहे, इमजीवतजनमप्रमाण ॥ इतिअष्टमीस्तुतिः ॥

॥ अथमौनेकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्यप्रव्रज्यानमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथामल्लेर्जन्मव्रतमपमलंकेवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यांसहसिलसदुद्दाममहसि, क्षितौकल्याणानांक्षपतुविपदःपंचकमद ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलयं, सदास्वर्गत्यंवाहमहमिकयायत्रसलयं ॥ जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखंनारकसदः, क्षितौ० ॥ ॥ २ ॥ जिनाएवंयानिप्राणि:

जगदुरात्मीयसमये, फलंयत्कर्तृणामितिचविदितंशुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानांक्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥ ३ ॥ सुरा सेंद्राः सर्वेसकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथाचज्योतिष्काखिलभवननाथाःसमुदिताः ॥ तपोयत्कर्तृ गां विदधतिसुखंविस्मितहृद, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इतिमौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथपार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीतंछदः ॥

॥ द्रेंद्रेंकिधपमप, धुधुमिधोंधों, भ्रसांकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकीदोंदों, दाग्डिदि दाग्डिदिकि, द्रमकिद्रणरणद्रेणवं॥झिझिझेंकिझेंझें, झणणरणरण, निजकिनिजजनरंजनं॥सुरशैलशिखरेभवतुसुखदंपार्श्वजिनपतिमज्जनं॥१॥ कटरेंगिनिथोंगिनि, किटतिगिगडदां, धुधुकिधुटनटपाटवं ॥ गुणगुणणगुणगण, रणकिणणं, गुणणगुणगणगौरवं ॥ झिझिझेंकिझेंझें, झणणरणररण, निजकिनिजजन, सज्जना ॥ कलयंतिकमला, कलितकलमल, मुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकिठेंकि ठेंठें, ठर्हिकठार्हके, ठर्दिपट्टा, ताडयते ॥ तल्लोंकिलोंलों, त्रोंपित्रोंपिनि, डेंपिडेंपिनि, वाद्यते ॥ ॐ ॐकी ॐॐ, थुंगिथुंगिनि, धोंगिधों

गिनिकलरवे ॥ जिनमतमनंतमहिमतनुतांनमनिसुरनर सुच्छवे ॥ ३ ॥ पुंदांकिपुंदांपुपुइदिपुंदांपुपुइदिदांदां, अंबरे ॥ चाचपटचचपटरणांकिणंणंडणणंडडं, इंवरे ॥ तिहांसरगमपधनि, निधपमगरस, ससससससुर, भेर- ता ॥ जिननाटयरंगेकुशलसुनिशांदिशतुशासनदेवता ॥ ४ ॥ इतिश्री जिनकुशलसूरिजीकृतपार्श्वजिन० ॥

॥ अथआंविलकीस्तुति ॥

॥ निरुपमसुखदायकजगनायकलायकशिवगतिगा- मीजी, करुणासागर निजगुणआगरशुभसमतारसवामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्रशिरोमणिजिनवरध्यावेजेमनरंगेजी, तेमानवश्रीपालतणीपरेंपामेसुखसुरसंगेजी ॥ १ ॥ अरि- हंतसिद्धआचारिजपाठक, साधुमहागुणवंताजी ॥ दरि- सणनाणचरणतपउत्तम, नवपदजगजयवंताजी ॥ एहनुं ध्यानधरंतांलहियें, अविचलपदअविनाशीजी, तेसघला जिननायकनामियें, जिणेएनीतिप्रकाशीजी ॥ २ ॥ आ- सूगासमनोहरतिमवालि, चैत्रकमासजगीशेजी ॥ उजवा- लीसातमथीकरियें, नवआंबिलनवादिवसेंजी ॥ तेरसहस वलिगुणियेंगूणणुं, नवपदकेरोसारोजी ॥ इणपरिनिर्मल

तपआदरियें, आगमशाखउदारोजी ॥ ३ ॥ विमलकम-
लदललोयणसुंदर, श्रीचक्केसरिदेवीजी ॥ नवपदसेवकभ-
विजनकेरां, विघ्नहरोसुरसेवीजी ॥ श्रीखरतरगच्छनायक
सद्गुरु, श्रीजिनभक्तिमुणिंदाजी ॥ तासुपसायेंइणपरि
पभणे, श्रीजिनलाभसूरिंदाजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीनवपद०॥

॥ अथपज्जूसणकीस्तुति ॥

॥ वलिवलिहुंध्यावुंगाउंजिनवरवीर, जिनपर्वपजूस-
ण, दाख्यांधरमनीशीर ॥ आषाढचौमासेंहुंतीदिनपचास
पडिक्कमणसंवच्छरीकरियेंत्रणउपवास ॥ १ ॥ चउवीशे
जिनवरपूजासत्तरप्रकार, करियेंभलेंभावेंभरियेंपुण्यभंडार॥
वलिचैत्यप्रवाडेंफिरतांलाभअनंत, इमपरवपजूसणसहुमेंम-
हिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तकपूजावीनववाचनायेंवंचाय, श्री-
कल्पसूत्रजिहांसुणतांपापपुलाय ॥ प्रतिदिनपरभावनाधू-
पअगरउक्खेव. इमभवियणप्राणीपरवपजूसणसेव ॥ ३ ॥
वलिसाहम्मीवच्छलकरियेंवारंवार, केइभावनाभावेंकेइतप-
सीशिलधार ॥ अडदीहपजूसणएमसेवतआणंद, सुयदेवी
सांनिधकहेजिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथनेमनाथजीकीस्तुति ॥

॥ सुरअसुरवंदियपायपंकजमयणमलअशोभितं, घनसघनस्यामशरीरसुंदरशंखलंछनशोभितं ॥ शिवादेविनंदनत्रिजगवंदनभविककमलदिनेश्वरं, गिरनारगिरिवरशिखरवंदूंनेमिनाथजिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदेंश्रीआदिजिनवरवीरजिनपावापुरें, वासुपूज्यचंपापुरियसीधानेमरेवायगिरिवरे ॥ समेतशिखरेंवीसजिनवरमुगतिपहुतामुनिवरू, चउवीसजिणवरतेहवंदुंसयलसंघेंसुखकरू ॥ २ ॥ इग्यारअंगउपांगबारेदशपयन्नाजाणियें, छच्छेदग्रंथप्रसत्थअत्थाचारमूलवखाणियें ॥ अनुयोगद्वारउदारनंदीसुत्रजिनमतगाइयें, एहवृत्तिचूर्णीभाष्यपेंतालीशआगमध्याइयें ॥३॥ दुहुंदिसेंबालकदोयजेहनेसदाभावियणसुखकरू, दुःखहरेंअंबालुंबसुंदरदुरियदोहगअपहरू ॥ गिरनारमंडणनेमिजिणवरचरणपंकजसेवियें, श्रीसंघसहुनेसदामंगलकरोअंबादेवीयें ॥ ४ ॥ इतिगिरनारमंडणश्रीनेमि० ॥

॥ अथदीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायांपुरिचारुषष्ठतपसापर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रमुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसेकार्ति-

कदर्शनागकरणेतूर्यारकांतेशुभे, स्नातौयःशिवमापपाप-रहितंसंस्तौमिवीरप्रभूम् ॥ १ ॥ यद्गर्भागमनोद्भवव्रतनवर-ज्ञानाक्षरासिक्षणे, संभूयाशुसुपर्वसंततिरहोचक्रेमहस्तत्क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्तेश्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसेविदधतांश्रेयांस्यनेनांसिच ॥ २ ॥ अर्थात्पुर्वमिदंजगादजिनपःश्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायकाविरचयांचक्रुनरांसूत्र तः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैक समयेसम्यग्दृशांभूस्पृशां,भूस्पृशां भूयाद्वाद्वकारकप्रवचनंचेतश्चमत्कारियत्॥३॥ श्रीतीर्थाधिपतीर्थभावनपरासिद्धायिकादेवता, चंचच्चक्रधरासुरासुरनतापायादपायादसौ ॥ अर्हन्श्रीजिनचंद्रगीस्सुमतिनोभव्यात्मनः प्राणिनो, यात्क्रेऽत्रमकष्टहरिनिधनेशार्दुलविक्रीभितम् ॥ ४ ॥ इतिदीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथपञ्चतिर्थीकास्तवन ॥

॥सुगुणसनेहीराजणश्रीसीमंधरस्वाम, अरजसुणो एकजगगुरुमुजआगाविशराम ॥ पुरवविदेहविजयभली पुष्कलावईनाम, जिहांविचरेजिनवरजीधनतेनेयरगाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोज गामिनी वाण,

धन्नतेमहियलचरणधरेजिहांजिनवरभाण ॥ धन्नतेभाविज
नजेरहेप्रभुताहरेपरसंग, वदनकमलनिरखीनित्यमाणेउच्छ
वअंग ॥ २ ॥ सुगुरुमुखेप्रभुसुजस तुहीगोमांमल्कान
मिलवानेउलसेंमनमाहरूंधरुंएकध्यान ॥ भगतिजुगति
करवानीछेमुजसघलीजोड; पणप्रभुलगपहुचीजेंनेहनहिं
पगदोड ॥ ३ ॥ आडाडुंगरअतिघणानिचवहेनदियांपूर,
किमप्रभुप्रथीअवरायेप्रभुजांएटलीदुर ॥ आंखडलीउलसी
करेजोयवासुखजिनराज, पांखडलीपाइनहिंविनाकिमसरे
काज ॥ ४ ॥ वाटलीवहतोकोईनामिलेसंमूसाथ, कागलियोलिखआपूंहुंजिमतेहनेहाथ ॥ जागूंशरीहरसाथेंकहुं
संदेशाजेह, पणअलगाथइऊपरिवाडेनिकलतेह ॥ ५ ॥
जोकोईरीतेंप्रभुजीतुमथीएथअराय, तोइणभरतनावासी
भविजनपावनथाय ॥ साहिबनीतोसुनजरसघलेसरिखी
होय, पणपोतानीप्राप्तिसारूफलपातिजोय ॥ ६ ॥ अलगो
छुंपणमाहरतुमशुंसाचीप्रीत, गुणगुणवंतनाआवेहियडे
खिणखिणचित्त ॥ हुंछुंसेवकतुंछेमाहरोआतमराम, नहिं-
धविसारुंजीवुंज्यांलगिताहरूंनाम ॥ ७ ॥ साचेदिलथी
धुंधरजोधरमसनेह, करुणाकरप्रभुकरजोमोपरिमहिर

अछेह ॥ दुसमकालतणोदु खटालोदीनदयाल, पालो विरुदसंभालोनिजसेवकशुंकृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलगथकीपणकरेअरदासप गमहोटानी महिरछनांनविथा- यनिराश ॥ केईवसेप्रभुपासेंकेईवसेंछेदुर, राजमहिरनी रीतेंसकलनेजाणेहजूर ॥ ९॥ शिवसुखदायकनायकला- यकस्वामिसुरंग, ध्यायक्ध्येयस्वरुपलहेनिजआतमउमंग ॥ साहिजेंएकपलकज्ञेथायेप्रभुतुझसंग. लाभउदयजिन चंद्रलहेनितप्रेमअभंग ॥ १० ॥ इतिश्री शीमंधरस्वामी स्तवनं ॥

॥ अथबीजक्रास्तवन ॥

॥ सफलसंसारअवतारएहुंगणुं, सामिसीमंधरातुह्म भगतेभणुं ॥ भेटवापायकमलभावहियडेघणो, करियसुप- सायजेवीनवुंनेसुणो ॥ १ ॥ तुहशुंकूडअरिहंतशुंराखियें, जिस्सोअछेतिसोकरजोडिकरिभाखियें॥आ्सिनलमुझहिये मोहमायाघणी, एकमनभगतिकिमकरुंत्रिभुवनधणी॥२॥ जीवआरतिकरेनवनवीपरिगडे,रीशचढकोचदेलोमवयरीनडे ॥ नयणरसवयणरसकामरसरसीयो, तेमअरिहंततूंहीयडेन विवसीयो ॥ ३॥ दिवसनेरातिहियडेअनेसेषरुं, मुदमन

रीझवावलियमायाकरूं।।तुंहीजअरिहंतजाणेजिस्योआचरुं, तेमकरजेमसंसारसागरतरुं ॥ ४ ॥ कम्मवासिसुखनेदुःख जेहुंसहुं, मनतणीवातअरिहंतकिणनेकहूं ॥ करिदयाकरि मयादेवकरुणापरा, दुःखहरिसुखकरिसामिसीमंधरा ॥ ५ ॥ ज्ञाणसंयोगआगमवयणपणसुणुं, धर्मनकरायप्रभुपापपोते घणुं ॥ एकअरिहंततूंदेवबीजोनहिं, एहआधारजगजा-णजोअह्मसही ॥ ६ ॥ धणकणधायापियपुत्तपरियगसहु, हस्योबोल्योरम्योरंगरातोबहु ॥ जजोजयोजगगुरुजीवजी-वनधरा, तूह्मसमोवडनहिंअवरवाल्हेसरा ॥ ७ ॥ अ-मियसमवाणिजाणुंसदासांभलुं, धारवरपरषदामांहिआवी मिलुं ॥ चित्तजाणुंसदासामिपायओलगुं, किमकरुंठाम दुंदरगिरिवेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिडामगतितुंचित्तहारे किस्ये, पुण्यसंयोगप्रभुदृष्टिगोचरहुस्ये ॥ जेहनेनामें मनवयणतनउल्लसे, दुरथीदुकडाजमाहियडवसे ॥९॥ भल भलोपणिसंसारसहुएअछे, सामिसीमंधरातेसवितुमपछे ॥ ध्यानकरतांसुपनमांहिआवीमिले, देखियेनयणतोचि-त्तअरतिटले ॥ १० ॥ सामसोहामणानामनगहगहे, तेहसुंनेहजेवालतुह्मजीकहे ॥ तुह्मपायभेटवाअतिघणोटल्ल

वलुं, ९खजोहोयतोमहिआनीमिलुं ॥११॥ मेरुगिरिलेव-
णीआभकागलकरुं, क्षीरसागरनणांदुधखडियाभरुं ॥ तुह
मिलवातणासामिसंदेशडा, ईद्रपणलखियनशकेअछेएवडा
॥ १२ ॥ आपणेंरंगभरिज्ञानमुखजेटली, ऊपजेसामि
नकहायमुखतेटली ॥ सुणोसीमंधरराजराजेसरा, लाड
नेकोडप्रभुपूरसविनाहरा ॥ १३ ॥ पुव्वभविमोहराशिनेह
हुवेजेहने. समरियेंएणिसंसारनिततेहने ॥ मेहनेमोरजिम
कमलभमरोरसे. तेमअरिहंतनुंचितमोरेंगमे ॥ १४ ॥
सकुं अरिहंतनुं ध्यान हियडेवस्युं, वापडुंपापहिवरांहि
यकरशेकिस्युं ॥ ठगजिमगुरुडनथंसीआवेन-ी
तनागिवसपेनीजानिनशकेरही ॥ १५ ॥ पापमे
कज्जमानज्जसहुपरिहरी, सामिसीमंधरातुहपयअणुसरी
॥ शुद्धचारित्रहियेंप्रभुपालशुं, दुखभंडारसंसारभपटा-
लशुं ॥ १६ ॥ तुहतुदामनुतहगेवकुसही. एहमेंवानअ-
रिहंतआगलकही ॥ एवडीगाहगभगानिजाणीकरी, आ-
पजोवापनी मारकेवलनही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एमरु-
ध्धिवृद्धिसमृद्धिकारणदुरितवारण, सुखकरो ॥ उवझायश्री
श्रीभक्तिलाभेंथुण्योश्रीसीमंधरो ॥ जयजयोजगगुरुजी

वजीवनकरासामिमयाधणी ॥ करजोडिवालिवालिवीनवुं प्रभुपूरआशामनतणी ॥ १८ ॥ इतिश्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥

॥ अथपंचमीवृद्धस्तवनप्रारंभः ॥

॥ प्रणमुंश्रीगुरुपाय, निर्मलज्ञानउपाय ॥ पांचमि तपभणुंए, जन्मसफलगिणुंए ॥ १ ॥ चउवीसमोजिनचंद, केवलज्ञानदिगंद ॥ त्रिगडेगहगहोए, भवियणने कह्योए ॥ २ ॥ ज्ञानवडूंसंसार, ज्ञानमुगतिदातार ॥ ज्ञानदीवोकह्योए, साचोसदह्योए ॥ ३ ॥ नयनलोचनसुविलास, लोकालोकप्रकाश ॥ ज्ञानविनापशुए, नरजाणेकिस्युंए ॥ अधिकआराधकजाण, भगवतीसूत्रप्रमाण ॥ ज्ञानीसर्वतुए, किरियादेशतुए ॥ ५ ॥ ज्ञानीश्वासोश्वास, करमकरेजेनास ॥ नारकीनेसहीए, कोडवरसकहीए ॥ ६ ॥ ज्ञानतणोअधिकार, बोल्यासुत्रमझार ॥ किरियाछेसहीए, पणपाछेकहीए ॥७॥ किरियासाहितजोज्ञान, हुवेतोअतिपरधान ॥ सोनोनेसुरोए, शंखदुधेभर्योए॥ ८ ॥ महानिशीथमझार; पांचमिअक्षरसार ॥ भग-

-वंतभांखीयोए, गणवरसाखिनोए ॥ ९ ॥

॥ ढालदुजी ॥ कालहरानीदेशी ॥

पांचमितपविधिसांभलो, जिमपामोभवपारोरे ॥ श्रीअरिहंतइमउपादिशे, भवियणनेहितकारोरे ॥ पां० ॥ ॥ १ ॥ मिगसरमाहफागुणभला, जेठअषाढवैशाखोरे ॥ इणपटमासेंलीजियें, शुभदिनसद्गुरुसाखोरे ॥ पां० ॥ ॥ २ ॥ देवजुहारिदेहरें, गीतारथगुरुवंदीरे ॥ पोथीपुजो ज्ञाननी,सगतिहुवेतोनंदीरे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बेकरजोडीभावशुंगुरुमुखकरोउपवासोरे ॥ पांचमिपडिक्कमणोकरो, पढो पंडितगुरुपासोरे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिणदिनपांचमितपकरो, तिणदिजआरंभटालोरे ॥ पांचमिस्तवनथुईकहो, ब्रह्मचरिजपिणपालोरे ॥ पां० ॥ पांचमासलघुपंचमी, जावजीवउत्कृष्टीरे ॥ पांचवरसपांचमासनी, पांचमिकरो शुभदृष्टिरे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढालत्रीजी ॥ उल्लालानीदेशी ॥

॥ हिवभवियणरेपांचमीउजमणोसुणो, घरसारुरे चारुधनखरचोघणो ॥ एअवसररेआवेंनांवलिदोहिलो, पुण्यजोगेंरेधनपामंतांसोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो

वलियवन्नपामतांपणधर्मकाजकिहांवली, पांचमींदिनगुरु पासआवीकीजीयेंकाउस्सग्गरली ॥ त्रणज्ञानदरिसणच- रणटीकीदेइपुस्तकपूजियें, थापनापहिलीपूजकेसरसुगुरु सेवाकीजियें ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनीरेपांचप्रतिवी- टांगणां, पांचपूंठारेपरवलसुत्रप्रमुखनणां ॥ पाचडोरारे लेखणपाचमजीसणा, वासकूंपारेकांबीवारुवरनणां ॥ उ- ल्लालो ॥ वतरणांवाकवलीहकभली पाचझिलमिलअति- भली, स्थापनाचारिजपाचज्ञगीमुहपत्तीपडपाटली ॥ प- टसुत्रपाटीपंचकोथलपंचनवकरवालियां, इणपरेंश्रावककरे पांचमजजनपुंउजवालियां ॥२॥ ढाल॥ वलिदेहरेरत्नत्रम- होतसवकीजियें, वरसाकरेदानवलीतिहांदीजियें ॥ प्रतिमा नीरेआगलढोवणुंढोइयें, पूजानीरेजेजेउपगरणजोइयें ॥ उ- ल्लालो॥ जोइएउपगरणदेवपुजाकाजकलशभृंगारए, आर- तिमंगलथालदीवोधूपधाणुंसारए ॥ घनसारकेशरअगरसु- खडअंगलूहणुंदीसए, पंचपंचसघलीवस्तुढोवोसगातिशुंप- चवीशए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिनारेसहाम्मीसवाज- माडियें, रातिजोगेरेगीतरसालगवाडियें ॥ इणकरणीरे करतांज्ञानआराधियें, ज्ञानदरिसणरेउत्तमसारगसाधियें

उरलालो ॥ सावियेंपारगएहकरणज्ञानलहियेंनिरमलो, सुरलोकनेनरलोकमांहेज्ञानवंततेआगलो ॥ अनुक्रमेंकेवलज्ञानपामीसासतांसुखजेलहे, जेकरेपांचमीनपअखंडितवीरजिणवरइपकहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एनपंचमीतप, फलप्ररूपक, वर्द्धमान, जिणेसरो ॥ मेंथुण्योश्री, अरिहंतभगवंत, अतुलवल, अलवेसरो ॥ जयवंतश्रीजिन, चंद सुरिज, सकलचंद, नमंसियो ॥ वाचनाचारिज, समयसुंदर, भगतिभाव, प्रसंसियो ॥ २५ ॥ इतिश्रीपंचमीवृद्ध स्तवनंसंपूर्णम् ॥

॥ अथपार्श्वजिनअथवालघुपंचमीस्तवन ॥

॥ पांचमितपतुमेंकरोरेप्राणी, निर्मलपामोज्ञानरे ॥ पहिलुंज्ञाननेंपछेंकिरिया, नहिकोइज्ञानसमानरे ॥ पां ॥ ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमेंज्ञानवखाण्युं, ज्ञाननापंचप्रकाररे ॥ मतिश्रुतअवधिअनेंमन.पर्यव, केवलज्ञानश्रीकाररे ॥ पा० ॥ २ ॥ मतिअठावीशश्रुतचवदेवीश, अवधिछअसंख्य प्रकाररे ॥ दोयभेदमनः पर्यवदाख्युं, केवलएक प्रकाररे ॥ पां ॥ ३ ॥ चंद्रसूरजग्रहनक्षत्रतारा, तेशुंतेज आकाशरे ॥ केवलज्ञानसमुं नहिकोई, लोकालोकप्रकाशरे

॥ पा० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथप्रसादकरीने, महारीपूरोउमेद रे ॥ समयसुंदरकहेहुंपणपामुं, ज्ञाननोपंचमोभेदरे ॥ पा० ॥ ५ ॥ इतिश्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

अमलकमलजिमधवलविराजे, गाजेगोडीपास ॥ सेवासारेजेहनी, सुरनरमनधरियउल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिबमेरावे, अरिहासुज्ञानीपासजिणंदावे ॥ एआंकणी ॥ सुंदरसूरतिमूरतिसोहे, मोमनअधिकसुहाय ॥ पलक पलकमेंपेखतांमानुं, नवनवियछबियदेखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भवदुःखभंजनजनमनरंजन, खंजन नयनशुरंग ॥ श्रवणसुणीगुणताहरा, माहरांविकस्यांअं-गोअंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकीहुंआयोवहिने, देवलह्योदीदार ॥ प्रारथियांपाछिडेनहिं, साहिबाएहउत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभुमुखचंदविलोकित हरषित, नाचतनयनचकोर ॥ कमलहसेरविदेखिने, जि-मजलधरआगममोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरिहरकिसकेब्रह्मा, किसकेदिलमेंराम ॥ मेरेमनमेंतुंवसे, साहिबाशिवसुखनोहीठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता

वामाधन्यपिताजसु, श्रीअश्वसेननरेश ॥ जनमपुरीवणारसी, धनधनकाशीनोदेश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवतसतरेशेंत्रवीशें, वदिवैशाखवखाण ॥ आठमदिनभले भावशुं, मारीजात्रचडीपरिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारीविघ्ननिवारी, परउपगारीपास ॥ श्रीजिनचंदजूहारतां, मोरीसफलफलीसहुआश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ९ इति ॥

॥ अथविमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घरअंगणसुरतरुफल्योजी, कवणकनकफलखाय ॥ गयवरबांध्योबारणेंजी, खरकिमआवेदाय ॥ १ ॥ विमलजिनमहारीतुह्मशुंप्रीति, सुरसफलंकितशुंमिल्यांजी, हियडुंहींसेकेम ॥ वि० ॥ २ ॥ मनगमतामेवालहीजी, कुणखलखावाजाय ॥ आदरसाहिबनोलहीजी, कुणल्ये रांकमनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्नछतेंकुणकाचनेंजी, अलवेपसरेहाथ ॥ कुणसुरतरुथीऊठिनेजीबावलघालेबाथवि० ॥ ४ ॥ देवअवरजोहुंकरुंजी, तोमभुतुमचीआण ॥ श्रीजिनराजभवोभवेंजी, तुंहिजदेवप्रमाण वि० ॥५॥ इति ॥

॥ अथएकादशीवृद्धस्तवनं ॥

समवसरणबेठाभगवंत, धरमप्रकाशेश्रीअरिहंत ॥
बारेपरखदाबेठीजुडी, मागशिरशुदिइग्यारशवडी ॥ १ ॥
मल्लिनाथनातीनकल्याण, जनम दीक्षानेकेवलज्ञान ॥
अरदीक्षालीधीरूवडी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिनेऊपनुंके-
वलज्ञान, पांचकल्याणअतिपरधान ॥ एतिथिनीमहिमा
एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांचभरतऐरवतइमहीज, पांचक-
कल्याणिकहुवातिमहीज ॥ पंचासनीसंख्यापरगडी ॥मा०
॥ ४ ॥ अतीतअनागतगणतांएम, दोढशेकल्याणक
थायेतेम ॥ कुगतिथछेएतिथिजेवडी॥ मा० ॥ ५ ॥ अनं
तचोवीशीइणपरेगिणो, लाभअनंतउपवासातणो ॥ एति-
थिसहुतिथिशिरराखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणेरह्याश्री-
मल्लिनाथ, एकदिवससंयमव्रतसाथ॥ मौनतणीपरीव्रनइ-
आपडी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठपुहरीपोसालीजियें, चो-
विहारविधिशुंकीजियें ॥ पणपरमादनकीजेंघडी ॥ मा०
॥ ८ ॥ वरसइग्यारकीजेंउपवास, जावजीवपणअधिक-
उल्हास ॥ एतिथिमोक्षतणीपावडी ॥ मा० ॥ ९॥ ऊज-
णुंकीजेश्रीकार, ज्ञाननांउपगरणइग्यारइग्यार ॥ करो-

काउसगगगुरुगयेपडी ॥ मा० १० ॥ देहरेखात्रकरीजें वली, पोथीपुजीजेंमनरली ॥ मुगतिपुरीकीजेंढुकडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौनइग्यारसमहोटुंपर्व. आराध्यांसुगल-हियेसर्व ॥ नपञ्चरकाणकरोआखडी ॥ मा० ॥१२॥ जे-मलशेलइनगशीसने, कीधुंस्तवनसहूमनगमे ॥ समय-सुंदरकहेकरोंद्याहडी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इतिश्री एकादशीवृद्ध० ॥

॥ अथश्रीपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ तुंमेरेमनमेंतुंमेरेदिलमें, ध्यानधरुंपलपलमें ॥ पामजिनेसरअन्तरजामी, मेवकरुंछिनछिनमें ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूकोमनतरुणीशुंगच्यो, काहूकोचित्तननमें ॥ तेरोमनप्रभुतुमहीशुंराच्यो, ज्युंचातकचितघनमें ॥ तुं ॥ २ ॥ जोगीमरनेरीगतिजाणे, अलखनिरंजनछिनमें ॥ कनककीर्त्तिसुखसागरतुमही, साहिबतीनभुवनमें ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथनिर्वाणकल्याणकस्तवन ॥

॥ मारगदेशकमोक्षनो, केवलज्ञाननिधान ॥ भा॥ वदयामागरप्रभुरे, परउपगारीमहानतेरे ॥ १ ॥ वीरप्रभु

मिद्धथया, संघसकलआधारोरे, हिवइणभरतमां ॥ कुग्र हरशेउपगारोरे, ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथविहूणूसैन्यज्युंरे, वीरविहूणोरेसंघ ॥ साधेकुणआधारथीरे, परमानंदअभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मातविहूणांबालज्युंरे, अरहांपरहां अथडाय ॥ वीरविहूणाजीवडारे, आकुलव्याकुलथायोरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशयछेदकवीरनोरे, विरहतेकेमखमाय ॥ जेदीठेसुखऊपजेरे, तेविणकिमरहिवायोरे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामकभवसमुद्रनोरे, भवअटवीसत्थवाह ॥ ते परमेसरविणमिल्यांरे किमवाधेउत्साहोरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकांपणश्रुततणोरे, हुंतोपरमआधार ॥ हमणांश्रुतआधारछेरे, एजिनआगमसारोरे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इणकाले सविजीवनेरे, आगमथीआनंद ॥ ध्यावोसेवोभविजनारे, जिनपडिमासुखकंदोरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधरआचारिज मुनिरे, सहुनेइणपरसिद्ध ॥ भवभवआगमसंगथीरे, देवचंद्रपदलीधोरे ॥वी०॥९॥ इतिनिर्वाणकल्याणक स्तव०॥

॥ अथश्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजयऋषभसमोसर्या, भलागुणभर्यारे॥ सिद्धासाधुअनंत, तीरथतेनमुंरे ॥ तीनकल्याणकतिहांथयां,

मुगनेंगयारे ॥ नेमीसरगिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एकदेहरो, गिरिसेहरोरे॥ भरतेंभराव्यांबिंब ॥ती०॥ आबु चौमुखअतिभलो, त्रिभुवनतिलोरे॥ विमलसवइवस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखरसोहामणो, रलियामणोरे ॥ सिद्धातीर्थंकरवीश ॥ती॥ नयरीचंपानिरखीयें, हैयेहरखीयेंरे ॥ सिद्धाश्रीवासुपूज्य ॥ती०॥३॥ पूर्वदिशेंपावापुरी, रुद्धेंभरीरे॥ मुक्तिगयामहावीर ॥ती०॥ जेसलमेरजुहारीयें दुःखवारीयेंरे॥ अरिहंतबिंबअनेक ॥ती०॥४॥ बिकानेरजं वंदीयें, चिरनंदीयेंरे ॥ अरिहंतदेहरांआठ ॥ती०॥ सोरि सरोसंखेसरो, पंचासरोरे ॥ फलोधीथंभणपास ॥ती॥५॥ अंतरिकअंजावरो, अमीझरोरे ॥ जीरावलोजगनाथ॥ ती० ॥ त्रैलोक्यदीपकदेहरो, जात्राकरोरे॥ राणपुरेंसिहेस॥ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाइजादवो, गोडीस्तवोरे श्रीवरकाणोपास॥ती० ॥ नंदीश्वरनांदेहरां, बावनभलांरे ॥रुचककुंडलचारचार ती० ॥ ७ ॥ शाश्वतीअशाश्वती, प्रतिमाछतीरे ॥ स्वर्गमृत्युपाताल ॥ ती० ॥ तीरथजात्राफलतिहां, होजोमुझइहांरे ॥ समयसुंदरकहे एम ॥ ती० ८ ॥

॥ अथसिद्धाचलस्तवनम् ॥

॥ आजआपेंचालोसहीयांसिद्धाचलगिरिजईयें ॥
सिद्धाचलगीरिजईएवहेनीविमलाचलगीरजईएरे ॥ आ०
॥ एगिरिनीमहिमा, आदिजिनंदइमभांखी ॥ भरतादि-
कनरपतिनेआगल, इंद्रादिकसहुसाखीरे ॥ आज०
॥ १ ॥ इणगिरिवरियेकालअनंते, साधुअनन्तासीधा
॥ जन्ममरणनांदुःखछोडीने, अमलअखयगुणलीधारे ॥
आ०॥२ इणगिरिसन्मुखपगलांभरतां, आतमशुद्धसुभावें
॥ कोडिभवांरापातककीधां, एकपलकमेंजावेंरे ॥ आ० ॥
॥ ३ ॥ सासतोतीरथएशेत्रुंजो, जोतांलागेमीठो ॥
तीनभुवनमेंइणगिरितोले, बीजोकोइनदीठोरे ॥ आ० ॥
॥ ४ ॥ नीरंजनशूंनेहधरीने, आगेंओलगकरस्यां ॥ अ
द्भुतआदिजिनेसरनिरखी, प्रेमसुधारसपीस्यारे ॥ आ०
॥ ५ ॥ पुहपसुगंधालेइपचरंगां, हारसुगंधागूंथी ॥ प-
हिरावीप्रभुकंठेलहिस्यां; शिवमारगनीसुथीरे ॥ आ०
॥ ६ ॥ गहिरस्वरेंजिनवरगुणगातां, जात्रनवाणुंकरियें
॥ मनगमतीभमतीविचभमतां, भवसायरनिसतरियें
रे ॥आ० ॥ ७ ॥ पुरनवाणूवारप्रथमाजिन, रायणरूंखे

आया ॥ एतीरथशुभभावेंफरसी, करियोंनिरमलकायारे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभउदेगणिरिवरलहियें, कहेइमकेवलनाणी ॥ श्रीजिनचंदसदाहितवत्सल, प्रेमघणेंचित्तआणीरे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इतिसिद्धाचलस्तवनम् ॥

॥ अथउपदेशमालापोस्टसिद्धायलि० ॥

॥ जगचूडामणिभूओ, उसभावीरोतिलोयसिरितिलओ ॥ एगोलोगाइच्चो, एगोचरकूतिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभजिणो, छम्मासेवद्धमाणजिणचंदो ॥ इइविहरियानिरसणा, जएज्जएओवमाणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइबहुयाइंअसरिसजणस्स ॥ इयजीयंनकराइं, एसखमासव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ नचइज्जइचालेउ, महइमहावद्धमाणजिणचंदो ॥ उवसग्गसहस्सेहिंवि, मेरु जहावायगुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दोविणीयविणओ, पढमगणहरोसमत्तसुयनाणी ॥ जाणंतोवितमच्छं, विम्हियहियओ सुणइसव्वं ॥ ५ ॥ जंआणवेइराया, पयइओतंसिरेणइच्छंति ॥ इयगुरुजणमुहभणियं, कयंजलिउडेहिसोयव्वं ॥ ६ ॥ जहसुरगणाणइंदो, गहगणतारागणाणजहचंदो॥ जहयपयाणनरिंदो, गणस्सविगुरुतहाणंदो ॥ ७ ॥ बा-

लुत्तिपह्लीपालो, नपयापरिहवइएसगुरुउवमा ॥ जंवापुर-
ओकाउं, विहरंतिमुणीतहासोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवोतेइस्सि,
जुगप्पहाणागमोमहुरवक्को ॥ गंभीरोधिइमंतो, उवएसपरो
यआयरिओ ॥ ९ ॥ अपरिस्सावीसोमो, संगहसीलो
अभिग्गहमईय ॥ अविकच्छणोअचवलो, पसंतहियओ
गुरूहोई ॥ १० ॥ कइयाविजिणवरिंदा, पत्ताअयरामरंपहं
दाउं ॥ आयरिएहिंपवयणं, धारिज्जइ पयंसयलं ॥११॥
अणुगम्मएभगवई, रायसुयज्जासहस्सवंदेहिं ॥ तहविन
करेइमाणं, परियच्छइतंतहानूणं ॥ १२ ॥ दिणदिक्खियस्स
दमग, स्सअभिमुहाअज्जचंदणाअज्जा ॥ नेच्छइआस-
णगहणं, सोविणओसव्वअज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससयादि
क्खियाए, अज्जाएअज्जदिक्खओसाहू ॥ अभिगमणवं-
दणनमं, सणेणविणएणसोपुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मोपुरिस-
प्पभवो, पुरिसवरदेसिओपुरिसजिठो ॥ लोएविपहुपुरिसो,
किंपुणलोगुत्तमेधम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो, तइया
वाणारसीइनयरीए ॥ कन्नासहस्समाहियं, आसीकिरस्स्व-
वंतीणं ॥ १६ ॥ तहवियसारायसिरी, उल्लट्टंतीनताइया
॥ उयरठिएणइक्के, पनाइयाअंगवीरेण ॥ १७ ॥

महिलाणखुवहुयाणवि, मज्जाओइहसमत्तघरसारो ॥ रा-
यपुरिसेहिनिज्जइ, जणेविपुरिसोजहिनच्छि ॥१८॥ कि
परजणवहुजाणा, वणाहिवरमप्पसखियंसुकयं ॥ इहमर-
हचक्कवट्टी, पसन्नचंदोयदिठंता ॥ १९ ॥ वेसोविअप्पमा-
णो, असंजमपएसुवट्टमाणस्स ॥ किंपरियत्तियवेसं, विसं
नमारेइखज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मंरक्खइवेसो, संकइवेसेणदि
क्खिओभिअहं ॥ उम्मग्गेणपडंतं, रक्खइरायाजणवओय,
॥ २१ ॥ अप्पाजाणइअप्पा, जहठिओअप्पसक्खिओ
धम्मो ॥ अप्पाकरेइतंतह, जहअप्पसुहावहंहोई ॥ २२ ॥
जंजंसमयंजीवो. आविस्सइजेणजेणभावेण ॥ सोतंमितं-
मिसमए, सुहासुहंबंधएकम्मं ॥ २३ ॥ धम्मोमएणहुंतो,
तोनविसीउन्हवायविज्झडिओ ॥ संवच्छरमणसीओ, वाहु-
बलीतहकिलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइविगप्पियचि, ति
एगसच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइगुरुअ-
णुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धोनिरोवयारी, अविणीओ, ग-
व्विओनिरवणामो ॥ साहुजणस्सगरहिओ, जणेवि वय-
णिज्जयंलहइ ॥२६॥ थोवेणविसप्पुरिसा, सणंकुमारुव्व
केइबुज्झंति ॥ देहक्खणपरिहाणी, जंकिरदेवेहिसेकहियं

॥ २७ ॥ जइतालवसत्तमसुर, विमाणवासीविपरिवडांति सुरा ॥ चिंतिज्जंतंसेस, संसारेसासयंकयरं ॥ २८ ॥ कहतंभन्नइसुख्खं, सुचिरेणविजस्सदुख्खमल्लिहियए ॥ जंचमरणावसाणे, भवसंसाराणुबंधिंच ॥ २९ ॥ उवएससहस्सेहिं, बोहिज्जंतोनबुज्झईकोई ॥ जहबंभदत्तराया, उदाइनिवमारओचेव ॥ ३० ॥ गयकन्नचंचलाए, अपरिच्चत्ताइरायलच्छीए ॥ जीवासकम्मकलिमल, भरियभरातो पडंतिअहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणविजीवाणं, सदुक्कराइंतिपावचरियाइं ॥ भयवंजासासासा पच्चाएसोहुइणमोते ॥३२॥ पडिवज्जिऊणदोसे. नियएसम्मंचपायवडियाए ॥ तोकिरमिगावईएउप्पन्नंकेवलंनाणं ॥ ३३॥ इतिपोसहसिज्झा०॥

॥ अथराईसंथारापोसहसिज्झा० ॥

॥ निस्सिहीनिस्सिहीनमोखमासमणाणं, गायमाईणं ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहियें. अणुजाणहजिठ्ठिज्ज, ॥ अणुजाणहपरमगुरु, गुणगणरयणेहिंमंडिअसरीरा ॥ बहुपडिपून्नापोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणहसंथारं, बाहुवहाणेणवामपासेणं ॥ कुक्कुडपायपसारण, अंतरंतुपमज्जएभूमिं ॥ २ ॥ सं-

कोइयसंडासं, उवर्ट्टतेयकायपडिलेहा ॥ दव्वाइउवओगं, ऊसासनिरुंभणालोयं ॥ ३ ॥ जइमेहुज्जपमाओ, इमस्सदेहस्सिमाइरयणीए । आहारमुवहिदेहं, सव्वंतिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसवकसायवंधण, कलहाभख्खाणपरप रीवाओ । अरइरईपेसुन्नं, मायामोसंचामिच्छत्तं । ५ । वोसिरिसुइमाइंमु, ख्खमग्गसंसग्गविग्घभूआइं ॥ दुग्गइनिवंधणाइं, अठारसपावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहंनथ्थिमेकोइ, नाहमन्नस्सकस्सवि । एवंअदीणमणसो, अप्पाणमणुमासए ॥ ७ ॥ एगोमेसासओअप्पा, नाणदंसणसंजुओ । सेसामेवाहिराभावा, सव्वेसंजोगलख्खणा ॥ ८ ॥ संजोगमुलाजीवेण, पत्तादुख्खपरंपरा । तह्मासंजोगसंवंधं, सव्वंतिविहेणवोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवंसुसाहुणोगुरुणो । जिणपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं, अरिहंतामंगलं, सिद्धामंगलं. साहूमंगलं, केवलिपन्नत्तोधम्मोमंगलं, चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंतालोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तोधम्मोलोगुत्तमो ॥ चत्तारिसरणंपवज्जामि, अरिहंतेसरणंपवज्जामि, सिद्धेसरणंपवज्जामिसाहुस

रणंपवज्जामि, केवलिपन्नत्तंधम्मंसरणंपवज्जामि ॥ अरिहंतामंगलंमज्झ, अरिहंतामज्झदेवया॥ अरिहंताकितेअत्ताणं, वोसिरामित्तिपावगं ॥ १ ॥ सिद्धायमंगलंमज्झ, सिद्धायमज्झदेवया ॥ सिद्धायकितिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरियामंगलंमज्झ, आयरियामज्झदेवया ॥ आयरियाकित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्तिपावगं ॥ ३ ॥ उवज्झायामंगलज्झ, उवज्झयामज्झदेवया । उवज्झोयाकित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्तिपावगं ॥ ४ ॥ साहुणोमंगलंमज्झ, साहुणोमज्झदेवया ॥ साहुणो कितिअत्ताणं, वोसिरामित्तिपावगं ॥ ५ ॥ पुढविदगअगणिमारुय, इक्किकेसत्तजोणिलक्खाओ । वणपत्तेय अणंते, दसचउदसजोणिलक्खाओ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसुदोदो, चउरोयनारयसुरेसु । तिरिएसूहुंतिचउरो, चउदसलक्खायमणुएसु । २ । खामेमिसव्वजीवे, सव्वेजीवाखमंतु मे ॥ मित्तीमेसव्वभूएसु, वेरंमज्झनकेणवि ॥ ३ ॥ एवमहंआलोइअ, निंदिअगरहिअदुगंछिअंसम्मंतिविहेणपडिकंतो, वंदामिजिणेचउव्वीसं ॥ ४ ॥ खामिअखमाविअमइखमिअ, सव्वह जीवनिकाय ॥ सिद्धहसाखआलोयणह, मज्झहवेरनभाय

॥ ५ ॥ सव्वेजविाकम्मवसु, चउदहराजभमंतु ॥ तेमइसव्वखमाविया मज्झवितेहखमंतु ॥ ६ ॥ इति राईसंथारागाथा स० ॥

॥ अथनिंदावारकसज्झाय ॥

॥ निंदामकरजोकोइनीपारकीरे, निंदानांबोल्यांमहापापरे ॥ वयरविरोधवाधेघणोरे, निंदाकरतांनगणेमायबापरे ॥ नि० ॥ दूरबलंतीकांदेखोतुम्हेरे, पगमांबलती देखोसहुकोयरे ॥ परनामेलमांधोयांलूगडांरे, कहोकेमऊजलांहोयरे ॥ नि० ॥ २ ॥ आपसंभालोसहुकोआपणोरे निंदानीमूकोपरीटेवरे ॥ थोडेघणेअवगुणेसहुभर्यारे केहनांनलीयांचुएकेहनांनेवरे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदाकरेतेथायेनारकीरे, तपजपकीधुंसहुजायरे ॥ निंदाकरोतोकरजो आपणीरे, जेमछुटकबारोथायरे ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुणग्रह जोसहुकोतणोरे, जेहमांदेखोएकविचाररे ॥ कृष्णपरेसुख पामशोरे, समयसुंदरसुखकाररे ॥ नि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथसीतासिज्झायलिख्यते ॥

॥ जलजलतीमिलतीघणीरे, झालीझालअपाररे ॥ सुजाणसीता ॥ जाणेकेसूफूलियांरेलाल. रातासेरअङ्गाररे

॥ सु० ॥ १ ॥ धीजकरेसीतासतीरेलाल ॥ शीलतणप-
रिमाणरे ॥ सु० ॥ लक्ष्मणरामखुशीथयारेलाल, निरखे
राणोराणरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नानकरीनिरमलजलेंरेलाल,
पावकपांसेंआयरे ॥ सु० ॥ ऊभीजाणेसुराङ्गनारेलाल,
अनुपमरूपदिखायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नरनारीमिलियांघ-
णांरेलाल, ऊभाकरेहायहायरे ॥ सु० ॥ भस्महुशीइण
आगमेरेलाल, रामकरेअन्यायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव
बिनवांछ्योहुवेरेलाल, सुपनेहीनहिंकोयरे ॥ सु० ॥ तो
मुझअगनमजालजोरेलाल, नहिंतोपाणीहोयरे ॥ सु० ॥
५ ॥ इमकहिपेठीआगमेंरेलाल, तुरतअगनथयानीररे ॥
सु० ॥ जाणेद्रहजलशुभस्योरेलाल, झीलेधरमसुधीररे ॥
सु० ॥ ६ ॥ देवकुसुमवरषाकरेरेलाल, एहसतीशिरदासे
॥ सु० ॥ सीताधीजेंऊतरीरेलाल, साखभरेसंसाररे ॥ सु०
॥ ७ ॥ रलियायतसहुकोथयांरेलाल, सघलेथयाउछरंगरे
॥ सु० ॥ लक्ष्मणरामखुशीथयारेलाल, सीताशीलसुरंगरे
॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहेजसजेहनोरेलाल, अविचलशी-
लकहायरे ॥ सु० ॥ कहेंजिनहर्षसतीतणारेलाल, नित
प्रणमीजेंपायरे ॥ सु० ॥ ९ इतिसीतासतीसिज्झाय

समाप्त ॥

॥ अथअनाथीरुषिसिझाय ॥

श्रेणिकरयवाडीचढ्यो, पेखियोमुनीएकंत ॥ वररुपकांते मोहियो, रायपूछेरेकहोविरवंत ॥ १ ॥ श्रेणिकरायहुंरेअनाथीनिर्ग्रंथ ॥ तिणमेंलीधोरेसाधुजीनोपंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इणकोसंबीनगरीवसे, मुझपितापरिगलधन्न॥ परवारपरंपरवस्यो, हुंछुंतेहनोरेपुत्ररतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इकदिवसमुझवेदना, ऊपनीतेनखमाय ॥ मातपितासहु जूरीरह्या, तोहीपणरेसमाधिनथाय ॥श्रे०॥ ३ ॥ गोरडी गुणमनओरडी, ओरडीअबलानार ॥ कोरडीपीडामेंसही, नहिकीधीरेमोरडीसार ॥ श्रे० ॥ बहुराजवैद्यबुलाइया, कीधलाकोडीउपाय ॥ बावनाचंदनलेइया, पणतोहीरेदाह नविजाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदनाजोमुझउपशमे, तोलेउं संजमभार ॥ इमचितवतांवेदनगई, व्रतलीधोरेहरषअपार ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहेकोकेहनोनहि, तेभणीहुंरेअनाथ ॥ वीतरागनोधरमवाहगे, कोइनहीरेमुगतिनोसाथ ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कररजोडीराजागुणस्तवे, धनधनतुंअनगार॥ श्रेणिकसमकितनिहालहे, वांदीपहुचेरेसुरगमझार ॥ श्रे०

॥ ८ ॥ मुनिवरअनाथीगावतां, कर्मनीतूटेकोडी ॥ गणि समयसुंदरतेहना, पायवांदेवेकरजोडी ॥श्रे०॥९॥इति॥

॥ अथप्रतिक्रमणसिज्झाय ॥

॥ करपडिक्कमणोभावशु, दोयघडीशुभध्यान ॥ लालरे ॥ परभवजाताजीवनें, संबलसाचुंजाण ॥लालरे॥ १ ॥ करपडिक्कमणुभावशु ॥ एआंकणी ॥ श्रीमुखवीरस-मुच्चरे, श्रेणिकरायप्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाखखंडीसोना-तणी, दीयेदिनप्रतिदान ॥ ला० ॥ २ ॥कर०॥ लाख वरसलगतेवली, एमदीयेद्रव्यअपार ॥ ला० ॥ इकसा-मायिकनीतुला, नावेतेहलगार ॥ ला० ॥ ३ ॥कर०॥ सामायिकचउविसथ्थो, वदेवंदनदोयदोयवार ॥लालरे॥ व्रतसंभारोरेआपणां, तेभवकर्मनिवार ॥ लालरे ॥ ४ ॥ कर० ॥ करकाउस्सग्गशुभध्यानथी, पच्चख्खाणसूधुंवि-चार, ।लालरे। दोयसज्झायेंतेवली, टालोटालोअतिचार । लालरे ॥ ५ ॥ कर० । सामायिकपरसादथी, लहीयें अमरविमान । ला० । धरमसिंहमुनिवरकहे, मुगतितणुं एनिदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इतिप्रतिक्रमणसि-ज्झाय सं० ॥

॥ अथमंगलिकसरणांलिख्यते ॥

॥ महउठीनेसमरिजेंहो ॥ भवियणमंगालिकसरणांचार । आपदाटालेसंपदाहो ॥ भ० ॥ दोलतनो दातार । हियडेराखिजेंहो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंता सिद्धसाधुतणीहो । भ० । केवलिभांख्योधर्म । एचारूजपतांथकांहो ॥ भ० । टुटेआठुंकर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ एचारुंसुखकारिहो । भ० । एचारूमङ्गलिक । एचारुंउत्तमकह्यां हो ॥ भ० ॥ एचारुंतहर्नाकहो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेलेघाटें चालतांहो ॥ भ० ॥ समरुंवारंवार । गामेनगरेंचालतां हो ॥ भ० ॥ विघननिवारणहार ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकणसाकणभूतडांहो । भ० । सिहचित्तानेसूर । वेरीदुसमनचोरटाहो ॥ भ० ॥ रहेसदाइदुर ॥ हि० ॥ ५ ॥ सुखशाताघरलेघणीहो ॥ भ० ॥ जेध्यावेनरनार ॥ परभवजातांजीवनेहो ॥ भ० ॥ सरणांकोआधार । हि० । ६ । राखोसरणाकीआसनाहो ॥ भ० ॥ नेडोनहिआवेरोग । वरतेआनंदसुखसहींहो ॥ भ० ॥ वालातणोसंयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिनयाकुंध्यावतांहो । भ० । जीवतणोउद्धार । कर्मानाहिंकोडररतनूहा ॥ भ० ॥ याहि

जगमेंसार । हि० । ८ । मनाचिंतामनोरथफलेहो ॥ भ० वरतेकोडकल्याण । शुद्धमनेंकरीसमरतांहो । भ० । निश्चेंपदनिर्वाण । हि० ॥ ९ ॥ एसरणानेंध्यावतांहो । भ० । नामतणोआधार । एसरणाकीकीरतिकहीहो । भ० । ध्यावोमनहमझार ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत्अठारेबावनेहो । भ० । पालिसहेरसुखकार । चोथमल्लइमवीनवेहो । भ० । सुनजोबालगोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इतिश्रीमांगलिकसरणां ॥

॥ अथनेमजिनपदं ॥

॥ ठुमरी ॥ रागजंगलो ॥ सुणोसुजाणनेमजी, द्वारेमेंखडीपुकारुंनेमतुंहीतुंहीं ॥ सु० ॥ अरजकरतहुंमे पईयांपरतहुं, ईतनीअरजमेरीमानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिनअवगुणक्युंतजोमेरेसाहेब, नेहनजरमोपेंडारो ॥सु०॥ । २ । हरखचंदनेमीराजेसर, हुंभवभवकीचेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथनेमजिनपदं ॥

॥ रागभैरवी । नेमजिणंदजीसेंआंखडीली, मोरी रेनदिवसानितलगरहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली

आयेउनदोस्तीकीनी, लेर्पाछैछिठकायदई रे। पसुअनपर भभुदयाकरीने, सिवरमणीतेंवरलेइरे ॥ ने० ॥ मो० ॥२॥ केईभविकरसनाकरदोस्ती, रत्नविमलपदपायलईरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथपदं ॥

॥ रागभैरवी । रानगईअवप्रातहोनभयो, क्या सोयेजियाजागरे ॥ रा० ॥ दोयघडीतडकोअवरहियो, ऊठधरममेंलागरे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणीउरवीचधारले, ओरभरमसवत्यागरे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंदसुगुरुवंचन हितमानो, एसुधोशिवमागरे॥ रा० ॥ ३ ॥

॥ अथपदं ॥

। रागभैरवी । तुमविनदीनानाथदयानिधि, कोन-खवरलेमेरीरे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमतफिरयोसंसारजगतमें, मेठोभवदीफेरीरे ॥ तु० ॥ २ ॥ भवभवकेप्रभुतुमजग-नायक, राखोशरणेंतेरीरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदयआशरो पकड्योतेरो, सरणग्रहीमेंतेरीरे ॥ तु० ॥ ४ ॥

॥ अथअष्टापदगिरिस्तवनम् ॥

॥ मनडोअष्टापदमोनोमाहरोजी, नामजपूंनिशि-

दीसजी । चत्तारीअठ्ठदसदोयवंदीयाजी, चिहुंदिशिजिन चोवीशजी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजनजोजनअंतरेजी, पानडशालाआठजी । आठजोजनउंचुदेहरुंजी, दुःखदोहग जायेनाठजी ॥ म० ॥ २ ॥ भरतभरायांभलांदेहरांजी, मोभांयरांथूभजी । आपमूरतसेवाकरेजी, जागजोईनेऊमजी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामीतिहांचढ्याजी, वली भागीरथगंगाजी । गोत्रतीर्थकरबांधीयांजी, जाणेजोईजे ऊमजी ॥ म० ॥ ४ ॥ देवनदीवीमुझनेपांखडीजी, आडुंकमहदूरजी । समयसुंदरकहेवंदनाजी, महउगमतेसूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ सुणअरदासासुगुणनिवासा, अमचीपूरोप्रभूआशाराज । सु । देखिउदासाअपणादासा, दीजेकछुकदिलासाराज ॥ सु० ॥ १ ॥ चाडीचटकीभवमांहिभटकी, माच्योसेंविधनटकीराज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवेमनहटकी, आपशुंअटकी, लागुंप्रभुपयलटकीराज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तेहमटालीसुगतसंभाली, प्रीतअमोंहिजपालीराज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एकहथालीवाजेताली, बानअचंभावालीराज ॥ सु०

॥ ५ ॥ परउपगारीपासतुमारी, से ामिंव नसारीराज ॥सु॰ ॥ ६ ॥ तत्त्वविचारीमनशुद्धधारी, श्रीधर्मसीसुखकारी-राज ॥ सु॰ ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथशंखेश्वरस्तवनम् ॥

॥ अंतरजामीसुणअलवेसर, नहि ात्रिजगतुमारो । सांभलीनेआव्योतुमतीरें, जनमजरमभयवारो ॥ १ ॥ सेवकअरजकरेछेराज, अमनोा सुखआलो । एआंकणी । सहुकोनांमनवांछितपूरो, चिंतानहुनीचुरो ॥ एहनिरुदछे राजतुमारुं, किमराखोछोदुरो ॥ सेवक॰ ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतोदेखी, मनमांमहेरनधरशो । करुणासागरकेम कहेवाशो, जोउपगारनकरशो ॥ सेवक॰ ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवेकामनहीछे, परतक्षदरिसणदीजें । धूंआडेधीजुंनहीसा-हिब, पेटपड्यापतीजें ॥ सेवक॰ ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसरमंडण साहिब, वीनतडीअवधारो । कहेजिनहर्षमयाकरीमुझने, भवसायरथीतारो ॥ सेवक॰ ॥ ५ ॥

॥ अथपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ प्राणपीयाराजीहोपासजी, किममेलुंकिरतार । जिनेसर । साहेबवसीयाजीहोशिवपुरी, हुंछुभरतमझार

।जि०।प्राण० ॥ १ ॥ आहोअंतरजीहोअतिघणो, सेंगु नमिलेसाथ । जि०। लिखसंदेशाजीहोलाडला, कागल घुंकिणहाथ । जि०। प्राण० ॥२॥ रमताथेंमेंजीहोएकठा, दिनमेंदशदशवार । जि०। केइकदिनलगजीहोएकठा, मिलताघणीमनुहार । जि० । प्राण० ॥३॥ अबतोमील- णोजीहोअवसर, मीलसेसुकृतसंयोग । जि० । पणक्षण क्षणजीहोसांभरे, वालातणोरेविजोग । जि० । प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यांजिणदिनजीहोमनरली, फलशेतेदिन आश । जि० । चंदमुनिंदकहेजीहोचित्तमें, वसजोप्रभु सुखवास । जि० । प्राण० ॥ ५ ॥

॥ अथपद । राजाहुंमेंकोमका । एदेशी ॥

॥ प्रहउठीमेंसदानमुं, हाथजोडकेसाम । चोवीशे जिनराजकुंहुं, नित्यकरुंपरणाम ॥ १ ॥ रिषभअजितसं- भवअभिनंदन, औरसुमतिजिनराज । पद्मसुपार्श्वचंद्रा प्रभुसें, लगनलगीहेआज ॥ २ ॥ सुविधिशीतलश्रेयांस सवाइ, दीजेंमुक्तिनाथ । वासुपूज्यजिनबारमा, विमल- अनंतनाथ ॥ ३ ॥ धर्मशांतिअरुकुंथुजिनेश्वर, अरमल्ली महाराज ॥ मुनिसुव्रतनमिनेमजी, पार्श्ववीरजिनराज ॥

॥ ४ ॥ कहेपाठककल्यानकी, निधानपूरोआश । कर जोडीगुणगावतां, चंदगोपालदास

॥ पद । अरेलालदेवइसतरफजलदीया । एरागमां॥

॥ गइथीगइथीमेंमंदिरआज, वां बेठेथेश्रीजिनराज ॥ १ ॥ क्हाकहूंआंगीकीअजबबाहार, मनप्रसन्नभयाप्रभुकूं निहार ॥ २ ॥ मस्तकमेंशोहेमुकुटअतिसार, कानोंमेंकुंडलकाहेझलकार ॥ ३ ॥ गलेबिचमालाशोहेमोतिकी, बाजुकडांकंठासोहेनीकी ॥ ४ ॥ सोनेकेसिंहासनपरबेठेहे राज, फुलूंकासुगंधभयाअतिआज ॥५॥ ऐसेंसाहेबसंभवजिनराज, करुंमेंप्रणामपूरोमनकाज ॥ ६ ॥ 'कल्याण निधानकीपूरोआश, चंदगोपालतुमारोहेदास ॥७॥इति॥

॥सिरपेंआखोपेंगलेपेंबिछाउंतुझकुं । एरागमां ॥

॥ चिंतामणिपार्श्वप्रभुअरजकरुंमेंतुझकुं, अबमेरी अरजसुनीपारउतारोमुझकुं ॥ १ ॥ शत्रुमेरेअष्टकर्मोनेफंदेमेफसायामुझकुं, तुमबिनऔरनहीफंदछोडावेमुझकुं ॥२॥ ज्ञानध्यानतपजपनहीउदयेंआवेमुझकुं । एकतेरानामका आधारप्रभुहैमुझकुं ॥३॥ नरनारिसुखरनित्यनमेंहैतुझकुं, मेरामनमेंतोप्रभुध्यानधरुंमेंतुझकुं॥४॥ कल्याननिधानप्रभु

अरजकरैहैतुझकुं, चंदगोपालकहेदरसदेखावोमुझकुं ॥५॥

॥ पद । ठुमरी । छल्लाहमारायादरखनां । एदेशी ॥

॥ प्रभुनामकूंयादकरनां, यादकरनांनहीबिसरनां । प्र० । एटेक । जिनवरजीसेंध्यानलगायकें, आतममें- लकोंनिरमलकरनां ॥प्र०॥१॥ तीनतत्त्वकाध्यानधरिकें, चारखोकडीकूंपरिहरनां ॥ प्र० ॥ २ ॥ तनधनयौवनसब हैजुठा, इनकोंदिलमेंखूबसमजनां ॥ प्र० ॥ ३ ॥ शिव पदकीचाहाहोवेतो, समकितबीजहृदयमेंरखनां ॥प्र०॥ ४॥ चंदगोपालकीआशापूरीजें, अबमेंआयोआपकेसरनां ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद । ठुमरी । लागनापानीहूरखनां जिइयोरे । एरागमा ॥

॥ प्रभुकाध्यानधरोतुमेंप्यारे । प्र० । एटेक । प्रभुजी- केनामसेंपापकटतहे, अशुभकरमदूरजावेरे ॥ प्र० ॥ १॥ याजगतमेंऔरकोईनहीं हे, एकेप्रभुजीकहावेरे ॥प्र०॥ २॥ मातापितासबसुखकेसाथी, दुःखमेंकोईनआवेरे ॥प्र०॥ ३॥ यादुनियांकीजुठीहैमाया, जुठाजालफेलावेरे । कल्यानजि- नीआसपूरीजें, चंदगोपालगुनगावेरे ॥प्र०॥४॥इति॥

॥ पद । मरुंछुंवेरीहाथथी । एरागमां ॥

॥ प्रणामहोजोप्रभुने, महाराजकूंप्रणाम । महाराजकूंप्रणामहेजिनराजकूंप्रणाम । प्र० । एटेक । प्रथमआदिनाथकूंमै, अरजकरुंसार । दुःखकीमेंवातकहुं, करीनें प्रणाम ॥ प्र० ॥१॥ मुझकोंदुःखदेवेंवहु, कर्मशत्रुराय । इनकोंदुरकीजियें, करुंमेंप्रणाम ॥ प्र० ॥ २ ॥ आपकों मैंध्यानधरुं, औरनहिध्यान । पूजाकरुंनृत्यकरुं, करुंवहु प्रणाम ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपाकरीमुझकों, पूरोमेरीआस । दुसमनोकोंदुरकरो, करुंनितप्रणाम ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसंघकीआशापूरो, गुनपद्मदास । जैनप्रकाशमंडलीको, मानोवहुप्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद । कहुंछुंनसीवेदुःखीयोकीधोछे । एराग ॥

॥ किसपरमानगुमानकरीजें, एकप्रभुजीकोध्यान धरीजें । किस० । एटेक । जोवनजोरमायाकेनसेमें, भूलगयेतुमगुरुएकपलमें । किस० ।१। क्रोधकूपमेंपडकेगमारा, एकउपायनशोधुंतुमारा । कि० ।२। लोभलुगाइसेमोहपायकें, वहोतदुःखीहुओनरकजायकें । कि० । पांचमित्रके फंदमेंपडके, वारंवारतलक्षभमीके । कि० । ४ । इनकुंछोड

तुमध्यानलगावो, अजरअमरसुखसहजमेंपावो । कि० । ५ । चंदगोपालकीआसपूरीजें, जैनप्रकाशकगुनगाईजें । कि० । ६ ।

॥ अथसुमतिजिनस्तवनम् ॥

॥ महाराजवधाईवाजेछे । जिनराजवधाइवाजेछे । नगरअयोध्यामाहे, मेघघरआजवधाईवाजेछे। एटेक । मातसुमंगलाजनमियरे, सुमतिनाथसुखकार ॥ सुमतिभईसहुदेशमेंरे, प्रगटभयोजयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इद्रादिकसहुसुरमल्यारे, मेरुशिखरपरआय । मज्जनपूजनवहुविधेरे, थिरकरिमनवचकाय ॥ व० । २ । घरघररंगवधामणारे, घरघरमंगलचार । बालचंद्रप्रभुजनमियारे, सकलसंघसुखकार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ श्रीदादाजीकोस्तवनप्रारंभः ॥

॥ विलसेरुद्धिसमृद्धिमिली, शुभयोगेंपुण्यदशासफली । जिनकुशलसुरिगुरुअतुलबली, मनवांछितआपदादोरंगरली ॥ १ ॥ मंगललीलसमेंविपुला, नवनवयमहोच्छवराज्यकला । सुपसायेंगुरुचढतीकला, सुकुलिणीपुत्रवतीमहिला ॥ २ ॥ सवहींदिनथायेसबला, सदचा-

सकपूरतणाकुरला। हयगयरथपायकबहुला, कल्लोलक-
रमंदिरकमला ॥ ३ ॥ वींझेचमरानिसाणधुरे, नरवेदखार
खडापुहरे । जयजयकरजोडीउच्चरे, सांनिध्यगुरुसवकाज
सरे । ४ । सरसाभोजनपानसदा, दुःखरोगदुकालनहो-
यकदा । अविचलऊलटअंगमुदा, गुरुपरमदृष्टिप्रसन्नस-
दा ॥ ५ ॥ घमघममादलनादघुमे, नर्तासेनाटकरङ्गरमे।
प्रगट्योपुण्यप्रतापहमें, सबलाअरियणतेआयनमे । ६ ।
तनसुखमनसुखचीरतने, पहिरेवलाउलहोयरने ॥ ध्यावो
कुशलगुरुएकमने, जूंभकसुरमंदिरभरेधने ॥ ७ ॥ तत-
खिणघणखंच्योआवे, करिग्यामघटामेहवरसावे । तिसी-
यांतोयतुरतपावे, जलदानात्रिजगसुजसगावे ॥ ८ ॥
लहिरांजलकल्लोलकरे, प्रवहणभवसायरमज्झिडरे । बूड-
तांबाहणजेममरे, ते आपदनिश्चेसुंउवरे ॥ ९ ॥ खडखड
खडगप्रहारखहे, सौदामिनीजिमसममेलसहे । कुशल
कुशलगुरुनामकहे. नेखेमकुशलारिणमज्झलहे ॥ १० ॥
थंभण्कलपम्चापुरे, श्रीनागपुरेसंकटचूरे । मंगलोअधि-
कनूरे, देरावरभयटालेदूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुरवानसुधरे,
संभाइतपुरनिकमनयरे । जिणचंदसूरिपाटेपवर, जसुकी-

रतिमाहिमंडलपसरे । १२ । पूरवपश्चिमदक्षिणआगें, उत्त-रगुरुदीपेसोभागें । दहदिशिजनसेवामागे, श्रीखरतरगच्छमाहिमाजागे । १३ । पुरपट्टणजनपदठामें, गाईजेंकुशलनयरगामे । पूजेजेनरहितकामें, तेचक्रवर्तिपदवीपामे ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरिसाखें, सेवकजननेंसुखियारा... । समस्तागुरुदरिसणदाखे, श्रीसाधुकीरतिपाठकभांखे ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथगुरुदेवजीकास्तवन ॥ रागप्रभाती ॥

॥ श्रीजिनदत्तसूरिंदा, परमगुरु ॥ श्रीजि० ॥ परमदयालदयाकरदीजें, दरिसनपरमआनंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ जंगमसुरतरुवंछितदायक, सेवकजनसुखकंदा । सद्गुरुध्याननामानितसमरण, दुरहरणदुःखदंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ निजपदसेवकसांनिधकारी, राखीयेंगुरुराजिंदा । करजोडीविनययुताविनवे, श्रीजिनहरखसुरिंदा ॥ प० ॥ ॥ श्री० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ तालठुमरी ॥

॥ सदासाहईकुशलसुरिंद, गुरुद्योदोलतगुरुरायजी । सदा० खाईनखुटेखरचीनतुटे, दिनदिनवधेसवाय

जी। स० । १ । सकजासुतओरसुंदरनारी; शुभपरिकर सुखदायजी ॥ स० ॥ मित्रससागमसुजसवधारण, नित प्रतिहरषउत्साहजी ॥ स० ॥२॥ राजापरजापायनमेसहु, गुरुसमरणसुपसायजी । स० । दोषीदुशमननृपभयपडि- यां, सद्गुरुकरयसहायजी ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमीविरि- यांसंकटपडियां, समस्यांआवेधायजी । स० । भूख्यांभो- जनतिसियांपाणी, निरधनियांधनदायजी ॥ स० ॥ ४॥ संघसकलनेंद्योसुखशाता, जिमकीरतजगथायजी । स० । थानकथिरतापरिगलभोजन, पगपगकुशलसहायजी ॥ स० ॥ ५ ॥ अभयमहासुखदाईसदगुरु, नवनिधिवंछित थायजी । स० । सुमतिसवाईनितघरसंपद, दानविशाल लहायजी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ परममंगलश्रीदादाजीकाव्यानि ॥

॥दासानुदासाइवसर्वदेवा,यदीयेपादाब्जतलेलुठंति। मरुस्थलीकल्पतरु.सजीयात्, युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः॥१॥

॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्तिमव्याकिमु कामगव्या ॥ प्रसीदतः श्रीजिनदत्तसूरेः, सर्वपदंहस्तिपदे प्रविष्टं ॥ २ ॥

॥ नोयोगीनचयोगिनीनचनरर्धीशस्यनोशाकिनी, नोवेतालपिशाचराक्षसगणानोरोगशोकोभयं ॥ नोमारि नचविग्रहप्रभृतयःप्रीत्याप्रणत्युच्चकैः, यस्तेश्रीजिनदत्तसूरिगुरवोनामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥

॥ अथसवईयालिख्यते ॥

॥ बावनवीरकियेअपणेवस, चौसठजोगणपायलगाई । डाइणसाइणव्यंतरखेचर, भूतप्रेतपिशाचपुलाइ । बीजतडक्ककडक्कभटक्क, अटक्करहेजुखटक्कनकाइ, कहेध्रमसिंहलंघेकुणलीह, दियेजिनदत्तकिएकदुहाइ ॥ १ ॥

॥ राजेथुंभठोरठोरएसोदेवनहीऔरदादादादोनामतें जगत्रजस्सगायोहै, आपणहीभायआयपूजेलखलोकपाय, प्यासनकुंरानमांझपानीआनपायोहै । वाटघाटशत्रुथाटहाटपुरपाटणमें, देहगेहनेहसुंकुशलवरतायोहै, धर्मसिंहध्यानधरेसेवकांकुशलकरेसाचोश्रीजिनकुशलगुरुनामयुं कहायोहै ॥ २ ॥

॥ छप्पा ॥ कुशलअंगउछरंग, कुशलविणजेंव्यापोरं ॥ कुशलदेवदेहरे, कुशलधनराजदुवारें । पुण्यपसायें कुशल, कुशलश्रीसंघभणीजें ॥ वाहणआवेकुशल, कुशल

घरघरगाईजें ॥ श्रीजिनचंद्रसूरिपुहपट्टधर, नाममंत्रआरतिटले । श्रीजिनकुशलसूरिपायपूजतां, नवनिधानलक्ष्मीमिले ॥ १ ॥

॥ कुशलवडोसंसार, कुशलसज्जनघरचाहे । कुशलेंमयगलवार, लच्छिघरकुशलेंआवे । कुशलेंघनवरसंत, कुशलधनधन्नरुवन्नो ॥ कुशलेंघोडाथट, कुशलपहरीय सुवन्नो ॥ एरसोनामसद्गुरुतणो, कुशलेंजगरलीयामणो । भट्टारकश्रीजिनकुशलसूरिनामग्रहणेंकरी, घरघरहोतवधामणो ॥ २ ॥

॥ अथपांचमाआरानीसज्झाय ॥

॥ वीरकहेगौतमसुणो, पांचमाआरानाभावरे । दुःखीयाप्राणीअतिघणा, सांभलगौतमस्वभावरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ शहेरहोशेरेगामडां, गामहोशेसमशानरे । विणुगोवालेंरेधणचरे, ज्ञानीनहींनिर्वाणरे ॥ वी० ॥ २ ॥ मुजकेडेकुमतिघणा, होशेतेनिर्धाररे । जिनमतिनीरुचीनर्वगमे, थापशेनिजमतिसाररे ॥ वी० ॥ ३ ॥ कुमतिजाजकदाग्रही, थापशेआपणाबोलरे । शास्त्रमारगसविमूकशे करशेजिनमतमोलरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पांखंडीघणाजागशे

भांगशेचरमनापंथरे । आगममतमरडीकरी, करशेनवाव-
लीग्रंथरे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चारणीनीपरेंचालशे, धर्मनजा-
णेलेशरे । आगमशाखानेढालशे, पालशेनिजउपदेशरे
॥ वी० ॥ ६ ॥ चोरचरडबहुलागशे, बोलीनपालेबोलरे ।
साधुजनसीदायशे, दुर्ज्जनबहुलाभोलरे ॥ वी० ॥ ७ ॥
राजाप्रजानेपीडशे, हिंडशेनिर्धनलोकरे ॥ माग्यानवर-
शेमेहुला, मिथ्याहोशेबहुथोकरे ॥ वी० ॥ ८ ॥ संवत
ओगणीशचौत्तरें, होशेकलंकीरायरे । मातब्राह्मणीयें बाप
चंडालकहेवायरे ॥ वी० ॥ ९ ॥ छयासीवरषनोआउखो,
पाडलीपुरमांहाशेरे । तसुसुतदत्तनामेंभालो, श्रावककुल
शुभपोषेरे ॥ वी० ॥ १० ॥ कौतुकीदामचलावशे, चर्म
तणातेजायरे । चोथलेशभिक्षातणी, महाअकराकरहोयरे
॥ वी० ॥ ११ ॥ इंद्रअवधियेंजोयतां, देखशएहस्वरूपरे ।
द्विजरूपेंआवीकरी, हणशेकलंकीभूपरे ॥ वी० ॥ १२ ॥
दत्तनेराज्यथापीकरी, इंद्रसुरलोकेजायरे । दत्तधरमपाले
सदा, भेटशेशत्रुंजयगिरिरायरे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पृथ्वी
जिनमंडितकरी, पामशेसुखअपाररे । देवलोकेंसुखभोगवे,
जयकाररे ॥ वी० ॥ १४ ॥ पांचमाआरानेछेडले,

चतुर्विधश्रीसंघहोशेरे । छठोआरोवेसनां, जिनधर्मपहिलो जाशेरे ॥ वी० ॥ १५ ॥ वीजेअग्निजागरो, त्रीजेरायन कोयरे । चोथेप्रहरेलोपना, छठेआरेतेहोयरे ॥वी०॥१६॥

॥ दोहा ॥ छठेआरेमानवी, बिलत्रासीसविहोय । वीशवरसनुंआउखुं, पटवर्षेगर्भजहोय ॥ १७ ॥ सहसचोरासीवर्षपणे, भोगवशेभविकर्म । तीर्थंकरहोशेभलो, श्रेणिकजीवसुधर्म ॥ १८ ॥ तसुगणधरअतिसुंदरू, कुमारपालभूपाल । आगमवाणीजोइने, रचीयारयणरसाल ॥ १९ ॥ पांचमआरानाभावए, आगमेभांख्यावीर। ग्रंथत्रोलविचारकह्या, सांभलजोभविधीर ॥ २० ॥ भणतांसमकितसंपजे, सुणतांमंगलमाल । जिनहर्षकहीजोडए, भांख्यांवयणरसाल ॥२१॥ इति पांचमाआरानीसज्झाय॥

॥ श्रीआलोयणगर्भितस्तवन ॥

वेकरजोडीवीनवुंजी, शुणस्वामीसुविदीत; कुडकपटमूकीकरीजी, वातकहुंआपवीत ॥ कृपानाथमुजवीनतीअवधार, तुंसमरथत्रिभूवनधणीजी, तुजसेवकनेतार कृपानाथ ॥ मु० ॥ १ ॥ भवसायरभमतांथकांजी, दीठा दुःखअनंत; भाग्यसंयोगेभेटीयोजी, भयभंजणभगवंत

॥कृ० मु०॥ २॥ जेदुखभांजेआपणोजी, तेंनेकहीयेदुखः तेदुखभंजणतुनेशुण्योजी, सेवकनेद्योसुख ॥कृ०॥ ३ ॥ आलोयणलीधाविनाजी, जीवरुलेरसंसारः रुपीलक्षमणा महासतीजी, एहसुण्योअधिकार ॥ कृ० ॥ ४ ॥ दुसमे कालदोहीलोजी, सुधोसुगुरुसंयोगः परमार्थप्रीछेनहीजी, गडुरीप्रवाहेलोग ॥कृ०॥५॥ तुजआगलमुजपापनीजी, आलोयणलेउआजः मावापआगलबोलतांजी, बालकने शीलाज ॥कृ०॥ ६ ॥ जैनधर्मसहुकोकहेजी, थापेगच्छ गच्छवातः सामाचारीजुइजुइजी, संसयपड्योमिथ्यात ॥ कृ०॥ ७ ॥ जाणअजाणपणेकरीजी, बोल्याउत्सूत्रबोलः रत्नेकागउडावतांजी, हार्योजन्मनिटोल ॥ कृ० ॥ ८ ॥ भगवंतभाख्यातेकिहांजी, किहांमुजकरणीएहः गजपाखर खरकिमसहेजी, सबलविमासणतेह ॥ कृ० ॥ ९ ॥ आपे परुप्युंआकरुंजी, जाणेलोकमहंतः पिणनकरुंपरमादीयो जीः मासाहसदृष्टंत ॥कृ०॥ १० ॥ कालअनंतमेलह्याजी, त्रणेरत्नश्रीकारः पिणप्रमादेपाडीयाजी, कमांजइकरपो-कार ॥कृ०॥ ११ ॥ जाणुंउत्कृष्टीकरुंजी, उद्यनकरुंरेहारः धीरजजीवधरेनहीजी, पोतेबहुसंसार ॥कृ०॥ १२ ॥ स्त-

भावपड्योकोइआपणीजी, नगमेभुंडीरेवात, परनिंद्याक-रतांथकांजी, जावेदिननेरात ॥कृ०॥ १३ ॥ किरियाक-रतांदोहीलीजी, आलसआणेरेजीव; धर्मपखेधंधेपड्योजी, नरकेकरशेरीव ॥ कृ० ॥ १४ ॥ अणहुंतागुणकोकहेजी, तोहरखुंनिसदीस, कोहित्तशिखभलीकहेजी, तोमनआ-णुंरीस ॥कृ०॥ १५ ॥ वादजितणविद्याभणीजी, पररंजण उपदेश; मनसंवेगधर्योनहीजी, किमसंसारतरेश ॥कृ०॥ १६ ॥ सूत्रसिद्धांतव्याख्यानमांजी, शुणतांकर्मविवाग; क्षणएकमनमांउपजेजी, मुजमरकटवैराग ॥कृ०॥ १७ ॥ त्रिविधत्रिविधकरी उचरुजी, अर्हतआपहजूर; वारंवारभा-खुंवलीजी, जन्मजराकरदूर ॥कृ०॥ १८ ॥ सुखमाटेसी-थिलथनीजी, कीधाआरंभक्रोड; जयणानकरीजीवनीजी, देवदयाकरीछोड ॥कृ०॥१९॥ वचनदोषव्यापककह्याजी, दाख्याअनरथदंड; कुडकह्युंवहुकेलवीजी, व्रतकीधारात खंड ॥कृ०॥ २० ॥ अणदीधालीजेतृणोजी, तोहीअदत्ता दान, तेदूपणलाग्याघणाजी, गणतांनावेज्ञान ॥कृ०॥२१॥ चंचलचेतनचेतेनहीजी, राचेरमणीरेरूप; कामविटंबनाशीक्रहुंजी, तुंजाणेतेस्वरूप ॥कृ०॥ २२ ॥ मायाममतामेंप-

ख्योजी, क्रीधोअधिकोलोभ; परिग्रहमेल्योकारमोजी, न चढीसंजमशोभ ॥कृ०॥ २३ ॥ लागयामुजनेलालचेजी, रात्रीभोजनदोष; मेंमनमूक्योमोकलोजी, नधर्योधर्मसंतोष ॥कृ०॥ २४ ॥ इणभवपरभवदूहव्याजी, जीवचौरासीलाख; तेमुजमिच्छामीदुक्कडुंजी, भगवंततोरीसाख ॥ कृ०॥ २५ ॥ कर्मादानपन्नरेकह्याजी, प्रगटअढारहपाप; जेमेंशेव्यातेहनीजी, बक्षिसद्योमाबाप ॥ कृ० ॥ २६ ॥ मुजआधारछेएटलोजी, सद्दहणाछेशुद्ध; जैनधर्ममुजमनगमेजी, जिमसाकरशुंदूध ॥कृ०॥ २७ ॥ ऋषभदेवतुंराजियोजी, शत्रुंजयशिणगार; पापआलोयाआपणाजी, करप्रभुमोरीसार ॥कृ० ॥ २८ ॥ मर्मएहजिनधर्मनोजी, पापआलोयाजाय; मनशुंमिच्छामीदुक्कडुंजी, देतांदुरितपुलाय ॥कृ०॥ २९ ॥ तुंगतीतुंमतीतुंधणीजी, तुंसाहिबतुंदेव; आणधरुंशिरताहरीजी, भवभवतोरीशेव ॥ कृ० ॥ ३० ॥ कलश ॥ इमचढीशत्रुंजयचरणभेट्या, नाभीनंदनजिनतणा; करजोडीआदीजिणंदआगे, पापआलोइआपणा, पूज्यजिनचंद्रसूरिससद्गुरु, प्रथमशिष्यसुजशघणे, नयवाचक, समयसुंदरगुणगणे ॥३१॥

॥ अथश्राद्धदिनकृत्य (तथा) देववदनभाष्यसेमंदरजानेकी पूजनकरनेकीविधिः ॥

॥ प्रथमश्रावकदोच्यारघडीरात्ररहतेउठके [प्रथम] दिलमेंनवकारमंत्रकास्मरणकरै ॥ मेंकोणहुं, क्यामेरी जातिहै, क्यामेराकृत्यहै, क्यामेराधर्महै [इत्यादि] धर्म जागरणासेदिलकोसावचेतकरै [पीछे] मलमूत्रकीवाधा दूरकरके, अंगशुचीमूलकरै ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि करके, विधिसंयुक्तघरदेराशरकीपूजाकरै [पीछे] यथाशक्तीअच्छावस्त्रआभूपणपहरके, घोडा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, भाईबंधू [इत्यादि] परिवारसहितपूजाके लायक, फलफूलप्रमुखउत्तमद्रव्यहाथमेंलेके । भव्यजीवों कोमोक्षमार्गदिखाताहुआ, जिनसासनकीप्रभावनाकरता हुआ, जिनमंदरजावै । जिनमंदरमेंप्रवेसकरके १० त्रिक विधिसाचवनकरै [सो १० त्रिक लिखतेहैं] [पहिलात्रिक] ३ निस्सहीकहणेका [जिसमें] १ निस्सही, जिनमंदरमें पैसतेहीकहै [कहेपीछे] संसारघरसंबंधीकुछभीकार्यविचारणानकरै ॥ १ ॥ [दूसरीनिस्सही] प्रदक्षिण तीनादिये पीछेकहै । जिनमंदरमेंफूटाटुटाठीककरानेकीसारसंभाल

रक्खीथीसोभीछोडै। इहांद्रव्यपूजाकरणीभीकलीरही ॥२॥ तीसरीनिस्सहीकेहपीछेंनकेवलभावपूजाकरै । पिणद्रव्य पूजानकरै ॥ यहप्रथमानिस्सहीत्रिककहा ॥ [दूसरात्रिक] ज्ञानात्रिककी आराधनाकरनेकोंप्रभूकेदक्षिणावर्त्तसेंतीनप्र-दक्षिणादेवै [तीसरात्रिक] मूलनायकजीकेबिंबकोंपंचांग मिलाके, तीनबेरनमस्कारकरै ।३। [चोथात्रिक] प्रभूकी अंग १। अग्र २। भाव ३। त्रिविधप्रकारपूजाकरै । अबनिस्स-हिकियेपीछे । कृत्य, अकृत्यतथापूजाविधि, संक्षिप्तलिखते हैं । निस्सहीकियेपीछेमनोगुप्ती, बचनगुप्ती, कायगुप्ती, करकेयुक्तरहैपांचोंइंद्रियांकोबशमेंरक्खै । गमनागमनमेंउ-पयोगीरहै । गीतादिकअन्यकासुनकेचित्तमेंव्याकुलतान रक्खै । कुछभीदेवकार्यकोंछोडकेओरकार्यकीविचारणान करै । राजकथादिसंपूर्णविकथाछोडै । जन्म [ओर] क-र्मके, अनुगतबचननबोले (अर्थात्) कोईकेमातापिता-दिककाकियाथका, खोटाकार्यकोंप्रगटनकरै (तथा) कर्मा-नुगतवचनआंधेकोआंधा, गोलेकोंगोला (इत्यादिवचन) नबोलै। निस्सहीकियेपीछेजिनमंदरमेंधर्म्मसंयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेतबचनबोलनाचाहिये।(जिसनें) मन,

वचनकायाके, खोटेव्यापारोंकानिषेनअपनीआत्मासेंकि-
याहेउसकेभावसेंनिस्सहीहोय (ओर) जिसनेंदूषणकात्याग
नकियाहे। उसकेकेवलशब्दउच्चारणमात्र, द्रव्यनिस्सही
होय (इसवास्ते) पूजायोग्यउत्तमवस्त्रपहरके, आठतहरके
उज्जलवस्त्रसेमुखकोशबांधे। धूपादिकसेंअंगअपनाशुद्ध
करै। भावसें, दूसरीनिस्सहीकहते, मुलगंभारेमेंप्रवेशकरै।
जयणासंयुक्तपूजाकरै। पूजाकरतेहुए, शरीरमेंखाजनखूणे-
खेलखंखारनकरै। निकेवलभगवानकीस्तवनामेंचित्तरक्खे।
प्रथमसुगंधयुक्तजलपंचामृतनसेंस्नात्रकरावै। सुकमालअ-
च्छाकोमलसुगंधयुक्तवस्त्रसेंभगवानकाअंगलूहै। कपूरक
स्तूरीमिश्रितशुद्धकेशरचंदनकाविलेपनकरै। सुभवर्ण सु-
भगंधयुक्त, जीवादिरहित, निर्दोस। गुलाब, चंपाचंपेली,
केवडा. जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पोंसेंपूजाकरै। अष्टां-
गधूपअगरवत्तीखेवै॥ मंगलदीपकरै। अखंडउज्जलअ-
क्षतोंसेंप्रभुकेसन्मुखअष्टमंगलीकलिखे॥ दर्प्पण १। भ-
द्रासन २। वर्द्धमानसरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मच्छ-
युग ५। कलश ६। स्वस्तिक ७। नंद्यावर्त्त ८।
(ऐसे) अष्टमंगलकीरचनाकरै। पंचवर्णफूलोंमेअष्टमंगली-

कपूजै । सुंदरकुंकमसिंश्रितचंदनसेंहस्थोंदेवै । उत्तमनैवे-द्यचढावै । अच्छास्वाद्यफलचढावै । (इत्यादि) पूजाकी विधि, आरतीपर्यंत । रायप्रश्रेणी, ग्याताधर्मकथा, जीवाभिगमादि, सिद्धांतोंमोंलिख्येपुजवकरै (पीछे) अंतरंगभक्तिसेंप्रभूकेसन्मूखनाटककरै ॥ (जैसें) देवेंद्र, दानवेंद्र नारद, इनोंनें (तथा) उदाईराजाकीराणीप्रभावतीनें द्रोपदीनेंनाटककिया (और) रावणप्रमुख, कईजीवोंनेंअष्टापदादिऊपरनाटककरके, तीर्थंकरगोत्रउपार्जनकिया (तैसें प्रभुकेसन्मुखशंकारहितहोके । उत्तमपुरषनाटककरै । (अब) जलचंदनपुष्पादिकसेंपूजाकरै (सो) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभुकेसन्मुखनैवेद्यप्रमुखचढावै (सो) अग्रपूजा ॥२॥ प्रभूकेसन्मुखशक्रस्तवादिगीतगाननाटकादिककरै (सो) भावपूजा ॥ २ ॥ यहद्रव्यपूजाकाविचारगर्भितचोथात्रिककहा ॥ (अबपांचमात्रिक) ॥ तीनअवस्थाविचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमेंपिंडस्थ अवस्थाकेतीनभेद ॥ जन्मावस्था ॥१॥ राज्यावस्था॥२॥ श्रमणावस्था ॥३॥ (और) केवलअवस्थाकोविचारकरणा (सो) पदस्थअवस्थानिरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । ति

सकुंरूपातीतअवस्थाकहतेहै ॥ (अबछआत्रिक) तीनदिशा छोडकेप्रभुकेसामनेंनिजररखे । उर्द्ध १ ॥ अध २ ॥ तिरछी ३ ॥ दहगी । वांइ । पिछाडी । निजरनहींकरै ॥ (अबसातमात्रिक) तीनवेरधरतीप्रमार्जकें । उसठिकाणेचैत्यवंदनकरै ॥ (अबआठमात्रिक) ॥ वर्णादिकतीनसंपदाका ॥ हरफशुद्धउच्चारणकरै (सो) वर्णशुद्धि ॥ १ ॥ हरफोकेअर्थपरआलंबनरक्खै (सो) अर्थशुद्धि २॥ आलंबन एकजिनप्रतिमाकारक्खै (सो) मनसुद्धि ॥ ३॥ (अबनवमात्रिक) ॥ तीनमुद्राकरनी ॥ जोगमुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३॥ (इनमें) जोगमुद्राकिसकुंकहते हे ॥ पद्मकोशाकारै । दोनुहाथपरस्परअंगुलीमिलानी । एजोगमुद्रायेंसक्रस्तवनकाहिये १॥ काउसग्गमुद्रा (सो) जिनमुद्रा २ (और) दोमीपकाजोडातिसआकारहाथरखना (सो) मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३ ॥ इसमुद्रासेंप्रणिधानजय वीयराय० इत्यादिकरै (अबदशमात्रिक) ॥ प्रणिधानतीन ॥ जिनवंदनप्रणिधान १ ॥ मुनिवंदनप्रणिधान २ ॥ प्रार्थनाप्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंतिचेइयाइं (इत्यादि) इहसंतोतत्थसंताइं (तक) जिनवंदनप्रणिधान १ ॥

जावंतिकेविसाहु (इत्यादि) तिविहेणंतिदंडीयरियाणं (इहां तक) मुनिवंदनप्रणिधान २॥ जयवीयरायसें (लेके) आभवमखंडातक । प्रार्थनारूपप्रणिधान ३ ॥ (ऐसादशत्रिकका पहलाद्वारकहा)॥ (अबपांचअभिगमनसाचवणेका दूसराद्वारकहतेहें) ॥ सचित्तद्रव्यकुशमादिकअपनेपास होय, उसकुंअलगरखदेना १ ॥ (और) राजचिन्हमुगट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका, अचितवस्तुछोडना । आभूषणप्रमुखपहरयारखना २ ॥ मनएकाग्रकरना ३ ॥ एक पट्टउत्तरासंगकरना ४ ॥ जिनबिंबदेखतेही (नमोभुवण बंधुणो) ऐसेंनमस्कारकरना ५ ॥ एदूसराद्वारकहा ॥ (अबतीसराद्वारदोदिशीका) पुरुषदक्षणदिशावेठा । भगवंत को वांदे ॥ स्त्री वांद दिस बेठके भगवंतको वांदे ॥ (अब चौथा द्वार तीन अभिग्रह) अभिग्रह देववांदणोंमेंकहाहे ॥ (जघन्य) नवहाथदूरबेठकेदेववांदे १ ॥ (मध्यम) नवहाथसेंउपरांतबेठकेदेववांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथदूरबेठकेदेववांदे ३ ॥ (अबपांचमाद्वारचैत्यवंदनका) ॥ सो जघन्य १ ॥ मध्यम २॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन भेदहै (तिहां) णमोअरिहंताणं (इत्यादिककहके) व: ।

एकदोयगाथाकानमस्कारकहके । शक्रस्तवनकहना जघन्यचैत्यवंदन १।) जिसदेववंदनमेंस्थापनार्हत्स्तवदंडक । नमोत्थुणंसें (लेके) अरिहंतचेइयाणं (इत्यादिक संपूर्णकही) एकस्तुतिकहै (सो) ॥ मध्यमचैत्यवंदन (तथा) कोईआचार्यकहै ॥ पांचदंडकसहित । थूईगाथ (४ कहै) (सो) मध्यमचैत्यवंदनकहि ॥ (तथा) विधिपूर्वकशक्रस्तवादिपांचदंडक । जयवीयरायपर्यंतआठथुइए देववांदे । (सो) उत्कृष्टचैत्यवंदनकहियै ॥ अबछठाद्वार पंचांगप्रणिपातकरै । दोजानु । दोहाथ (और) मस्तक एपांचअंगमिलायकेजमीनमेंलगावै ॥ (अबसातमाद्वार) ॥ जघन्येंएकगाथासेंलेकरउत्कृष्टएकसोआठश्लोक (तथा) काव्यसेंप्रभुकीस्तवनाकरै ॥

॥ अथपांचशक्रस्तवेंदेववंदनविधिलि० ॥

॥ प्रथमचैत्यवंदनकर, नमोत्थुणं, सर्वोतिविहेणवंदामिनककहै, पीछेइरियावहीकहकेचारनवकारकोकावसग्गकरकेलोगस्सकहै, फेरचैत्यवंदनकरकेनमोथ्थुणंकहे, पीछेअरिहंतचेइयाणं०, वंदणवत्तियाए, अन्नथ्थुकहकेएक नवकारकोकावसग्गकरे, एकथुईकीगाथाकहके, लोग

स्स०, वंदण०, कहीदूजीथुईकहे, फिरपुख्खरवरदी०, वं-
दणवत्ति०, कहीतीजीथुईकहे, फिरसिद्धाणंबुद्धाणं०, अ-
न्नथ्थुकही, एक० नवकारकोकाउस्सग्गकरी, चोथीथुईकहे,
पीछेबेठकेतीसरीवेरनमोथ्थुणंकहे, फेरखडाहोकेइमीतरेवंद-
णवत्तियाएप्रमुखसंपूर्णपूर्वकीपरेपाठकहकेच्यारथुईकहे, फेर
बेठकेचोथीवेरनमोथ्थुणं, नमोर्हत्सिद्धा० तककहकेवडो
स्तवनआवेसोकहे, पीछेजयवीयरायकहकेफिरपांचमीवेर
नमोथ्थुणंसव्वेतिविहेण० तककहे, इतिपांचशक्रस्तवेदेव-
वंदनविधि. ॥

॥ धेनुतूलसीआदिकनीसज्झाय ॥

धेनुतुलसीनदीनारग, शिवनेमंदिरआव्याजाण; ए
कादशीपिणआइसाथ, आपापणादुखनीकहेवात ॥ १ ॥
धेनु० ॥ हुंतीर्यंचअज्ञानीपशु, मुजनेपरगावेताकेशु; पुत्र
पितानविजाणुंभ्रात, अविरतीरहुंदिननेरात ॥ २ ॥ पुत्र
पितामुजकेमजवरे, केमसुखमुजभर्ताकरे ॥३॥ तुलसी०॥
भारअढारमेंहुंवनस्पती, मुजआगलदुखछेतुजरती; ताहरे
भोगसंयोगतेमले, भोगतिनामुजस्वामीमले ॥ ४ ॥ खंड
करीमेलसारडी, डोरोपातकरेहारडी; कंठधरीअणगलजल-

न्हाय, अशुद्धथइमुजनेलेइजाय ॥ ५ ॥ आभडछेटेआवे नार, मुजनेछोडीनमुकेवा'र; इमसुजनेहेरानतेकरे, म्हारुं दुखतेकुणदिलधरे ॥ ६ ॥ नदी० ॥ नदीकहेमुजमाने मात, अशुद्धथइआवेपरभात: पांचेइंद्रीवहोलेनाम, अज्ञानीनाजोइजोकाम ॥ ७ ॥ साहमुंपगलुंरोगीभरे, झचको देतांजीवतेमरे, अणसमजुजगदीसेएह. म्हारादुखनोनाव्योछेह ॥ ८ ॥ एकादशी—एकादशीव्रतसहुकोकरे, वनस्पतीथीपेटजभरे, आडेदिनखावेअधशेर, व्रतकरीनेखावे शेर ॥ ९ ॥ कंदमुलसोधीनेखाय, जोज्योवेदपुराणेन्याय; पुत्रमांसखावेतेभलो, कंदमुलभक्षणनविभलो ॥१०॥ कृष्ण० ॥ मुजनेलंपटकहेछेचोर, इणेगोवालेचार्याढोर; गोविदगोपीनीकरेजोड, भलानचाव्याश्रीरणछोड ॥११॥ मुजमाटरसोइकरे, थाललेइमुजआगेधरे, देखावेअंगुठोव-जावेघंट, लेइजावेतेखावेउलंठ ॥ १२ ॥ ईश्वर—शिवशुणी हरीनेमुलक्या, एहलोकोनेअमेओलख्या; लिगपूंजावुं चोलावुंराख, दाढीजटावधावुंकाख ॥ १३ ॥ स्त्रीपणमुज मंदीरआवे, खरोमुजनेभोलोकहावे, एहलोकोनेओलख्या मेंह, वांकेलाकडेवांकोवेह ॥ १४ ॥ वेदपूराणनीएहिज

साख, सिंदुरव्यास नीएहछेभाख; इमजाणी शुद्धधर्मजकरो, एहथीनिश्चेशिवपदवरो ॥ १५ ॥

॥ श्रीमहावीरस्वामीनुंस्तवनः ॥

॥ वीरजिनेश्वरसाहेबमेरापारनलहुंतेरामहेरकरीटालो महाराजजीजन्ममरणनाफेराहोजीनजीअवहुंशरणेआव्यो ॥ १ ॥ गरभावासतणांदुःखमोटांउंधेमस्तकरहीयोमलमुतरमांहेलपटाणोएवांदुःखमेंसहीयांहोजिनजी ॥अव०॥२॥ नर्कनिगोदमांउपन्योनेचवियोसूक्ष्मबादरथइओवेंढाणो सूइनेअग्रभागेमानतिहांकीहांरहीओहोजिनजी ॥ अव० ॥ ३ ॥ नर्कतणीअतिवेदनाउल्लसीसहीनेजीवेबहुपरमाधामीनेवशपडीओतेजाणोतमेसहुहोजिनजी ॥अव०॥ ४ ॥ तिर्यंचतणाभवकीधाघणराविवेकनहीं लगार निशदिननो व्यवहारनजाण्योकेमउतरायेपारहोजिनजी ॥अव०॥५॥ देवतणीगतिपुन्येहुंपाम्योविषयारसमांभीनोव्रतपच्चख्खाण उदयनाविआव्यां गानमानमांहेलीनोहोजिनजी ॥अव०॥ ६ ॥ मनुष्यजन्मनेधर्मसामग्रीपाम्योछुंबहुपुन्येरागद्वेषमांहे बहुभलीओनटलीममताबुधहोजिनजी ॥ अव० ॥ ७ ॥ एककंचननेबीजीकामिनीतेशुंमनडुंबांध्युं तेनाभोगलपेवा

नेहुंशूरोकेमकरीजिनधर्मसाधुंहोजिनजी ॥अ२० ॥ ८॥ मननीद्रोडकीधीअतिझाझीहुंछुंकोकजडजेहवोकली कली कल्पमेंजन्मगुमायोपुनरपिपुनरपिजेहवो होजिनजी ॥ अ२० ॥ ९ ॥ गुरुउपदेशमांहुंनथीभिनोनेविसदहणा स्वामिहवेवडाइजोइएतमारीखिजमतमांहछेखामी होजिन-जी ॥अ२०॥ १० ॥ चारगतिमांहरडवडीओताएनासिध्यां काजरिखभकहेतारोसेवकनेबांहग्रह्यानीलाजहोजिनजी ॥ अ२० ॥ ११ ॥

॥ वीरसुणोमेरीबीनतीकरजोडिहोकहुंमननीवातबा लकनीपरेंविनवुंमोरासामीहोतुंत्रिभूवनतात ॥ १ ॥वी०॥ तुमदरिसणविणहुभम्योभवमांहेहोसामी समुद्रमझारदुख्ख अनंतांमेंसह्यांते कहेनांहोकिमआवेपार ॥ २ ॥ वी० ॥ परउपगारीतूंप्रभूदुखभंजनहोजगदीनदयाल तिणंतोरेचर-णेंहुंआवीओसामीमुझनेंहोनिजनयणनीहाल ॥३॥वी०॥ अपराधिपणउधर्यातेंकीधीहोकरुणामोरा सामिपरमभगत हुंताहरोतहनेंतारोहोनहीढीलनुंकाम ॥ ४ ॥वी०॥ सूल पाणीप्रतिबुझव्योजिणेंकीधाहोउमनेतुपसर्ग डंकदीओचंड कोसीयेतेदीधोहोतसुआठमोसर्ग ॥ ५ ॥ वी० ॥ गोसा-

लोगुणहीनडोजिणवोल्याहोतोराअवरणवाद तेवलतोतेंरा-
खीओसीतलस्याहोप्रुकीसुप्रसाद ॥ ६ ॥ वी० ॥ वचन
उथ्थाप्यां गाहरांजेह्न गच्योहोतुझसाथेंजमालितेहनेंपणिपन
रेंभवेशीव गामीहोकीधोतेंकृपाल ॥ ७ ॥ वी० ॥ एकुणछें
इंद्रजालीओइंमकहतोहोआव्यातुमतीरतेगौतमनेंतें कीओ
प्रतिबोधीहोपोतानोवजीर ॥ ८ ॥ वी० ॥ मेघकुमाररू-
पिदुहव्योचितचूकोहोचारित्रथीअपार एकावतारी तेहनेंतें
कीधोहोकरुणाभंडार ॥ ९ ॥ वी० ॥ अयमतोरूपिजेर-
म्याजलमांहेंदोबांधिमाटीनीपालतरतीमेहली काछली ते
तास्वाहोतेहनेततकाल ॥ १० ॥ वी० ॥ बारवरसवेश्या
घररह्योमुकीहोसंयमनोभारनंदिषेणपणउधर्यो शिवपदवी
दीधीअतिसार ॥ ११ ॥ वी० ॥ पंचमहाव्रतपरिहरीगृह
वासेंहोवस्योवरसचोवीसतेपणआद्रकुमारनें तेंतार्योहोता-
रीएहजगीस ॥ १२ ॥ वी० ॥ रायश्रेणिकराणीचेलणां
रूपदेखीहोचित्तचुक्याजेहसमवसरणसाधुसाधवी तेंकीधां
होआराधकतेह ॥ १३ ॥ वी० ॥ सूधोसंयमनाविपलेंनहीं
तेहवोहोमुझदंसणनाणपणिआधारछेएटलोएकतो रहोनि
श्चलधरुंध्यान ॥ १४ ॥ वी०॥ व्रतनहींनहींआखडीनहीं

पोसोहोनहींआदरदीखतोपणिश्रेणिकरायनेंतेंकीधो होप्रभू आपसरीख ॥ १५ ॥ वी० ॥ इंमअनेकतेंउधरयाकहुंकेताहोतोअवदातसारकरोहवेंमाहरीमनमांहेहोआणीमोरीवात ॥ १६ ॥ वी० ॥ मेहनहीतलवरसतानवीजोवेहोसमत्रिधमीठामगिरुआसहजेंगुणकरेंसामी सारोहोमारावंछितकाम ॥ १७ ॥ वी० ॥ तुमनामेंसुखसंपदातुमनामेंहोदुखजायेंदुरितुमनांमेवंछितफलेतुमनामेंहोमुझ आणंदपूर ॥ १८ ॥ वी० ॥ कलशइमनगरजेसलमेरमंडनतीर्थंकरचोवीसमोसासनाधीसरसीहलंछनसेवतांसुरतरुसमोजिणचंदत्रीसलामातनंदनसकलचंदकलानिलोवाचनाचारयसमयसुंदरसंथुण्योत्रिभोवनातिलो ॥ १९ ॥ वी० ॥

॥ अथसीमंधरजिनस्तवन ॥

॥ धनधनखेत्रमहाविदेहजीधन्यपुंडरिगिणीगाम धन्यनिहांनांमानवीजीनित्यउठीकरेरेप्रणाम सीमंधरस्वामी कइयेरेहुंमाहाविदेहआवीशजयवंताजिनवरकइयेरेहुं तुमने वांदीश ॥ १ ॥ चांदलीयासंदेशडोजीकहेजोसीमंधरस्वामभरतक्षेत्रनांमानवीजीनित्यउठीकरेरेप्रणाम ॥ सी० ॥ २ ॥ समवसरणदेवेरच्युंतिहांचौसठइंद्रनरेशसोनातणेसिंहा

सनबेठाचामरछत्रधरेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंद्राणीकाढेगु-
अलीजीजीमोतीनाचोकपूरेश ललिलली लीयेलुछणांजी
जिनवरदीयेउपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एहवेसमेमेंसांभ
ल्युंजीहवेकरवांपच्चख्खाणपोथीठवणीनिहाकनेजीअम्हनवा
णीत्रखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायनेवालांघोडलांजीत्रेपारी
नेवालाछेदामअमनेवालासीमंधरस्वामीजेमसीताने श्रीरा
म ॥ सी० ॥ ६ ॥ नहिंमागुंप्रभुराजरुद्धिजीनाहिंमांगुग
रथभंडारहुंमागुंप्रभुएटलुंजीतुमपासेंअवतार ॥ सी० ॥
७ ॥ दैवनदीधीपांखडीजीकेमकरिआवुंरेहजुरमुजरोमान
जोप्रहऊगमतेसुर ॥सी०॥ ८॥ समयसुंदरनीवीनतीजी
मानजोवारंवारबेकरजोडीवीनवुंजीवीनतडी अवधार ॥
सी० ॥ ९ ॥ इतिसंपूर्णम्.

॥ हवेरांणीपदमावतीजीवरासखमावे ॥

॥ जाणपणोजगदोहिलोइणवलाआवै ॥ १ ॥ तेमु
झमीछामिदुक्कडंअरिहंतनीसाखेजमेंजीवविराधीयाचौरासी
लाख ॥ ते० ॥२॥ सातलाखपृथिवीतणासातअप्पकाय
सातलाखतेऊकायनासातेवाउकाय ॥ ते० ॥३॥ दसप्रत्ये
कवनस्पतिचउदहसाधाणावितिचउरिंद्रियजीवना बेवेलाख

विधार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवतातिरजंचनारकीच्यारश्प्रकासीचउदहलाखमनुष्यनाएलाखचउरासी ॥ते०॥५॥ इणभवपरभवसेवीयाजेपापअढारात्रिविधत्रिविधकरिपरिहरुंदुरगतिदातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसाकीधीजीवनीबोल्यामिरखावाददोषअदत्तादांननामैथुनउनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रहमेल्योकारिमोकीधाक्रोध विशेषमांनमायालोभमेंकीयावलिरागनैद्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलहकरीजीवदूहव्यादीधाकूडाकलंकनिदाकीधीपारकीरतिअरतिनिसंक ॥ते० ॥ ९ ॥ चाडीखाधीचौतरैकीधाथापणमोसोकुगुरुकुदेवकुधर्मनाभलाआंण्याभरोसा ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीनंभवमइकीधाजीवनांवधघातचिडीमारभव चिडकलामारयादिनरात ॥ ते० ॥ ११ ॥ मच्छीगरभवमाछलाझाल्याजलवासधीवरभीलकोलीभवैमृगमारयापास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजीमुल्लांनैभवैपढी मंत्रकठोरजीवअनेकजभैकीयाकीधापापअघोर ॥ ते० ॥१३॥ कोटवालनैंभवमेंकीयाआकराकरदंडःबंदीवांणमरावीयाकोरडाछडीडंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीनैंभवेदीधानारकीदुखछेदनभेदन वेदनाना हिनाअतिदुख ॥ ते० ॥१५॥ कुंभारनेंभवेजेकीयानीमा

हपचायातेलीभवतिलपीलियापापीपेटभरायां ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीनैंभवैहलखड्याफाड्यापृथ्वीनापेटसूडानिदाण कीयाघणादीधाबलदचपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीनेंभव रोपीयानाना विधवृक्षमूलपत्रकफलफूलनालाघापापजल क्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अद्धावाइआगमीभरघाअधिकाभार पोठीऊंक्कीडापड्यादयानरहीलिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छी पानैंभवछेतरयाकीधारांगणिपासअगानेआरंभकीधा घणा धातखादअभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूरपणैंरणझुझतांमा रयामांणसवृंदमदिरामांसभक्षावणाखाधामूलनैंकंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाणखणावीधातुनींघणापाणीउलंच्याआरंभ कीधाअतिघणापोतैंपापजसंच्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ अंगा राकर्मकीयाक्लीधरंमइदवदीधासुंसकीधाबीत रागना कुडा कोसजपीधा ॥ ते० ॥२३॥ भिल्लीभवैंउंदरलीयागिलोईहृ त्यारीमूंढगिमारतणेंभवैमंजूंलीखमारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भा डभुंजानैंभवैंचलएकेंद्रीजीवज्वारिचिणागहूं सेकीयापीडं तारीव ॥ ते० ॥२५॥ खांडणपीसणगारनाआरंभअनेक रांधणइंधणआगनाकीयापापउदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विक थाच्यारकीधीवलीसेव्यापंचप्रमादइष्ट वियोगकीयापड्यारो

दनेबेद नवाद् ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधूनैश्रावकनणानन्लई
भागामूलअनैउतरतणामुम्नदूषगलागा ॥ ते० ॥ २८ ॥
सापवीछुसींहचीतस्यासिकरानेसामलीहिंसकजीवनणै भवै
हिसाकीधीसनली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूनावडिदूपणघणाव
लिगर्भगलायाजीवाणीढोल्याघणामीलव्रतभंजाया ॥ ते०
॥ ३० ॥ अनंतभवेभमतांथकांकीधाकुटुंबसंबंधत्रिविध२क
रिवोसरुंतिणसुंप्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ भवअनंतभमतां
थकाकीयादेहसंबंधत्रिविध२करिवोसरुंतिणसुंप्रतिबंध ॥
ते० ॥ ३२ ॥ भवअनंतभमतांथकापरिग्रहसंबंधत्रिविध२
करिबोसरुंतिणसुंप्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ श्रावकनेभवै
मैंकरीजतियांरीनिंद्यास्वारथदेखीआपरोनलितसुंपगबंध्या ॥
ते० ॥ ३४ ॥ इणपरिइणभवपरभवैकीधापापअक्षत्रत्रिवि
ध२करवोसरुंकरुंजन्मपवित्र ॥ ते० ॥ ३५ ॥ रागवैरा
डीजेसुंणै एत्रीजीढालसमयसुंदरकहैपापथीछूटै ततकाल
॥ ते० ॥ ३६ ॥ इतिश्रीपदमावतीजीवराशिसमाप्तम् ॥

॥ अथश्रीपुन्यप्रकाशनुंस्तवन ॥

॥ दुहा । सकळसिधिदायकसदाचोवीसेजीनराय,
सद्गुरुसामिनीसरसतीप्रेमेप्रणमुंपाय ॥ १ ॥ त्रिभूवनप

तीत्रिसलातणोनंदनगुणगंभीर, शासननायकजगजयोव र्धमानवडवीर ॥ २ ॥ एकदिनवीरजिणंदनेचरणेकरीप्रणाम, भविकजिवनाहितभणीपूछेगौतमस्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमारगआराधिएकहोकिणपरेअरिहंत, सुधासरसतववचनरसभाखेश्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचारआलोइएव्रतधरिएगुरुसाख, जिवखमावोसयलजेयोनिचोराशीलाख ॥ ५ ॥ विधिशुंवळिवोसिराविएपापस्थानअढार, चारशरणनित्यअनुसरोनिंदोदुरितआचार ॥ ६ ॥ शुभकरणीअनुमोदिएभावभलोमनआण, अणसणअवसरआदरीनवपदजपोसुज़ाण ॥ ७ ॥ शुभगतिआराधनतणाएछेदशअधिकार, चित्तआणिनेआदरोजेमपामोभवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाळपहेली ॥

॥ एछिंडीकीहांराखी, एदेशी । ज्ञानदरिसणचारित्रतपविरजएपांचेआचार, एहतणाएहभवपरभवनाआलोइएअतिचाररे ॥ १ ॥ प्राणीज्ञानभणोगुणखाणीवीरवदेएमवाणीरे, प्रा० गुरुओळवीएनहीगुरुविनयेकाळेधरीबहुमान सुत्रअर्थतदुभयकरीसुधंभणीएवहीउपधानरे, प्रा० ज्ञा० ॥ २ ॥ ज्ञानोपगरणपाटीपोथीठवणीनोकारवाली, तेहत

णीकीधीआशातनाज्ञानभक्तिनसंभाळीरे. प्रा० ज्ञा० ॥३॥ इत्यादिकविपरीतपणाथीज्ञानावराध्युंजेह, आभवपरभवव ळीभवोभवेमिच्छामिदुक्कडंतेहरे ॥ ४ ॥ प्राणीसमक्तिल्यो शुद्धजाणीवीरवदेएमवाणीरे. प्रा० स० जिनवचनेशंकान विकीजेनविपरमतअभिलाख, साधुतणीनिंदापरिहरजोफ ळसंदेहमराखरे प्रा० स० ॥ ५ ॥ मूढपणुंछंडोपरशंसागु णवंतनेआदरिए, साहम्मीनेधर्मेकरीस्थिरताभक्तिप्रभावना करिएरे. प्रा० स० ॥ ६ ॥ संघचैत्यप्रसादतणोजेअवर्ण वादमनलेख्यो, द्रव्यदेवकोजेविणसाड्योविणसंतांउवेख्योरे प्रा० चा० ॥ ७ ॥ इत्यादिकविपरितपणाथीसमक्तिखंड्युं जेह, आभवपरभववळीभवोभवेमिच्छामिदुक्कडंतेहरे. प्रा० ॥ ८ ॥ प्राणीचारित्रल्योचित्तआणीवीरवदेएमवाणीरे. प्रा० चा० पांचसमितित्रणगुप्तिविराधीआठप्रवचनमाय, साधुतणेधर्मेप्रमादेअशुद्धवचनमनकायरे प्रा० चा० ॥९॥ श्रावकनेधर्मेसामायिकपोसहमांमनवाळी, जेजयणापुर्वक एआठप्रवचनमायनपालीरे प्रा० चा० ॥ १० ॥ इत्यादि कविपरीतपणाथीचारित्रडोल्युंजेह, आभवपरभववळीभवो भवेमिच्छामिदुक्कडंतेहरे प्रा० चा० ॥ ११ ॥ बारभेदत प

नविर्कीधुंछतेयोगेनिजशकते, धर्ममनवचकायावीरजनवि
फोरवीउंभगतेरे प्रा० चा० ॥ १२ ॥ तपविरजआचारज
एणीपरेविविधविराध्याजेह, आभवपरभववळीभवोभवेमि
च्छामिदुक्कडंतेहरे प्रा० चा० ॥ १३ ॥ वळीयविशेषेचारित्र
केराअतिचारआळोइए, वीरजिणेसरवयणसुणीनेपापमय
लसवीधोइएरे प्रा० चा० ॥ १४ ॥

॥ ढाळबीजी ॥

॥ पामीसुगुरुपशाय एदेशी । पृथ्वीपाणीतेउवाउवन
स्पतीएपांचेथावरकह्यांए, करीकरसणआरंभखेत्रजखेडीयां
कुवातलावखणावीयाए ॥ १ ॥ घरआरंभअनेकटांकांभुइ
रांमेडीमाळचणावीआए, लींपणघुंपणकाजएणीपरेपरपरेपृ
थ्वीकायविराधियाए ॥ २ ॥ धोयणनाहणपाणीझीलण
अपकायछोतिधोतिकरीदुहव्याए, भाठीगरकुंभारलोहसोव
नगराभाडभुंजालीहालागराए ॥ ३ ॥ तापणसेकणकाज
वस्त्रनिखारणरंगणरांधणरसवतिए, एणीपरेकर्मादानपरेपरे
केलवीतेउविराधियाए ॥ ४ ॥ वाडीवनआरामवावीवन
स्पतिपानफुलफळचुंटीयाए, पोहोंकपापडीशाकशेक्यांसु
कव्यांछेद्यांछुंद्यांआथीयांए ॥ ५ ॥ अळशीनेएरंडघाणी

घालीनेघणातेलादिकपीलीयाए, घालीकोलुमांहीपीली सेलडीकंदमूळफळवेचीयांए ॥ ६ ॥ एमएकेंद्रियजीवह ण्याहणावीयाहणतांजेअनुमोदीयाए, आभवजेहवलीभ वोभवेतेमुजमिच्छामिदुकडंए ॥ ७ ॥ कमीसरमीयाकी डागाडरगंडोलाएलपुराअलशीयाए, वाळाजळोचुडेलावि चलितरसतणावळीअथाणांप्रमुखनाए ॥ ८ ॥ एमवेइंद्रि यजीवजेमेंदुहव्यातेमुजमिच्छामिदुक्कडंए, उद्देहीजुंलीख मांकणमंकोडाचांचडकीडीकुंथुआए ॥ ९ ॥ गद्दहीयाघी मेलकानखजुरडागींगोडाधनेरीयांए, एमतेइंद्रियजीवजेमें दुहव्यातेमुजमिच्छामिदुकडंए ॥ १० ॥ मांखीमच्छरडांस ममापतंगीयाकंसारिकोलियावडाए, ढींकणवींछुतीडभम रामभरीयाकोतांवगखडमांकडीए ॥ ११ ॥ एमचौरिंद्रिय जीवजेमेंदुहव्यातेमुजमिच्छामिदुकडंए, जळमांनांखीजा ळजळचरदुहव्यावनमांमृगसंतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखीजीवपाडीपासमांपोपटघाल्यापांजरेए, एमपंचेंद्रियजी वजेमेंदुहव्यातेमुजमिच्छामिदुकडंए ॥ १३ ॥

ढाळत्रीजी.

॥ प्राणात्राणीहिंसकारीजी एदेशी । क्रोधलोभभय

हासथीजीबोल्यावचनअसत्य, कुडकरीधनपारकांजीलीधां जेहअदत्तरे, जीनजीमिच्छामिदुक्कडआजतुमसाखेमहारा जेरे, जीनजीदेइसारुंकाजरेजीनजीमिच्छामिदुक्कडआज ॥ १ ॥ देवमनुष्यतिर्यंचनांजीमैथुनसेव्यांजेह, विषयार सलंपटपणेजीघणुंविटंव्योदेहरे जीनजी० ॥ २ ॥ परिग्र हनीममताकरीजीभवभवमेलीआथ,जेहजीहांनीतेतीहांरही जीकोइनआवीसाथरे जीनजी० ॥ ३ ॥ रयणीभोजनजे कर्यांजीकीधांभक्षअभक्ष, रसनारसनीलालचेजीपापकर्यां प्रत्यक्षरे जीनजी० ॥ ४ ॥ व्रतलेइविसारीयांजीवळीभा ग्यांपच्चख्खाण, कपटहेतुकीरीयाकरीजी, कीधांआपवखा णरे जीनजी० ॥ ५ ॥ त्रणढालआठदुहेजीआलोयाअ तिचार, शिवगतिआराधनतणोजीएपेहलोअधिकार जी नजी० ॥ ६ ॥

ढाळचोथी.

॥ साहेलडीनीदेशी । पंचमहाव्रतआदरोसाहेलीरे अथवातोल्याव्रतबारतो, यथाशक्तिव्रतआदरी सा० पाळो निरतिचारतो ॥ १ ॥ व्रतलीधांसंभारीए सा० हैडेधरीय विचारतो, शिवगतिआराधनतणो सा० एबीजोअधिकार

तो ॥ २ ॥ जीवसर्वेखमावीए सा० योनिचोरासीलाख तो, मनशुद्धेकरीखामणां सा० कोइशुंरोषनराखतो ॥३॥ सर्वमित्रकरीचिंतवो सा० कोइनजाणोशत्रुतो, रागद्वेषए मपरिहरो सा० कीजेजन्मपवित्रतो ॥ ४ ॥ स्वामीसंघ खमावीए सा० जेउपनीअप्रीतितो, सज्जनकुटुंबकरीखा मणां सा० एजीनसासनरीततो ॥ ५ ॥ खमीएअनेख मावीए सा० एहजधर्मनोसारतो, शिवगतिआराधनतणो सा० एत्रीजोअधिकारतो ॥ ६ ॥ मुषावादहिंसाचोरी सा० धनमूर्छामैथुनतो, क्रोधमानमायातृष्णा सा० प्रेम द्वेषपैशुन्यतो ॥ ७ ॥ निंदाकलहनकीजीए सा०, कुडां नदीजेआळतो, रतिअरतिमिथ्यातजो सा० मायामोहजं जाळतो ॥ ८ ॥ त्रिविधत्रिविधवोसरावीए सा० पापस्था नअढारतो, शिवगतिआराधनतणो सा० एचोथोअधिका रतो ॥ ९ ॥

ढाळपांचमी.

॥ हवेनिसुणोइहांआवीया एदेशी । जनमजरामर णेकरीएएसंसारअसारतो, कर्योकर्मसहुअनुभवेएकोइनस खणहारतो ॥ १ ॥ शरणएकअरिहंतनुंएशरणसिद्धभगवं

नतो, शरणधर्मश्रीजैननोएसाधुशरणगुणवंततो ॥ २ ॥ अवरमोहसविपरिहरिएचारशरणचित्तधारतो, शिवगतिआराधनतणोएएपांचमोअधिकारतो ॥ ३ ॥ आभवपरभवजेकर्याएपापकर्मकेइलाखतो, आत्मसाखेतेनिंदीएएपडिकमिएगुरुसाखतो ॥ ४ ॥ मिथ्यामतिवर्तावीयाएजेभाख्यांउत्सुत्रतो, कुमतिकदाग्रहनेवशेएवळीउथाप्यांसुत्रतो ॥ ५ ॥ घड्यांघडाव्यांजेवणांएघरंटीहळहथीयारतो, भवभवमेलीमुकीयांएकरतांजीवसंहारतो ॥ ६ ॥ पापकरीनेपोषीयाएजनमजनमपरिवारतो, जनमांतरपोहोत्यापछीएकोइनकीधीसारतो ॥ ७ ॥ आभवपरभवजेकर्याएएमअधिकरणअनेकतो, त्रिविधेत्रिविधेवोसरावीएआणीहृदयविवेकतो ॥ ८ ॥ दुःकृतनिंदाइमकराएपापकरयापरिहारतो, शिवगतिआराधनतणोएछठ्ठोअधिकारतो ॥ ९ ॥

ढाळछठी.

॥ आदेतजोयनेजीवडा एदेशी । धनधनतेदिनमाहरो, जीहांकीधोधर्म, दानशीयळतपभावना, टाळ्यांदुष्कृतकर्म धन० ॥ १ ॥ शत्रुंजआदिकतिर्थनीजेकीधीजात्र, जुगतेजिनवरपुजीया, वळीपोख्यांपात्र धन० ॥ २ ॥

पुस्तकज्ञानलखावीयां. जीणहरजिनचैत्य, संघचतुर्विधसा चव्या, एसातेखेत्र धन० ॥ ३ ॥ पडिकमणांसुपरेकर्यां, अनुकंपादान, साधुसुरिउवझायने, दीधांबहुमान धन० ॥ ४ ॥ धर्मकाजअनुमोदीए, एमवारोवार, शिवगतिआ राधनतणो, एसातमोअधिकार धन० ॥ ५ ॥ भावभलो मनआणीए, चित्तआणीठाम, समताभावेभावीए, एआ तमराम धन० ॥ ६ ॥ सुखदु खकारणजीवने, कोइअवर नहोय, कर्मआपजेआचार्यां, भोगवीएसोय धन० ॥७॥ समताविणजेअनुसरे, प्राणिपुन्यकाम, छारउपरतेलीपणुं, झांखरचित्राम धन० ॥ ८ ॥ भावभलीपरेभावीए, एध र्मनोसार, शिवगतिआराधनतणो, एआठमोअधिकार धन० ॥ ९ ॥

ढाळसातमी.

॥ रेवतगीरीहुआप्रभुनांत्रणकल्याण एदेशी । हवे अवसरजाणीकरी संलेखणसार, अणसणआदरिए, पच्च खीचारेआहार, ललुतासविमुकी, छांडीममताअंग, एआ तमखेले, समताज्ञानतरंग ॥ १ ॥ गतिचारेकीधा, आहा रअनंतनिशंक, पणतृप्तिनपाम्यो, जीवलालचीयो, रंक,

दुलहोएवलीवली, अणसणनोपरिणाम, एहथीपामीजे, शिवपदसुरपदठाम ॥ २ ॥ धनधनाशालिभद्रखंधोमेघकुमार, अणसणआराधी, पाम्याभवनोपार, शिवमंदिरजाशे, करीएकअवतार, आराधनकेरो, एनवमोअधिकार ॥ ३ ॥ दशमेअधिकारेमहामंत्रनवकार, मनथीनविमुको, शिवसुखफलसहकार, जेजपतांजाये, दुर्गतिदोशविकार, सुपरेएसमरो, चौदपूरवनुंसार ॥ ४ ॥ जनमांतरजातां, जोपामेनवकार, तोपातीकगोलीपामेसुरअवतार, एनवपदसरिखो, मंत्रनकोसंसार, एभवनेपरभवे सुखसंपतिदातार ॥ ५ ॥ ज्युंभीलभीलडी, राजाराणीथाय, नवपदमहिमाथी, राजसिंहमहाराय, राणीरतनवतीबेहु, पाम्यांछेसुरभोग, एकभवपछीलेशे, शिवबधुसंजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीनेएवली, मंत्रफल्योतत्काल, फणीधरफीटीने, प्रगटथइफुलमाल, शिवकुमारजोगी, सोवनपूरीशोकीध, एमएणेमंत्रे, काजघणानांसिद्ध ॥ ७ ॥ एदशअधिकारे, वीरजीणेसरभाख्यो, आराधनकेरोविधि, जेणेचित्तमांहीराख्यो, तेणेपापपखाली, भवभयदुरनाख्यो, जीनविनयकरंतां, सुमतिअमृतरसचाख्यो ॥ ८ ॥

ढाळआठमी.

॥ नमोभविभावशुं एदेशी । सिद्धारथरायकुळतिलोए, त्रिसलामातमल्हारतो, अवनीतळेतमेअवतर्याए, करवाअमउपकारतो जयोजीनवीरजी ॥ १ ॥ मेंअपराध कर्याघणाए, कहेतांनलहुपारतो, तुमचरणेआव्याभणीए, जोतारेतोतारतो जयो० ॥ २ ॥ आशकरीनेआवीयाए, तुमचरणेमहाराजतो, आव्यानेउवेखशोए, तोकेमरहेशेलाजतो जयो० ॥ ३ ॥ करमअलुजणआकरांए, जन्ममरणजंजाळतो, हुंछुंएहथीउभगोए, छोडवदेवदयालतो जयो० ॥ ४ ॥ आजमनोरथमुजफळ्याए, नाठांदुःखदंदोलतो, तुठ्येजीनचोवीसमोए, प्रगट्यांपुन्यकल्लोलतो जयो० ॥ ५ ॥ भवेभवेविनयतुमारडोए, भावभक्तितुमगायतो, देवदयाकरीदीजीएए, बोधबीजसुपसायतो जयो० ॥ ६ ॥

कळसः

॥ एहतरणतारणसुगतिकारण, दुःखनिवारणजगजयो, श्रीवीरजीनवरचरणथुणतां, अधिकमनउलटथयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेवसुरिंदपटधर, तीरथजंगमएणीजगे.

तपगच्छपतिश्रीविजयप्रभुसूरी, सूरितेजेझगमगे ॥ २ ॥
श्रीहिरविजयसूरिशिष्यवाचक, श्रीकीर्तिविजयसुरगुरुस
मो, तसशिष्यवाचकविनयविजये, थुण्योजिनचोवीसमो
॥ ३ ॥ सइसत्तरसंवतओगणत्रीशे, रहीरांदेरचोमासुए,
विजयादशमीविजयकारण, कीयोगुणअभ्यासए ॥ ४ ॥
नरभवआराधनासिद्धसाधन, सुकृतलीलविलासए, निर्ज
राहेतेस्तवनरचियुं, नामेपुन्यप्रकाशए ॥ ५ ॥

॥ अथश्रीदादाजीचैत्यवंदन ॥

॥ जिनपदकुलमुखरसअनिल । मितरसगुणधारी ।
प्रवलप्रबलधनमोहकी । जिणतेचमुहारी ॥ १ ॥ रूचा
दिकजिनराजगीत । नयतनविस्तारी । भवकूपेपापेपड
त । जगजननिस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारीजीवकेआचारि
जपदसार । तिनकुंवंदेहीरधर्म । अठोत्तरसोवार ॥ ३ ॥
इतिआचार्यपदनमस्कारः

जंकिंचि । नमोत्थुणं । जावंतिचेइआइं । जावंत
केविसाहू । परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ अथगुरुदेवजीकास्तवन ॥ रागप्रभाती ॥

॥ श्रीजिनदत्तसूरिंदापरमगुरु ॥ श्रीजि० ॥ परम

दयालदयाकरदीजे । दरिसनपरमआनंदा ॥ प० ॥
श्री० ॥ जंगमसुरतरुवंछितदायकसेवकजनसुखकंदा ॥
सद्गुरुध्याननामनितसमरणदूरहरणदुःखदंदा ॥ प० ॥
श्री० ॥ १ ॥ निजपदसेवकसांनिधकारी, रखीयेगुरुरो
जिंदा ॥ करजोडीविनययुतविनवेश्रीजिनहरखसूरिंदा ॥
प० ॥ श्री० ॥ २ ॥ इति. ॥ जयतीअरा न ॥ वंदणव
त्तिआए ॥ अन्नत्थउसंसिएणंकही ॥

॥एकनवकारनोकाउसग्गकरवोपारीएकथुईबोलवी॥

॥ अथआचार्यपदस्तुतिः ॥

॥ पंचाचारकुंपालैउजवालैदोपरहितगुणधारीजी ॥
गुणछत्तीसेआगमधारीद्वादशअंगविचारीजी । प्रबलसव
लघनमोहहरणकुंअनिलसमोगुणवाणीजी । क्षमासहित
जेसंयमपालेआचारजगुणध्यानीजी ॥

॥ श्रीगौतमाष्टकछंद ॥

॥ वीरजिणेसरकेरोशिष्यगोतमनामजपोनिसदीस
जोकीजेगोतमनुंध्यानतोघरविलसेनवेनिधान ॥ १ ॥
गोतम नामे गिरिवर चढे मनवंछीतलीलासंपजे गोतम
नामें नावेरोग गोतम नामेसर्वसंजोग ॥ २ ॥ जे वेरी

वेरुआवक्डातसनामेनावेढुकडाभूतप्रेतनविखंडप्राणतेगोत
मनाकरुवखाण ॥ ३ ॥ गोतमनामेनिर्मलकायगोतमना
मेंवाधेआयगोतमजिनशासंनसीणगारगोलमनामेजयजय
कार ॥ ४ ॥ सालदालसुरहाग्रनगोतमनोवांछीतकापडनं
ब्रोलघरसुघरीणीनीरमलचिंतगोतमनामेपूत्रविनित ॥ ५ ॥
गोतमउदयोआविचलभाण गोतमनामजपोगजजाणम
होटांमंदीरमेरुमसोंन, गोतमनामेसफलविहाण ॥ ६ ॥
घरमयगलघोडानीजोडवारुपओचेवांछीतंकोड ॥ महीय
लमानेमहोटाराय, जोतुठगोतमनाथाय ॥ ७ ॥ गोतमप्र
णम्यापातकटलेउत्तमनरनीसंगतमले ॥ गोतमनामेंनि
र्मलज्ञांनगोतमनामेवाधेवान ॥ ८ ॥ पुण्यवंतअवधारोस
हगुरुगोतमनागुणछेवहु ॥ कहेलावण्यसमयकरजोडगोत
मतुठसंपतीकोड ॥ ९ ॥

॥ अथपुंडरीकगणधरजीस्तवन ॥

॥ श्रीपुंडरीकगणधरनमुंपुंडरगिरिसिणगारलालरे ॥
पांचकोडमुनिपरिवर्या, कीधोअणसणसारलालरे ॥ पुं०
॥ १ ॥ आदीसरजिनउपदिसे, एतीरथपरसादलालरे ॥
सिवकमलातुमेपामशो, मेटीसहुविखवादलालरे ॥ पुं० ॥

२ ॥ तीरथपतीमांहुंअछुं, प्रथमतीरथइमजाणलालरे ॥ प्रथमसिद्धसिद्धाचले तुमथास्योमहिराणलालरे ॥ पुं० ॥ ३ ॥ प्रभुनीआणाआदरीसंलेखनाचिनलायलालरे ॥ चैत्रीदीनसीवपुरलह्या, घातीकर्मखपायलालरे ॥ पुं० ॥ ४ ॥ यात्राविधीसुंकीजिए, जिनजीदियोउपदेशलालरे ॥ कृपाचंदगिरिराजनी, चाहेसेवाहमेशलालरे ॥ पुं० ॥ ५ ॥

॥ अथचतुर्दशीस्तुति ॥

॥ अविरलकमलगवलमुक्ताफलकुवलयकनकभासुरं ॥ परिमलबहुलकमलदलकोमलपदतललुलितनरेश्वरं ॥ त्रिभुवनभवनसुदीप्रदीपकमणिकलिकाविमलकेवलं ॥ नवनवयुगलजलत्रिपरमितजिनवरनिकरंनमाम्यहं ॥ १ ॥ व्यंतरनगररुचिकवैमानिककुलगिरिकुंडसकुंडले ॥ तारकमेरुजलधिनंदीसरगिरिगजदंतसुमंडले ॥ वक्षस्कारभवनवनजोत्तरकुरुवैताढ्यकुंजिगा ॥ त्रिजगतिजयतिविदितशाश्वतजिननतिततिनिग्हिमोहपारगा ॥ २ ॥ श्रुतरत्नेकजलधिमधुमधुरिमरसभरगुरुसरोवरं ॥ परमततिमिरकिरणहरणोद्धुरदिनकरकिरणसहोदरं ॥ गमनयहेतुभंगगंभीरिमगणधरदेवगीष्पदं ॥ जिनवरवचनमवनिमवतात्सुचिदि

शतुनतेषुसंपदं ॥ ३ ॥ श्रीमद्भारच भरतीर्थाधिपमुखकम लाधिवासिनी ॥ पार्वणचंद्रविशदवदनोज्वलराजमरालगामिनी ॥ प्रदिशतुसकलदेवदेवीगणपरिकलितासतामियं ॥ विचकलधवलकुवलयकलमूर्तिःश्रुतदेवीश्रुतोच्चयं ॥ ४ ॥

॥ तिथिनिर्णयोलिख्यते ॥

॥ जोप्रतिपदा१तिथीक्षमहोतोप्रतिपदा१का, पच्चखाणव्रन ॥ पिछलीअमावस्या३०तिथकोंकरै ॥ अष्टमीक्षमहोतोअष्टमीकाव्रतसप्तमीकोंकरै ॥ औरजोचौदसक्षमहोतोचौदसकाउपवास ॥ अमावसवापूनिमकोंकरैइसकाकारण यहदोनुंतिथीसमानहै ॥ जैसेंचौदसवडीतिथीहै ॥ तेंसेंअमावसपूनमभीचिरंतनपक्षीकादिनहै ॥ इसीसेंयहदोदिनवडेहै ॥ यहदोदिनमेंउत्तमभव्यजीवयथाशक्तिपोशहपडिक्कमणादिधर्मकृत्यकरै ॥ पारणेंउत्तरपारणेंधर्मकाउद्योतकरै ॥ इहांविशेषकहतेहैइससमयमेंजैनीपत्राप्रसिद्धनहीं ॥ मिथ्यात्वीकेपत्रोसेंदखक्षबातिथीगिणनेमेंआतीहै ॥ औरइसपत्रेकाकुछप्रमाणनहीं ॥ हरकोइतिथक्षमहोजातीहै ॥ इसीसेंजोचौदशक्षमहोतोउपवाशतथापखीपाडिक्कमण निस्संदेहपूनमतथाअमावसकेदिनकरैपरंतुतेरशचौदशके विनथ्थेको

नकरै ॥ औरजोवेलाकरै ॥ तथाहरीछोडतोगर दोनुंदिन मानै॥ अवकोईवेरसंवच्छरीकीचोथकमहोतोपंचमीकेदिन संवच्छरीपडिक्कमणकरै ॥ परंतुतीजकेदिनकदापिकालैन करैऔरजोचौथदोहोयतेपहलीचोथसंवच्छरीकरै ॥ और भीकोइतिथदोहोयतोपहलीतिथमान्यनीकहै ॥ दूसरीलूंड तिथीरही ॥ दूसरोयहप्रमाणहैपाठघडीकीअखंडतिथीछोड कै ॥ घडीअधघडीकीदूसरीतिथीकोणमानेंइहांकोईकहैअ पणेंउदयतिथोमानेंहै ॥ सूर्यऊगेइहांतककोईतिथीहोनोभी उसदिनउसीतिथकोंमानेंहैइसीसेंजोदूसरी तिथअधघडीभी होतोमानणेंमेंक्यादोषहै ॥ इसकाउत्तरहेभव्यजोपहलेदि ननीजमानीहैऔरतीजकेदिनचोथचऊनघडीभुगतेगा॥पि णउसदिननीजमानीजैगा ॥ इसीतरैचौथकेदिनसूर्यऊगेइ हांतकघडीअधघडीभीचौथहोगातोचौथमानीजैगा ॥ पर जोतिथीदोहोय ॥ उसमेंतोपहलीतिथसूर्यउदयअस्तदोनुं मेंरहीइसीसेंपहलीतिथछोडके दूसरीतिथग्रहणायुक्तनहीं॥ औरकार्त्तिकमासवधैतोपहलेकार्त्तिकचोमासोकरै ॥ फाल्गु णवधैतोदूसरेफाल्गुणचोमासोकरै ॥ आशाढवधैतोदूसरेआ शाढचोमासोकरै ॥ आशाढचोमासेकीचौदशसें ॥ पचा

सैदिनचौथकोंसंवच्छरीपर्व्वकरै ॥ चौथकसहोतोपाचमके दिनसंवच्छरीकरै ॥ श्रावण ॥ भाद्रवो ॥ आसोज ॥ बढैतोपंचमाशीचौमाशोकरै जोश्रावणमाशवढैतो, दूसरेश्रावणशुद४कोंसंवच्छरीकरै परचौमाशकीचौदशसेंपचासदिनउलंघके, संवच्छरीपर्वकदापिकालेनहो. यहकल्पसुत्रजीकैपहलीसमाचारीमेंप्रसिद्धपाठहै, औरचौमाशेमें, श्रावण ॥ भाद्रवो ॥ आशोज ॥ यहतीनमाशवढैतोपंचमाशीचौमाशोकरै ॥ औरजोमाशदोहोयउसमेंपहलामाशकाकृष्ण पक्ष ॥ दूसरेमासकाशुक्लपक्ष ॥ ऐसेंएकमाशमेंजोकल्याणकतिथीहो ॥ उसीकाव्रतपच्चखाणकरै ॥ बीचका३०दिनलुंडजाणना ॥ यहतीशदिनमेंकल्याणकादिकके व्रतपच्चखाणनहोशकेइसीसेंविवेकीजीवसबतिथीकाविचारसमझके व्रतपच्चखाणकरैतोव्रतभंगकभीनहो ॥ यहतिथोंकाप्रमाणश्रीहरिभद्रसूरजीमहाराजकाकियाहुवा ॥ तत्वतरंगणीग्रंथमेंप्रसिद्धहैसोइहांकिंचितालिखतेहैं ॥

॥ तिहिपडणेपुव्वतिही ॥ कायव्वाजुत्तधम्मकज्जेय ॥ चाउद्दसीविलोवो ॥ पुन्नमियपखिपडिकमणं ॥ १ ॥ तथ्थेवपोसहाविही ॥ कायव्वासव्वगोहिसुहहेऊ ॥ नहुतेर

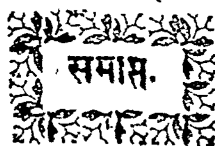
सीइकीरई ॥ जहानाणाइणोदासा ॥ २ ॥ सुरोदयपडि यावि ॥ तेरसीहुंतिनपखियंकुज्जा ॥ चाउम्मासियकरणे ॥ एसविहीदेसिओसमणा ॥ ३ ॥ तिहिबुद्धीएपुव्वा ॥ गहियापडिपुन्नभोगसंजुत्ता ॥ इयराविमाणणिज्जा ॥ परं थोवत्तिनतत्तुल्ला ॥ ४ ॥

॥ (तथा) ज्योतिषकरंडपाहुडकेइदंकथितमिस्तछठि सहियानअठमी ॥ तेरसिसहियानपखियाहोई ॥ पडिवैस हियानकयावि ॥ इइभणियावीयरागेण ॥ १ ॥ अठमि दिनंमिपायं ॥ कायव्वाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमं मि ॥ नवमीछठीनकायव्वा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे ॥ कायव्वंपखियंतुपाएण ॥ चाउद्दसेविकइया ॥ नहुतेर मिसोल्समेकहवि ॥ ३ ॥

॥ श्रीभीनासरपार्श्वप्रभुस्तवन ॥

॥ भीनासरपार्श्वप्याराहै । जगतकेसुखकाराहै ॥ टेक० ॥ दरशकोआयामेंप्रभुजी । चतुर्विधसंघसाराहै ॥ जनमपावनकियामेंने । सबहीआनंदकाराहै ॥ भी० ॥ १ ॥ जगततीनोंकेनाथाहो । इसेंहमकोप्रमाणाहै ॥ स कलगुणकेनिधानाहो । अखिलदोषोंकोत्यागाहै ॥ भी०

॥ २ ॥ रागादिदुष्टशत्रुकी । मुलसेंतोडडाराहै ॥ अनंत शक्तिकेधारि हो । अवरनहींतुमससमानाहै ॥ भी० ॥ ३ ॥ फरेबीअष्टकर्मोंने । जखडकरआनघेराहै ॥ भयानकरूप कोदेखा । थराथरदेहकाँपाहै ॥ भी० ॥ ४ ॥ प्रभुमुझ कोछुडालेना । तुमाराहीआधाराहै ॥ कृपाकरतारलोमुझ कों । यहीआर्जुहमाराहै ॥ भी० ॥ ५ ॥ आनंदमल औरसुगनचन्द । दिलोंसेंभक्तिकाराहै ॥ जिनेश्वरकीपू जाखकर । कर्मोंकावृन्दतोडाहै ॥ भी० ॥ ६ ॥ सकल संघभक्तिकेहेतु । स्वामीवात्सल्यकीनाहै ॥ जनमसफल कियेअपने । भवीभवसुखकाराहै ॥ भी० ॥ ७ ॥ वीर चौवीस्सेचालिशमें । जेष्टशुक्लाद्वितीयाहै ॥ भीनासरनग रकेमाही । झलाझलठाठमचायाहै ॥ भी० ॥ ८ ॥ वृहत् खरतरमेंदीपे । सुखमुनिन्द्ररायाहै ॥ तासाशिष्यगुरुभग वन् । विनयवन्तकहायाहै ॥ भी० ॥ ९ ॥ तासपटधरत्रै लोक्यसिंधु । गुरुपदकोंदिपायाहै ॥ कृपाकरीतारियेजि नजी । आनंदनेगुनकोगायाहै ॥ भी० ॥ १० ॥



॥ ॐ: आतमनिद्या लिख्यते ॥

॥ हे आत्मा! हे चेतन! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें प्रवृत्ति, यह रसगृद्धी पणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घडी मात्र कालमे तुं मत चितवन कर. क्यारें तुं सम्एक्तमोहनीमे, कभी तुं मिश्रमोहनीमे, कभी तु कामरागमें, कभी तो स्नेहरागमें, क्यारे तुं दृष्टिरागमें, कभी तुं कुगुरूमे, कभी तुं कुदेवमें, कभी तुं कुधर्ममें, कभी ज्ञान विराधनामें, कभी दर्शन विराधनामे, कभी चारित्रविराधनामें, कभी मनोदंडमें, कभी वचनदंडमें, कभी कायदंडमें, कभी हास्यमें, कभी रतिमे कभी अरतीमे, कभी भयमें, कभी सोकमें, कभी दुगंछामे, कभी कृष्णलेश्यामे, कभी नीललेश्यामें, कभी कापोतलेश्यामें, कभी तुं शुद्धिगारवमे, कभी तुं रसगारवमें, कभी तुं सातागारवामे, कभी तुं मायासल्यमे, कभी तुं नियाणासल्यमें. कभी मिथ्या दर्शनमें, कभी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कभी तेरे वाङ्मि ...र अठारे पापस्थानक

तुं आ ... दुष्टी, महा दु...

थिका जाया, अरे तुं हीणपुन्निया, अरे तुं हीणदृष्टी, अरे तुं अयोग्य कामका करणहार, रे तुं दुष्ट पापिष्ट जीव, प्राये तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानुबंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोभरी चोकडी, विचारा तेरे खपी नही, गुणठाणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटि नही, दरियाव जेसा कल्लोल तेरे उछल रहा हे, तुं जो धर्मक्रिया करता हे सो शून्य मनसें करता हे, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें करी जो क्रिया सो राख पर लींपणे जेसा हे, अरे चेतन ! सोगन नही लेवे सो पापी, ओर लेकर भांगे सो महापापी, तें अनंतकाय अभक्ष्य, शीलव्रत, जरदा, भांग, अमल, तमाखू, आदिका सोगन लेकर खोटा किया, तेरा कहां छूटकबारा होगा, रे चेतन ! तें पुदगलरे वासतें कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो हे, मेरे पारस पत्थर, मेरे नवनिधांन, मेरे रसकूंपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अमृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो जाउं,

प्रधान हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन करूं, ये वाते तेरे हमेसां उपजै, दसमे गुणठाणेवालेकेही लोभका त्याग नही, तो तेरी गरज तो केसें सरे, हे चेतन! तुं मनमें विचारता हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुद्गल, अरे चेतन! चोरासी फिरते चोरासी लाख घर करता फिरा, संसारमे न किसीका तुंहे, नाहि कोई तेरा हे, रे चेतन! तुं तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणे, केइ वखत पुत्रपण, केइ वखत पुत्रीपणे, किसी वखत स्त्रीपणे, जेसें ठगकी बेटी ने मांसे पूछा—माताजी में जो पाप करती हुं सो कोण भोगेगा? मा बोली—बेटी, करेगा सो भोगेगा, तवतो उसने कहा धिक् हे ईस स्वार्थीयें संसारकूं, कोई किसीका नही, यह मनुष्यजन्म. आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वर देवकाधर्म पुन्यांनुबंधी पुन्यसे पाया, और पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें कउएकूं उडाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें ते चिंतामणिरत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आडंबरी कुगुरुऊके उपदेसमें चि-

तामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म आज्ञाप्रमाण जो था सो तेनें खो दिया, अव तेरा निस्तारा केसें होय, विष्टा-में कृमिपणें तें अनंती वार पेदा भया, मांनरूपी गजपर बाहूबल चढा ओर संज्वलनमांन था, ओर ब्राह्मी सुंदरी बहिना जैसी समझाणेवाली थी जब समझे, ओर तेरे सो एसा मांन, अरे चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं भरतमाहाराजा जिणोंके केसीक राजऋद्धि सो केसी-क भावना भावतां, धिःकार राज्यनें, धिःकार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं, धन्य श्रीतीर्थंकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पाल-ते हें, धन्य जो सर्वविरती धर्म पालते हें, धन्य जो दांन देते हें, धन्न जो सील पालते हें, धन्य जो तपस्या क-रते हें, धन्य जो भावना भाते हें, एसें भावना भावतें भरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन पाया, इस तरें रे जीव तुं उनोकी बराबरी मतकर, वहतो तेसठ सलाका पुरुष चौथे आरेका जीव तें पंचम कालका भरतक्षेत्रका कीडा उनोके देखते तुं किस गिणतीसें, कर्म अजीव वस्तु तें जीव वस्तु, जीवसें जीव तो हमेसां परिचय

करे लेकिन् अजीवसे क्यों करे, कर्म सवल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदपूर्वधारीयोकों गिगया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव भुवनभानु केवलीजी, कमल प्रभाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकूं डिगाय दिया तो तेरी तो विसायतही क्या, आठ करम अठावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता जाय, मोहकर्म पीछै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेचन चारित्रकी फोजमें रह सद्‌बोध मोहतेकी आज्ञामें रह सदागुमखुं परिचय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीछी मार, जेसें तुं तिर जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुसे गुप्ता, छकायका पीयर, सात महाभयका टालणहार, आठ मदका जापक, नवविध ब्रह्मचर्यकी वाडका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका उजवालक. इग्यारे अंगका भणणेवाला, बारे उपांगका भणणेवाला, कुरकीसंचल मलि, मलिणगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि प्रभूकी आज्ञा मुजव धर्म पाले, रे चतन तुझे कव उदे आवेगा रे चेतन तेरे उदय कहांसे आवे, तेरे संसारकी बहुलताई, धन्य देव्रती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके

प्रभात उठ सामायक करे, पडिकमणो करै, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी सुणै, देववंदन, देवपुजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी पोसा, संध्याकूं देवसी पडिकमणा जिनाज्ञा प्रमांणै षडावश्यक कर, मुझमें कभी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सामायक मनशुद्धे करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वांचनेकी खप करो, जेसें भवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह लक्षण हे, ओर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप हे, तुझे पढणे गुणनेकी लगन नहीं, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय वहुमान नहीं किया, जो श्रुतज्ञानकी भक्ति करते हे उनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती हे, केवलज्ञांन ओर केवलदर्शन पाता हे वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका भर्त्तार होता हे. दिवस प्रते तै कोई सुजांण सोना खंडी लक्ष प्रमाण, उसके पुण्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥१॥ लेकिन तुं इस भरोसे मत भूल, यह तेरी सामायक वो नहीं, वह सामायक आनंद संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंद्राव

तंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी है कांम काज घरका चिंतवे, निंदा विकथा कर खिज रहे; आरत रौद्र-ध्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करे ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण एसें हे अपणा पराया सरपा गिणे, कंचन पत्थर समवड धरें, साचो थोडो आगम भणे, ते सामायक शुद्ध करे ॥ १॥ रे चेतन तैं परायाबुरा चाहना, अपना भला चाहना, वो पराया बुरा या नहीं चाह्या वो तेंने अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करे, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा हे, तुं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी हे, अफरसी हे, अघाती हे, अलेसी हे, अविनासी हे, तुं दिलमें विचारता हे यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन हे, कोण तेरा सज्जन और कोण तेरा दुस्मन हे, आठ कर्मरूपिया सत्रु हे. जिनोंकों तुं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल भसम कर जिस्से तेरी गरज सरे. अहोहो में भव्य हूं अभव्यहूं, मेरे संसार पांत बहोत दिसता हे. प्राये तो में अभव्यही दिसताहूं. पीछे तो ज्ञानीयोने भाव देखा सो सही,

हे रे भाइ तुं तो एसी सामायक करता हे, खुणे खाज मोडे करडका, उंघतणा लेवे सरडका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिकारेगा जब लेखे लगेगा, दुहा—आतमनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मुनि कीन; जो आतमनिंद्या करे सो नर सगुण प्रवीण ॥ १ ॥ इति आतमनिंद्या संपूर्णम्—

॥ तीन मनोरथ ॥

॥तीनमनोरथ श्रमणोपासक करतो थको महामोटीकर्म निर्जराकरैसंसारनोअंतकरै पहिलै मनोरथ श्रावकइम चिंतवै किवारेहुंपरिग्रहनै आरंभछांडसुंथोडो ने घणोनांनोनेमोटोसचित्तअचित्तनैसिशूहलवो नैनारी अभ्यंतरनै बाह्यमहादुःखकारी महाअनर्थकारी महापापनो मूल महादुर्गतिनो बीज भूतबंधणहारकंदर्प्य क्रोधमांनमाया लोभ कषायनो स्वांमी महाभूंडीतुलेस्या अध्यवसायपरिणांमी मोहमच्छर रागद्वेषनोमुलदसाविधयतीधर्मरुपकल्पवृक्षनोदावानलन्याय कृपा क्षमादया सत्य संतोषनो नसावणहारसम्यक्त्वबोधवीजनो फेडणहारसंयमसंवरव्रत ब्रह्मचर्यनो घारकपांचसुमति त्रिणगुप्तिनोनासक तपसंयमरुपधर्म धननो लुंटणहारभवसमद्रनोवद्धावणहार जन्मजरामरणरोग सोकभयनोदायक

अनंतसंसारवृद्धिकारकमाया निदांन मिथ्यादर्शनसल्यभ-
रयौ मोक्षमार्गरुपद्वारनै विघनकरवाभणीअर्गलासमांन म-
हाविरुपकर्मोविपाकनोवरपांच इंद्रीरात्रिपयनौ पुरक्कअनादि
विखवेलनोसींचकमहापापी वधवंधक्केसदुखनो आगर महा-
मंदवुद्धीनौआदरीयो सर्वसाधुनिग्रंथनो निदीयो सर्वजीव
लोकनेविसैएसरिखोभूंडोवीजोकोइनही मोहपासप्रतिवद्ध
इहलोकपरलोकसुख रहित महापांचआश्रवनोनिद्धांनमहा
अनंतदारुण कर्कसकटोर दुखअसाताभयनोदायकसाविद्य
व्यापारकुविणजकरमादांनपापस्थांननो कारकअक्रुवआनि-
त्य असारअसरणआसास्वतअधर्मजीवनैदुखदेवाभणी चि
तामणिकल्पवृक्षकामधेनुसहसदोससयजालमूलंइतिशास्त्रो-
क्त वचनात महानिदनीकएहवोआरंभ परिग्रहनैं किवारैहुं
छांडसुंसोदिनधन्यहुंसि ॥१॥ वीजै मनोरथश्रमणोपामकइम
चितवै किवारैहुंमुंडथइनै दसविधयती धर्मधारी नववाड-
विशुद्ध ब्रह्मचारी सर्व सावद्य परिहारी सत्तावीस अणगा-
रगुणधारी पंचमहाव्रत पंचआचार पांचसुमति तीनगुप्ति
विशुद्धविहारी द्रव्यादि अनेक महाअभिग्रहधारी वयाा-
लीस सदोप विशुद्धआहारी सतेरैभेदे संयमधारी वारे

भेदे तपस्याकारी अंतआहारी पंतआहारी अरसआ-
हारीविरसआहारी अंतजीवी पंतजीवी अरसजीवी वि-
रसजीवी रुक्षजीवी तुच्छजीवी उपसांतजीवी प्रसांतजी-
वी सर्वरसपरित्यागी छकायना प्रतिपाल निर्लोभी निग्रं-
थीसत्यवादी तुक्षिसंबलामलमलिनगात्रं चारित्रपात्र महा
कृशदुर्बलधमनीतथाकाकजंघासदृशवायशरीरपरै प्रतिबंधर-
हितवीतरागनी आज्ञासहित एहवो शुद्ध अणगारगुणधारी
किवारैं हुंथाईससोदिनधन्यहुंसि ॥ २ ॥ तीजैमनोरथ श्र-
मणोपासकइमचिंतवे किवारैं हुंसरबपापआलोइनंदीनिस-
ल्पथईने सर्व जीवरासि खमावीने सर्व व्रतसंभालीने
अढार पापस्थान त्रिविधत्रिविध पचखीने चार आहार
पचखीने जंपि इमं मम सरीरं इठंकंतंपियंमणुणं मणा-
मंजावरतन करंडियासमान हुंतो ते पिणछेहले सासउ-
सासबोसरावीने तीन आराधना आराधतो थको काल
अणवांछतो थको एहवो पंडित मरण च्यार सरणा चार
मंगलीक मुखे उचरतो थको सर्व संसारनें पूठ देतो थको
अरिहंत सिद्धसाधु केवलिया भाखितधर्म ध्यांनध्यावतो
थको एसरीरनी ममताराहित एहवा पंडित मरणना पांच

तीचारटालतोथकोकालअणवांछतो थकौ एहवो पंडितमर णमुजनैअंतकालै हुयज्यौ एहवा तीनमनोरथश्रावक चिं तवतोथकौ महामोटीकर्मनिर्जराकरे भवसमुद्रनो पारपामी मुक्तिरमणिअनुक्रमैवरै ॥ ३ ॥

॥ अथ जिनप्रतीमाके निंदक, ढूंढक शिक्षा बत्रीशी ॥

॥ कक्काकर्मतर्णागतिदेखो, ढूंढकनामधरायाहै जिनकेनामसेरोटीखावे, तिनकानामभूलायाहै ॥ जिन मारगकानामविसारी, साधमारगनिपजाहै। सीखमानस द्गुरुकीढूंढक, विरथाजनमगमायाहै ॥ १ ॥ खख्खाखो- जकरजैनधर्मकी, मारगतुमनहींपायाहै । वासीविद्दलखा- केतुमने, खराधरमडुबायाहै ॥ अंदरकामुखखुल्लारखके, उपरपाटाखांच्याहै । सीख० ॥ २॥ गग्गागिलचपणाकर गाढाजैनधरमलजवायाहै । सूत्रनिशीथउद्देशेचौथे, अशु- चीदंडगवायाहै ॥ गपडसपडकरजुठलगावे, सत्यसेतीग- भरायाहै ॥ सीख० ॥ ३ ॥ घग्घाघरकीखबरकरोतुम, क्याघरमेंबतलायाहै ।[1]बारगुणेअरिहंतविराजे, पाठकहांद-

१ बत्रीश सूत्रोंके मूल पाठमे—अरिहतके १२ गुण । और १८ दूषणका वर्णन नहीं है । तोपी छे हमारे ढूढक भाईओ, कहासें लाके पुकारते है, तो उनका मान्य ग्रंथ बतलावे ॥

रसायाहै ॥ मनकोभायामानलिया, मनकल्पितपंथचला-
याहै ॥ सीख० ॥ ४ ॥ चच्चाचोरीदेवगुरुकी, करकेसर्व-
चुरायाहै । भाष्यचूर्णिनिर्युक्तिटीका, अर्थसेंचित्तचोराया-
है ॥ चितकल्पितजुठेअर्थोंसें, सच्चाअर्थचुरायाहै । सीख०
॥ ५ ॥ छच्छाछमछमरीकोचालीस, वीसचोमासेंछांन्या-
है । पख्खीबारलोगस्सकाकाउसग, पुछोकिसमेंगायाहै॥
मूलमात्रबत्तीसुत्रोंका, खोटाहठकीछायाहै ॥ सी० ॥ ६॥
जज्जाजिनवरठाणाअंगे, ठवणासत्यठरायाहै । प्रभुपडि-
माकोपथ्थरजाणे, जालमकैसाजायाहै ॥ चारनिखेपाजो-
गजनाया, जिनआगममेंजोयाहै । सी० ॥ ७ ॥ झझ्झा
जूठबतावेकता, जेताजैनमेंगायाहै । तीर्थंकरगणधरपूरव-
धर, सबकोएलगायाहै ॥ मुखपरपाटाकानमेंडोरा, दैत्य-
सारुपबनायाहै । सी० ॥ ८ ॥ टट्टाटटोलदेखटोंटोंके, क्या
गणधरफरमायाहै । रायपसेनीसत्तरभेदें, जिनप्रतिमापू-
जायाहै ॥ हितसुखमोक्षतणाफलअर्थे, प्रगटपणेबतलाया-
है ॥ सी० ॥ ९ ॥ ठठ्ठाठिकनजरनहींठावे, सुत्रउवाइठ-
रायाहै । अंबडश्रावककेअधिकारे, अर्थतेप्रतिसाठयाहै ॥
चैत्यशब्दकाअर्थमरोडी, जूठेजूठजतायाहै । सी० ॥ १० ॥

डड्डाडरनहीडालेडिलमें, डामहीडोलचलाया है । आनंद श्रावकके अधिकारे, अरिहंतचैत्य दिखाया है गपडसपडकाअर्थकरीने, जडभारतीभडकायाहै । सी० ॥ ११ ॥ ढढ्ढाढूंढकनामधराया, पिणतेंजूठाढूंढ्याहै ॥ मूढहढतामायाममता, गूढपणेगोपायाहै ॥ जुठकपटशठनाटककरके, जगसाराभरमायाहै । सी० ॥ १२ ॥ तत्तातीर्थभूलायेसारे, तालेंसेतीचुकायाहै । अपनेआपतीरथमनबैठे, मूढलोक भरमायाहै ॥ मानेवांदोमानेपूजो, यहविपरीतसिखलाया है । सी० ॥ १३ ॥ थथ्थाथोडीमानवडाई, खातरक्योंथडकायाहै । थोथापोथाप्रगटकराके, परमारथउलटायाहै ॥ सुत्रअरथकाभेदनजाने, पंडितराजकहायाहै । सी० ॥१४॥

---

१ ढूढकोने–शत्रुजय, गिरनारादिक, तीर्थोंको भूलाके जिसको तीनं तेरकीभी खबर नही है, उनके चरणोंकी स्थापना करके, अथवा समाधि बनवा करके, पूजते है, जैसे पजाब देशका–लूधीया नामें, मोतीराम पूज्यकी समाधि । जगरावामें, तथा रायकोटमें, रूपचद ढूढियेके चरण, तथा समाधि । अबाल्मे, चमार जातिका लालचद ढूढियाकी समाधि ॥

हमारे ढूढभाइओ–तीर्थंकरोकी निंदाकरके, अपने आप तीर्थरूप बन बैठे है । ॥

दद्दादंडादशवैकालिक, प्रश्नव्याकरणदायाहै । आचारांग निशीथादिमे, भगवईपाठदिखायाहै ॥ हठढ्ढछोडदेखोवि-नतुमको, पाठनिजरन्नहींआयाहै । सी० ॥ १५ ॥ धद्धा धर्मजैननहींतेरा, धोकापंथधकायाहै । अपनेआपबनाजो ढूंढा, लवजीआदिधरायाहै ॥ बांधीमुखपरपट्टीसतरां, वी-समेंपारोगायाहै । सी० ॥ १६ ॥ नन्नानयेकपडेकोपसली, तीनरंगनंखायाहै । सुत्रनिशीथमेंदेखपाटतूं, क्योंइतना गभरायाहै ॥ इसीसुत्रमेंदेखलेबाबत, रजोहरणक्यागाया-है । सी० ॥ १७ ॥ पप्पापंचकल्याणकजिनवर, जिनआ-गममेंपायाहै । इंद्रसुरासुरमिलकरउत्सव, करकेअतिहर्षा-याहै ॥ द्वीपनंदीश्वरभगवइ जंबुद्वीप पन्नती बताया है । सी० ॥ १८ ॥ फफ्फाफेरनहींभगवतीमें, फांफामारफिरा-याहै । जंघाचारणविद्याचारण, मुनियोंसीसनिवाया है ॥ नंदीश्वरमेंकहांसेआया, जोज्ञानकाढेरबताया है । सी० ॥ ॥ १९ ॥ बब्बाबडेविवेकीदेवा, दश वैकालिकगाया है ।

२ निशीध सूत्रमें—प्रमाण रहित रजोहरण [ओघा] रखने-वालेको दंड लिखा है । हे भाई ढूंढक ? तूं भी अपना रजोहरणका प्र-माण ढूंढ, किस वास्ते फोगट बकवाद करता है ?

शुद्धमुनिकोसीसनिमावे, नर गिनतीनहींआया है ॥ तदपिढुंढकतेदेवनका, करनावोजवताया है । सी० ॥२०॥ भम्भाभरमपडाहैभारी, तत्त्वज्ञाननहीभायाहै । हिंसाहिंसारटकरमुखसें, आज्ञाधरमभुलायाहै ॥ हिंसादयाकाभेद नजाने, भोलकोभरमायाहै । सी० ॥ २१ ॥ मम्मामुनि श्रावकदोभेदे, धरमआगममेंमान्याहै । सम्यग्दृष्टिसुरगणसंघ, चतुरविधफरमायाहै ॥ जिनकेगुणगानेसेंपरभव, धरमसुलभवतलायाहै । सी० ॥ २२॥ यय्यायहहैपाठठाणांगे, औरभीयहफरमायाहै । जोअवगुणबोलेंसुरगणका, दुर्लभबोधिकहायाहै ॥ अचरीजऐसेंपाठयोगसें, जरानममेआयाहै । सी० ॥ २३ ॥ ररारोरोनही छुटेगा, राह बिनारमायाहै । उन्मारकोमारगसमजा, यहीरणमेंरोलाया है ॥ प्रभुपूजाकात्यागकराके, रामाराजचलायाहै । सी० ॥ २४ ॥ लल्लालक्षद्रव्यसेंपूजा, वीरप्रभुजवजायाहै । कल्पसूत्रकालाभनमाने, अवज्ञाकरकेलुरायाहै ॥ पिणतेतो प्रसिद्धविलायत, लिखअंग्रेजोलुभायाहै । सी० २५ ॥ वव्वाविधिसेंकाउसगवरणा, आवश्यकनिवरायाहै । दक्षिण हाथमुहपत्तिबोले, वामेओघावतायाहै ॥ लोकशास्त्रविरु-

द्धपणेते, मुखपरपाठबांध्याहै । सी० ॥ २६ ॥ शश्शाश-रमातानहींसांढा, सासासांगसजायाहै । तोभी शटशठता नदींमुके, जोरजूलमदरसायाहै ॥ एककोबांधअनेकको छोडा, क्याअज्ञानफसायाहै । सी० ॥ २७ ॥ षष्पाषष्ट अंगेपुजा, द्रौपदीकादरसायाहै । श्रावककाषट्कर्मसज्या है, षुल्लेषुल्लाआयाहै ॥ शत्रुंजयपुंडरगिरिज्ञातासूत्रकापाठ भूसायाहे । सी० ॥ २८ ॥ ससासंघतजायाप्रभुका, अपनासंघसजायाहै । जैनधरमसेंविपरीतकरके, शुद्धबुद्ध विसरायाहै ॥ कौसिकसमजिनसूरजसेती, द्वेषभावसरजा-याहै । सी० ॥ २९ ॥ हहाहियानहींढूंढकतुजको, हा तें जन्महरायाहै । हलवेंहालेंहलवेंचालें, पिणहालाहालपाया है॥ होंसहटाकरश्रावकचितको, चक्करचाकचढायाहै ।सी०॥ ॥ ३० ॥ ढूंढकजनकोशिक्षादेके, योग्यमारगबतलायाहै । जोजोनिंदकढूंढकमुरख, तिनकेप्रतिजनलायाहै ॥ कथन नहींएद्वेषभावसुं, सिद्धांतवचनसेंगायाहै । सी० ॥ ३१ ॥ तीर्थंकरप्रतिमाकाचितसें, भक्तिभावदरसायाहै । औरभी बोधकियाहैइसमें, सूचनमात्रदरसायाहै ॥ तीर्थंकरकाव-लभनेतो, दिन २ अधिकसवायाहै । सी० ॥ ३२ ॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विक्षात ॥ पासतणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अहम्मदावादे पास ॥ गोडीनो धणी जागतो, सहूनी पुरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंडाण ॥ प्रतिमा तीने पासनी, थई प्रतिष्ट जांण ॥ ३ ॥

॥ढाल॥१॥ गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥ यण कण कंचण मणि मानक दे, गोडीनो धणी जाचो जी ॥ गु० ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अश्वनी भूमे अश्वनी पीडा, अश्वनी वाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥ जागंतो जक्ष जेहने कहीये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुल संतापे जी ॥ गु० ॥ ६ ॥ प्रहउठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी॥ अधिको मले जे ओछो मले जे, टका पांचसे लेजे जी ॥ गु० ॥ ७ ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरडिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन

कुशल क्षेम तिहां अछे, तुजने मुजने जांण, संका छोडी काम कर, करतो म करींस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृर्षभ जोतरे ॥ परि करथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश आयां जेतले, प्रतिमा नावि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास भवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुटको कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंडाउं किम घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवी इम कहे ॥ २८ ॥ गूंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी उलटस्ये ---- ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किण जुओ, अ निसरिस्ये कूओ ॥ खारा कुआनो इह सहनांण, लून पड्यो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिगावटो सीरोही वसे, कोढ पराभवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन

थिर थापियो, शिलावटाने सुहणो दियो ॥ रोग गमाउं ने पूरुं आस. पासतणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मान्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सुरमो, जीमे खीरखांड घृत चुरमो ॥ घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥३४॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंग मंडप रलियामणो रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥३५॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग समो मंडे आवास ॥ दिवस विचारी इंडो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥ ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पद्मासण वेठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमल वगडे रहे वांन ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अछे, यात्र करीने परणे पछे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥ विघन विडारण जक्ष जग, तेहनो अकल सरुप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, दखाडे निजरुप ॥३९॥ गिरओ गौडीपास जिन ॥ आपे अरथ भंडार॥ सानि-

ध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील प-
लाणे नील हय, नीलो थइ असवार, मारग चुकां मां-
नवी, वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ ढाल ४ ॥ चरण अढारनणो लहै भोग, वि-
घन निवारे टाले रोग ॥ पवित्र थइ समरे जे पाप, टाले
सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घर धननो सूत,
आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो धरे, पार
उतारे लच्छी वरे ॥ ४३ ॥ दोभागीने द सोभाग ॥ पग
विहूणाने आपे पाग ॥ ठांम नही तेहने द्ये ठांम ॥ मन
वंछित पूरे अभिरांम ॥ ४४ ॥ निराधाराने द्ये आधार,
भवसायर ऊतारे पार ॥ आरतियानी आरत भंग, धरे
ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरयां साद दिये ज-
क्षराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि
प्रकाश ॥ गूंगाने द्ये वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने
सुखनो दातार, भयभंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे
बेडीतणा, श्रीपार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥ श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर
॥ हस्तियुद्ध दूर टले, दुद्धर सींह सियाल ॥

॥ ४८ ॥ चोरतणा भय चूकवे, विप अमृत उडकार ॥ विपधरना विप ऊतरे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥ रोग शोग दालिद्र दुःख, दोहग दूर पूलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ चाल कडखानी ॥ ऊँजि तुं २ ऊंज उपशम धरी, ऊँ ह्री श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर जपंते ॥ भूतने प्रेत झोटिग वितर सुरा, उपशमे वार इक्वीस गुणंते ॥ ॥ ५१ ॥ ऊँ० ॥ दुद्धरा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा दुत्तपंते ॥ गर्भबंधन व्रणं सर्प विछू विपं, चालिका बाल मेवाझखंते ॥ ५२ ॥ ऊँ० ॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका दोप हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल विकराल दंते ॥ ५३ ॥ ऊँ० ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥५४॥ ॥ ऊँ० ॥ अष्ट महाभय हरे कानपीडा टले ॥ ऊनरे शूल शीसग भणंते ॥ वदन वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रभु, श्री-

पास जिण नाम अभिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति छींक नीवारण विधि ॥

॥ अथ पाक्षिक चोमासि अने संवत्सरी पडिक्कमणो करतां छतां जो छींक होवे तो वो छींकके जो दोष हे वो दोष दूर करनेकुं क्या करना इति प्रश्नः ॥ ए संबंधमां अपणे गच्छकी समाचारीके विधिपत्रमें इस प्रकारसें लिखा हुवा है तथा हि पक्खिआदि तीन पडिक्कमणोंमे पेहली पक्खि संबंधि मुहपत्ती पडिलेहे उहांसे लेके पक्खि संबंधि समाप्तिका खामणा खामे तिहांतक जो छींक हुई होवे तब संपूर्ण पडिक्कमण करके पीछें वृत्तविधिनी माफक अपशकुनका तीनकाउस्सग करणा ॥ इहां इह परमार्थ हे कि गुरु सामने अथवा गुरुके अभावमें श्री थापनाचार्यजीके सामने खडा होकर खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अपशकुन दुर्निमित्त उहडावण निमित्तं काउस्सग्गं करुं गुरु कहे करेह पीछें इच्छं कही वलि बीजी खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ ॥ सं० भ० ॥ अपशकुन दु र्निमित्त उहडावण निमित्तं काउस्सग्गं अन्नत्थु० कही एक नवकारको का-

उस्सग्ग करे काउस्सग्ग पारके वलि एक नवकार गुणे इसितरे दुजीवार काउस्सग्ग करे परंतु काउस्सग्ग दोय नवकारको करे वलि काउस्सग्ग पारके प्रगट दोय नवकार गुणे तीजीवार पण इसितरे काउस्सग्ग करे पण काउस्सग्ग मांहे नवकार तीन गुणे काउस्सग्ग पारके प्रगट नवकार तीन गुणे इहां इतनो विशेप है की पख्खि पडिक्कमणेमें छींक करे तो पंन्नर दिवस सुधि विशेप तप करे इति पाक्षिक छीक निवारण विधि ॥

॥ इसीतरे चउमासी पडिक्कमणेमे छीकक्की विधि करणा परंतु ४ महिना सुधि विशेप तप करे इसी तरे संवत्सरी पडिक्कमणेमें छींक करे तो विधि करणा एकवरस सुधि विशेप तप करणा जो साधु तथा साध्वी छीक करे तवतो शक्ति छतां तो लोचज करुणा ॥

॥ वर्तमान मेतो जयतिहु अण नामक चैत्यवंदनसें लेके यावत् नाम जितने शांतके अंतमे जयवीयराय नहि कहे उतनेकाल सुधि छीक करणेमें शंका दोष गिणेहै तत्कथं इति प्रश्न. उच्यते नाम आचार्य उत्तर देताहै ॥ इस शंकामें शास्त्रकी संम्मति नहि है

और गुरु परंपरा एसी नहि देखणेसें आवैहै तिस कारण यह शंकादोष अपणे मनसेंहि वणाया हुवाहै प्रमाण नहि है तो क्याहै अविचारित पौर्वापर्य करके यह गड्डरिका प्रवाहहिहै इस लिये शास्त्रोक्त विधि एसीहै के पाक्षिक मुहपत्तिसे लेकर पक्षिसमाप्ति मुहपत्ति पर्यंत पूर्वोक्त विधि करणा यह सिद्धांतहे ॥ इति छींकक्करणेमें तद्दोष निवारण विधिः ॥

॥ जो देवसि १ रात्रि २ पक्खि ३ चउमासी ४ संवत्सरी पांच पडिक्कमणोंमें विलाडी थोडीभि पडिक्कमणेकी मांडलीकुं उलंघे तब वो दोष निवारणनेके लिये क्या करणा इति प्रश्नः

अत्रोच्यते इहां आचार्य शिष्यने उत्तर कहै ए. अर्थमां विधि प्रपानामक ग्रंथमें श्री जिन प्रभसूरिजीके वचनका प्रमाण है तथा हि तत्पाठः जब विलाडी पडिक्कमण करतां आडि फिरे तब ॥ जासाकालीक ब्वडी अक्खहि कक्कडियारि मंडल माहे संचरी हय पडिहय मज्जारि १ इस गाथाका चोथा पद तीनवार कहणा ३ वार कहके पीछें खुद्दोवद्द उहडावणिअं करेमि काउस्स-

ग्गं यह काउस्सग्ग करणा पीछें श्री शांतिनाथ स्वामिके नमस्कार कीघोसणा करणी

अर्थात् श्री शांतिनाथ स्वामीकी शांति कहणी इति तातपर्य पुनः प्रतिक्रमण छुटक पत्रमेंतो यह अनुक्रमहे ॥ देवसि आदि पांचुं पडिक्कमणोंमें जो विलाडी थोडिभि पडिक्कमणेकी मांडलीकुं उलंघे तब अपशकुनादि तीन काउस्सग्ग पुर्वत् करणा परंतु वह तीन काउस्सग्ग प्रतिक्रमण कियांके वाद करणा उसके पीछें जासाकाली कव्वडीए गाथा तीनवार पढे अने डावे पगसें तीनवार पृथवीकुं दवावे इति मार्जारी मंडली प्रवेशमें तद्दोप निवारण विधिः

॥ असज्जायकी विगत कहते हे ॥

१ धूआरी पडे, तासीम असज्जाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती छाया तथा अरण्य संबंधी रज उडे, निरंतर पडे तो दिन ३ तीन उपरांत असज्जाय

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असज्जाय.

४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ उपरांत वरसे अने न रहे तो असज्जाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जां लगें होय तां सीम असज्झाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे. तो ५ पांच दिन उपरांत असज्झाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहूंती पडिवा लगें असज्झाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रज उड्डावणच्छं काउस्सग्ग करुं? इच्छं. अचित्त रज्ज उड्डा वणच्छं करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स चार नो काउस्सग्ग करवा.

८ आशो शुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंभीने पडिवा लगें असज्झाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असज्झाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असज्झाय.

११ अकालें वीज उल्कापात होय तो प्रहर १ अ०

१२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पडवो, वीज, त्रीज, इयांरी असज्झाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे. तो प्रहर १ एक अस०

१४ भूमिकंपें प्रहर ८ आठ असज्झाय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार. उत्कृष्टें. अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असज्झाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ बार असज्झाय.

१७ आसाढ चउमासा पडिक्कमण ठयाहूंती प्रहर १२ बार असज्झाय.

१८ कार्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीछें पडिवा लगें प्रहर बार असज्झाय.

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल अ०

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगे असज्झाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्झाय.

२२ फागण चउमासें रजपर्वी जां लगें रज उडे, अने उपशमे नहि, तां लगें असज्झाय.

२३ दंडको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्झाय.

२४ परचक्रादि भय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहि, तां लगे सूत्र जाणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोई पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२७ सो हाथमांहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो तां अणउद्धरे एटले ज्यां पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असज्झाय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पडवाथी हाथ १०० सो मांहे अहोरात्र असज्झाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पडवाथी हाथ १००० सो मांहे अहोरात्र असज्झाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पडे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सुजे नहिं.

३१ स्त्रीने ऋतु आवे थके दिन ३ त्रण अस०

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असज्झाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विणकी भणवो गुणवो नहि. प-
हर १२ असज्जाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावण वदि १, कार्तिक वद १, मागपीर वदि १ ए चार दिवसें सदैव असज्जाय अने सुत्रनी असज्जाय तो प्रहर १२ वार सुधी जाणवी.

साधु और श्रावकको कोनसी वस्तु कितने प्रहर
और दिन पीछे न खावणी सो लिखते है.

॥ चावल प्रहर ८, राव प्रहर १२, घेस प्रहर २०, छाछी प्रहर २४, दहि प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांची वडां प्रहर २४, घोडवडां प्रहर ४, तल्यां वडां प्रहर ४, पूडी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६. बाजरा ऊष्ण प्रहर १२, जवार ऊष्ण प्रहर १२, बाजरीकी खीचडी प्रहर ८, जवारकी खीचडी प्रहर ८, चावलकी खीचडी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्वान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्वान्न दिन १५, वरसाले पक्वान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासु दिन ८, वरसाले लुन फासु दिन ३, सीयाले फासु लुण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८

उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५ वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घुघरी पाणी भीजोइ प्रहर ८, पाणीकी उसेइ घुघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घुघरी प्रहर २०, तथा २४. वडी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६, एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावककों खाणे योग्य रहे नहिं ॥

— —

अनुक्रमणिका.

आतम निंद्या	२६५
तीन मनोरथ	२७२
ढुंढक शीक्षा कक्का बत्रीसी	२७५
पार्श्वनाथजी स्तवन, वाणी ब्रह्मा वादनी	२८१
छींक नीवारण वीधी	२८८
असज्जायकी वीगत	२९१
पकवान आदी वस्तुका काल.	२९५

इस पुस्तकमें भुलचुक होवे सो सुधारके वाचना.